मानस-कोश



कोशकार - श्री शिवशङ्कर श्रीवास्तव

सम्पादिका - डॉ० नवलता

मानस-कोश

समर्पण

(त्वदीयं वस्तु हे तात, तुभ्यमेव समर्पये।)



श्री शिवशङ्कर श्रीवास्तव तथा श्रीमती अञ्जना श्रीवास्तवा

(जन्म-18-11-1925, अवसान-28-03-2001) (जन्म-31-03-1933, अवसान-12-10-1988)

सम्पादिका-डॉ० नवलता

सम्पादिका तथा प्रकाशिका : डॉ0 नवलता
के–680, आशियाना, कानपुर रोड,
लखनऊ–12
मो0 : 9451077286

वर्ष : 2011
संस्करण : प्रथम

मूल्य : 150/–

मुद्रक : एस. के. ग्राफिक्स,
एल.जी.एफ–3, शिवा प्लाजा,
इंजीनियरिंग कालेज चौराहा,
जानकीपुरम् लखनऊ
मो0 : 9415470330

अभिमत

भारतीय संस्कृति का वर्तमान युग तुलसी का है जिनकी रामचरित मानस, समाज के आस्थापूर्ण जीवन के लिये एक अविरलधारक स्रोत है। तुलसी की भाषा, उदार अवधी है। उदार इसलिए कि उसमें अन्य भाषाओं के अवधीकृत रूप भी प्रयुक्त किये गये हैं।

आधुनिकता के चाकचिक्य में अवधी का वह ज्ञान, जो पारम्परिक रूप से परिवारों में प्राप्त रहता था, कुछ लुप्त सा होने लगा है। और रामचरितमानस के अनुशीलन हेतु यह आवश्यक है कि शब्दों का सुबोध एवं सरल अर्थ बताने वाला कोई ग्रन्थ हो।

मेरे अग्रज भाई शिवशंकर जी ने निष्ठा–पूर्वक अनवरत कठिन प्रयास करके यह अत्यन्त आवश्यक एवं उपयोगी कार्य सम्पन्न किया है। इसके लिये मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ। राम के प्रति उनकी दृढ़ एवं अनन्य निष्ठा ही इस महनीय कृति की प्रेरणा एवं मूल है। यह सुयोग्य व्यक्ति की श्लाघ्य कृति है।

इसका प्रथम संस्करण उनके न रहने के बाद प्रकाशित हो रहा है। यह दायित्व उनकी विदुषी पुत्री डा० नवलता जी (विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, वी एस.एस.डी. कालेज कानपुर) एवं हम सब का होगा कि प्रयोग के पश्चात् जो भी उपयोगी परिष्कार अपेक्षित हो, समय–समय पर किया जाता रहे। राम जी का ग्रन्थ है, वे इसे अवश्य प्रशस्त करेंगे।

प्रो० गोपालकृष पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, विधिसङ्काय
वी.एस.डी. कालेज, कानपुर
तथा अध्यक्ष, बार कौंसिल, कानपुर

भूमिका

शब्दकोश संरचना सुधीजन के अथक श्रम की परीक्षा का परिणाम प्रस्तुत करती है। पुनः अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुन्देली तथा छत्तीसगढ़ी आदि बोलियों पर आधारित ग्रन्थ में निहित् शब्दों के सटीक अर्थों का संयोजन करना एक लम्बा श्रमसाध्य व्यापार है। ग्रन्थ की बोली या क्षेत्रीय भाषा की प्रकृति से परिचित होना शब्दाकोश निर्माता की ज्ञानक्षमता का प्रथम सोपान है। इनमें भी अवधी अवध क्षेत्र के बारह जिलों में तो बोली ही जाती है, इनके समीपवर्ती अन्य जिलों में भी इस बोली या भाषा में विचारों का आदान–प्रदान किया जाता है। अवधी में प्रयुक्त शब्द लोच के साथ भिन्न–भिन्न रूपों में उच्चरित होते हैं। लरिका शब्द लरिकवा लरिकउना, लरिकऊ लरिकउनू आदि भिन्न–भिन्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं और यथास्थान इनका अर्थ भी भिन्न–भिन्न होता है। रुपया जब अपने बड़प्पन के साथ अवधी के द्वार पर आता है तो वह रुपइया हो जाता है और अपनी लघुता हीनता और न्यूनता के साथ उपस्थित होने पर रुपल्ली बन जाता है। यहीं नहीं, नाना अर्थों को वहन करने वाला शब्द भिन्न–भिन्न सन्दर्भों में अर्थ की विविधता को उजागर करता हैं। कोशकार शब्द की प्रकृति और उसके सन्दर्भ की संस्कृति को भी पहचानता है।

रामचरितमानस में प्रयुक्त शब्दों का कोश निर्मित करना कदाचित् और दुष्कर कार्य है क्योंकि जिस ग्रन्थ को समझ पाने में बड़े–बड़े विद्वानों के पसीने छूटते हैं उसमें अर्थ को समझाना, भाव को समझना और शब्द अर्थ के मध्य अभिव्यक्त तत्त्व के यथार्थ को जानना एक अति दुरूह कार्य है।

गोस्वामी तुलसीदास ने तो घोषणा के रूप में रामचरितमानस को अगम कहा है किन्तु इस अगम ग्रन्थ को सुगम बनाने के लिए साधक को तीन क्षमताओं से सम्पन्न होने की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। पहली क्षमता तो इसके अध्येता के हृदय में अगाध श्रद्धा का होना अनिवार्य है। इस ग्रन्थ में तर्क आदि के सहारे प्रवेश असम्भव है। दूसरी क्षमता है सज्जनों, विद्वानों, साधकों और सन्तों का दीर्घकालिक सत्संग क्योंकि इसमें बड़े–बड़े ज्ञानियों को यह शिक्षा की दी गयी है कि –"तबहिं होइ सब संसय भंगा, जब बहुकाल करिअ सत्संगा।" तीसरी क्षमता है–भगवद्भक्ति, रामभक्ति। इन तीनों अथवा इनमें किसी एक क्षमता के अभाव में मानस के तत्त्व का

ज्ञान प्राप्त करना केवल कल्पना है। इस तत्त्व को तो गोस्वामी जी ने घोषणा के साथ प्रस्तुत किया है–("जे श्रद्धा सम्बल रहित नहिं संतन्ह कर साथ। तिन्ह कह मानस अगम अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ।।")

विचित्र बात जो यह है कि गोस्वामी तुलसीदास सहित इस ग्रन्थ के जो चार वक्ता हैं, वे चारों महाज्ञानी परमभागवत विवेकी और सिद्ध सन्त है। यही नहीं, 'रघुपति कथा प्रसंगा" को उद्घाटित करने के लिए प्रश्न करने वाले अथवा विनम्र निवेदन करने वाले साधक भी भक्त हैं, महाज्ञानी हैं, गुनराशी है। प्रथम वक्ता हैं–शिव, जो इस ग्रन्थ के आदि निर्माता कहे गये हें और जो कैलाश पर्वत पर पार्वती को इस ग्रन्थ की कथा सुनाते हैं। दूसरे वक्ता काकभुशुण्डि है जो नीलगिरि पर ज्ञानवृद्ध पक्षियों को भक्ति की कथा सुनाते हैं, प्रयाग में कर्मकाण्ड घाट के वक्ता याज्ञवल्क्य तृतीय हैं जिन्होंने साक्षात् सूर्य से वेदों की शिक्षा प्राप्त की है। और इस घाट पर यही कथा तुलसी जनसामान्य को सुनाते हैं। इन चारों घाटों से अभिव्यक्त मर्म को उद्घाटित करने वाले शब्दों के यथार्थ को समझने में एक लम्बी अध्ययन साधना की आवश्यकता है।

यही नहीं, एक ही शब्द अन्यान्य सन्दर्भों मे कैसे भिन्नार्थ प्रस्तुत करता है, उसकी बानगी यहाँ देखी जा सकती है। "हम अब बनते बनहिं पठाई" और "सहत दुसह बन आतप बाता" जैसी अर्धालियों में पहली में प्रयुक्त बन अरण्य जंगल का द्योतक है जबकि दूसरी अर्धाली में बन का अर्थ पानी है। ऐसे अगनित शब्द मानस में हैं जिनके अर्थ की बारीकियों पर ध्यान देना अभीष्ट है। कहीं–कहीं संस्कृत के विशुद्ध शब्दों को घिसकर गढ़े गए अवधी शब्दार्थ का मर्म पहचानना भी कोशकर्ता के लिए एक चुनौती है। आकर्ण्य को अकनि उपानह को पनही के रूप में स्वीकार करना यहां अभीष्ट होगा।

यह सुखद संयोग है कि बाबू शिवशङ्कर श्रीवास्तव जी ने श्रम साधना के साथ मानस के अध्ययन, संस्कारवश श्रद्धालु होना और सन्त और विद्वानों के लम्बे सत्सङ्ग के परिणामस्वरूप भगवद्भक्त होना, इन तीनों गुणों को अर्जित किया था। घर छोड़कर विरक्ति के साथ विरक्तों का सङ्गी होना और अनवरत अध्ययन के परिणामस्वरूप कतिपय तथाकथित विरक्तों की हीन मानसिकता से कुण्ठित होकर उनसे अलग होना तथा रामचरित मानस को श्री मञ्जुल जी के सान्निध्य और संरक्षण में एक लम्बा समय व्यतीत करना यह इनके मानस शब्दकोश के निर्माता होने के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

इसे कोई नकार नहीं सकता, कि मानस परिष्कृत अवधी में लिखा हुआ ग्रन्थ है किन्तु इसे भी सब जानते हैं कि सात काण्डों में विभक्त इस ग्रन्थ के प्रत्येक

काण्ड का मङ्गलाचरण संस्कृत में है और यह विशुद्ध व्याकरणसम्मत संस्कृत तुलसी के संस्कृत ज्ञान का प्रमाण है। बाबू शिवशङ्कर जी ने लघुसिद्धान्त कौमुदी श्रीमद्भगवद्गीता और भागवत जैसे ग्रन्थों का श्रमसाध्य अध्ययन किया। इन ग्रन्थों की भाषा की प्रकृति से परिचित होने के लिए उन्होंने जो कुछ किया वह उनकी अखण्ड साधना का उद्घाटक है।

जिस प्रकार, 'निज कवित्त केहि लाग न नीका' के न्याय से काव्य रचना स्वान्तः सुखाय कही गई है, वहीं, 'जो प्रबन्ध नहिं बुध आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कवि करहीं' कवि की लोकोपकारिणी वृत्ति को उजागर करता है। कोशकार निश्चित रूप से अपने श्रम और ज्ञान को जन–जन में बाँट कर सतत आत्म सुख का अनुभव करना चाहता था।

कहा जाता है कि इस कोश के लेखक आज भौतिक शरीर से इस संसार में नहीं है किन्तु इस ग्रन्थ के अध्येताओं के साथ ये जरारहित यशः शरीर से सदैव विद्यमान रहेंगे।

यह संयोग और सौभाग्य का विषय है कि उनकी आत्मजा डा0 नवलता संस्कृत साहित्य की एक विदुषी महिला हैं और वे इस ग्रन्थ का मुद्रण और प्रकाशन करा रही हैं। मेरी मंगलकामना है कि डा0 नवलता आयुष्मती हों और शिवशङ्कर श्रीवास्तव जी का यशः शरीर युग–युगों तक साधकों के चिन्तन चक्षुओं के समक्ष नाचता रहे।

अक्षय तृतीया
2011 ई0

डा0 जितेन्द्र नाथ पाण्डेय
पूर्व आचार्य हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

साङ्केताक्षर

बालकाण्ड — बा

अयोध्याकाण्ड — अ

किष्किन्धाकाण्ड -- कि

अरण्यकाण्ड — अर

सुन्दरकाण्ड — सुं

लाङ्काकाण्ड — लं

उत्तरकाण्ड — उ

प्राक्कथन

भोगवादी सभ्यता तथा अर्थप्रधान जीवनशैली के कारण शिथिल होते जीवन मूल्यों ने आज जीवन को अस्त–व्यस्त तथा वैषम्यपूर्ण बनाया है। समाज की डगमगाती जीवननौका की पतवार के रूप में गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानस का अवतरण आज से चार–साढ़े चार शताब्दियों पूर्व एक ऐसे समय में हुआ था, जब धर्मबोध तथा जीवन–मूल्यों के मर्म को जनमानस तक पहुँचाने की नितान्त आवश्यकता थी। जब राष्ट्र के अस्तित्व का सङ्कट उपस्थित होने लगा, तो तुलसी दास जी ने रामचरितमानस लिखकर युगधर्म तथा राष्ट्रधर्म का निर्वाह किया। उन्होंने शास्त्रों का मन्थन कर रामकथा के सूत्र में, आगमनिगम–पुराण रामायण तथा अन्यत्र बिखरी ज्ञान मुक्ताओं को पिरोकर 'मानस' के चिर सुगन्धित माल्य की रचना की। जैसा कि उन्होंने स्वयं घोषणा की–

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा–
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति।।

स्वान्तः सुखाय होते हुए भी यह गाथा सर्वजनसुखाय तथा सर्वजन–हिताय है, इसमें सन्देह नहीं। यह 'स्वान्तः, जनसामान्य का 'अन्तः' बन गया है। 'स्व' और 'सर्व' के सामानाधिकरण्य का सबसे बड़ा प्रमाण मानस का लोकभाषा अवधी में निबन्धन है। इसी प्रकार मानस की सर्वकालिक तथा सर्व व्यापी लोकप्रियता एवं सर्वग्राह्यता का प्रमाण उसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद है।

अस्तु। भारतीय परिप्रेक्ष्य में विगत कुछ दशाब्दियों में भाषागत वैभव का तीव्रता से ह्रास हुआ है, जो आसन्न सांस्कृतिक सङ्कट का सङ्केत है। वर्तमान युवा पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ी अवधी तो दूर, खड़ी बोली के भी शुद्ध स्वरूप को ग्रहण कर पाने की स्थिति में नहीं है। किन्तु भाषाओं तथा बोलियों के मूल स्वरूप की रक्षा की नितान्त आवश्यकता है। संवेदनशील सुधीजन इस दिशा में प्रयास करते रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में कोशों की उपादेयता तथा प्रासङ्गिकता को उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

इसी क्रम में मेरे प्रातःस्मरणीय पूज्य पिता स्व0 श्री शिवशङ्कर श्रीवास्तव ने अनेक वर्षों के परिश्रम से रामचरित मानस के दो विशिष्ट कोशों की रचना की थी। एक 'अवधी खड़ी बोली' तथा दूसरा मानस में ही आये 'पर्यायवाची शब्द कोश। प्रसङ्गवश इस कोश के रचयिता का संक्षिप्त परिचय आवश्यक है। 18 नवम्बर 1925 मे सीतापुर जनपदान्तर्गत अटरिया के निकट मऊ नामक गांव के एक कायस्थ परिवार में जन्मे मेरे पिता जी (शिवशङ्कर श्रीवास्तव) अपने पिता (मेरे पितामह) स्व0 श्री बाबूराम श्रीवास्तव की एकमात्र सन्तान थे। मेरे पितामह श्री बाबूराम श्रीवास्तव व्यवसाय से शिक्षक थे तथा लखनऊ में हुसैनगंज स्थित चुटकी भण्डार मिडिल पाठशाला में अध्यापक थे। मेरे पिता जी की आरम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। शिक्षक पिता के सात्त्विक संस्कार तथा अपने अदृष्टवश उनमें आध्यात्मिक प्रवृत्ति की प्रधानता थी। तेरह वर्ष की अवस्था में पूर्वजन्म के संस्कारवश आप घर छोड़कर चले गये तथा तीन वर्षों तक साधुसङ्गति में रहे। कुछ समय स्वामी भजनानन्द के प्रशिष्य तथा स्वामी योगेश्वरानन्द के शिष्य के रूप में रहे। किन्तु पश्चात् 'साधुमण्डली' में कृत्रिम आडम्बर तथा मिथ्याचरण को देखकर (जैसा कि उन्होंने मुझे स्वयं बतलाया था) एकवस्त्रधारी साधु वेश त्याग दिया। उसी अवधि में वे कन्नौज में श्रीमञ्जुल जी कथावाचक से प्रभावित हुए तथा कुछ समय तक उनके संरक्षण में रहे। वहाँ रहकर वे श्रीमञ्जुल जी की पुस्तकों की दुकान का अवेक्षण करते रहे। इस अवधि में उन्होंने अनेक धार्मिक तथा आध्यात्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। लघुसिद्धान्त कौमुदी, श्रीमद्भगवद्गीता तथा रामचरितमानस इनमें से प्रमुख थे।

तत्पश्चात् मेरे पितामह ने पुत्र की इस वैराग्यवृत्ति को वंशवृद्धि में बाधक देखकर उन्हें किसी प्रकार समझा बुझाकर वापस बुला लिया। उनकी औपचारिक शिक्षा मिडिल तक ही हुई। पश्चात् व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में हाई स्कूल, इण्टर तथा विशारद परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। उन्हें हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू तथा संस्कृत भाषाओं का ज्ञान था। अंग्रेजी के अच्छे ज्ञान के कारण 17 वर्ष की अवस्था में ही राशनिंग विभाग में (स्वतन्त्रताप्राप्ति के पूर्व) लिपिक पद पर कार्य किया तथा स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात् गांधीहत्या से आठ दिन पूर्व (रेल डाक व्यवस्था) विभाग में सार्टर पद पर नियुक्त हुए। यह मुझे इसलिए स्मरण है क्योंकि पिता जी ने मुझे बतलाया था कि नियुक्ति के ठीक आठ दिन पश्चात् महात्मा गांधी की हत्या हुई थी। उस समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बहुत से कार्यकर्ता सन्देह में बन्दी बनाए गये थे। मेरे पिताजी भी उनमें से एक थे तथा माननीय अटल जी के साथ एक रात एक ही बैरक में रखे गये थे। दो तीन दिन के पश्चात् वहां से मुक्त होने पर उन्हें अपने अंग्रेज अधिकारी के सामने बयान देना पड़ा था और 'अश्वत्थामा हतो नरा कुञ्जरो

वा' की युधिष्ठिर नीति का आश्रय लेकर उस पद से निलम्बित होने से अपनी रक्षा की थी।

यह एक प्रासङ्गिक विक्षेपक है। उसी वर्ष 1948 में उनका विवाह हुआ। एक सन्तान होने के तीन चार वर्ष बाद पत्नी (हमारी प्रथम मां श्रीमती कमला श्रीवास्तव) दिवङ्गत हो गई। पुनः 1954 ई0 में लखीमपुर के प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार की सुशील, सुन्दरी, शिक्षित तथा साध्वी कन्या से उनका विवाह हुआ, जिनसे ज्येष्ठ सन्तति मैं स्वयं तथा मुझसे छोटे नौ भाई बहिनों ने जन्म लिया। मेरी माता जी का नाम श्रीमती अञ्जना था।

ईश्वर की कृपा से हमारे माता–पिता शिक्षित सद्धर्मी तथा आध्यात्मिक अभिरुचि वाले थे, तथा उन्होंने सदैव हमें सत्यनिष्ठा और नैतिकता के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। हमारे घर में एक लम्बे समय तक प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में सभी भाई बहिन जगा दिए जाते। माता–पिता के साथ बैठकर पांच दोहा चौपाई रामचरितमानस का पाठ तथा व्याख्या (पिता जी के मुख से) होती थी। प्रत्येक पूर्णमासी को रामचरित मानस का सम्पुटरहित अखण्ड पाठ नियमित होता था। इस प्रकार परिवार में सबको सहज संस्कार के रूप में यह आध्यात्मिक तथा नैतिक विरासत मिली थी।

यद्यपि सेवा काल में पिता जी ने अनेक स्फुट कविताएं, भक्तिपद, शङ्कराचार्य की प्रश्नोत्तरी का हिन्दी काव्यानुवाद, भारतभाग्य (हिन्दी खण्ड काव्य), श्रीमद्भगवद्गीता का हिन्दी काव्यानुवाद आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें से दो (भारत भाग्य तथा प्रश्नोत्तरी) ही प्रकाशित हो सके हैं, किन्तु सेवानिवृत्ति (1984) के पश्चात् प्रातः पारायण की भांति नित्य नियमितचर्या के रूप में परिश्रमपूर्वक यह मानस कोश तथा पर्यायवाची कोश (मानस) तैयार किया। दुर्भाग्य से मेरी माता जी स्व0 श्रीमती अञ्जना श्रीवास्तवा के दिवङ्गत होने (1988) के पश्चात् वे अस्वस्थ रहने लगे और 28 मार्च 2001 चैत्र शुक्ल तृतीया को हमें छोड़कर गोलोकवासी हुए।

उन्हीं की अन्तःप्रेरणा तथा ऊर्जा से अपने मातृगृह में उनके वस्तु–सग्रंह से मुझे पृष्ठों में बिखरी कविताएं, श्रीमद्भगवद्गीता का काव्यानुवाद तथा इस मानसकोश की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई, किन्तु बहुत प्रयास के पश्चात् भी पर्यायवाची कोश, जो मैने उनके पास तैयार पाण्डुलिपि के रूप में देखा था, मुझे नहीं मिल सका।

यद्यपि यह मानस कोश भी स्वान्तःसुखाय ही रचा गया है, किन्तु परोक्षतः यह सप्रयोजन तथा लोकोपकार के लिए ही है, क्योंकि वर्तमान तथा भावी पीढ़ी के लिए मानस में प्रयुक्त लोकप्रचलित भी अवधी भाषा (बोली) के शब्दों के अर्थ दुर्बोध्य हो सकते हैं।

इस कोश में सङ्गृहीत शब्दों को चुन–चुन कर मानस के काण्ड/दोहा के सन्दर्भनिर्देश के साथ अकारादिक्रम से रखकर सन्दर्भित स्थल पर प्रयुक्त अर्थों का कथन किया गया है। इस प्रकार यह कोश नैघण्टुक परम्परा के निकट है।

पितृऋण से उऋण होने के लिए जहाँ जैविक वंश परम्परा का संवर्धन महत्त्वपूर्ण है, वहीं रचित साहित्य का संरक्षण संवर्धन भी पुत्र/पुत्री का कर्तव्य तथा दायित्व है। अपने उसी दायित्व का निर्वाह करते हुए इस मानस कोश को यथासम्भव, यथाशक्ति, यथामति सम्पादित कर प्रकाशित किया जा रहा है। यद्यपि सम्पादिका की इच्छा शब्दों के तत्सम रूप तथा सामान्य अर्थों को भी निर्दिष्ट करने की थी, किन्तु समयाभाव के कारण यहा कार्य सम्भव न हो सका। वैसे भी ज्ञान के विस्तार तथा सङ ग्रह की सीमा नहीं होती। क्रम तथा मुद्रण– टङ्कण सम्बन्धी त्रुटि न हो, इसका पूर्ण प्रयास करने के पश्चात् भी कहीं स्खलन हो जाना असम्भव नहीं है। अतः उसके लिए सुधी पाठक क्षमापूर्वक त्रुटिसङ्कत करेंगे, तो हमारा उपकार होगा। कोश अवधी तथा रामचरित मानस से अध्येताओं के लिए उपादेय तथा सङ ग्रहणीय होगा, ऐसा विश्वास है।

पूर्ण हुए दस वर्ष आज जब तुम गोलोक सिधारे।
तात करो स्वीकार, भावमय श्रद्धासुमन हमारे।।

नवलता
28/3/2011

—अ—

अइसेउ—एक कुछ ऐसे भी (जन्तु थे)। लं—4

अंका—अक्षर। बा—97

अंकित—लिखी गई, चिन्हित। बा —10

अंकुर—अँखुए। बा—346

अंकुरेउ—पैदा हो गया है। बा—129

अंकुस—अंकुश (हाथी चलाने वाला लोहे का छोटा शस्त्र, रोक।) बा —199/256

अंग—सहायक, शरीर। अ — 285

अंग अंगन्हि—अंग अंग में। उ—12

अंगदादि—अंगद इत्यादि। बा—18

अँगनाई—आँगन। उ—76

अँगरी—कवच। अ—191

अँगवनिहारे—अँगों पर सहने वाले। अ—25

अंगीकारा—अंगीकार, स्वीकार। बा—89

अंगु अघाई—साङ्गोपाङ्ग, भरपेट। अ—300

अंगुलि लाएँ—उँगली लगाकर। बा—117

अँगू—अंग, शरीर। अ—40

अँचइ—आचमन करके, शुद्ध होकर। बा—355

अँचइअ—आचमन कर लीजिये, हाथ मुँह धो लीजिये। अ—115

अँचवत—पीते ही, मद रूपी मदिरा का आचमन करते ही (पीते ही।) अ—231

अंजलि—दोनों हाथ, अंजुली बा—3

अंजि—लगाकर। बा—1

अँजोरी—उजाला। अर —11

अंड—ब्रह्माण्ड। अ—156

अंड कटाह—ब्रह्माण्ड। उ—80

अंड कोस—ब्रह्माण्ड। सुं—21

अंडजराया—पक्षियों के राजा गरुड़जी।,80

अंडन्हि—अंडों में। अ—7

अंत— परिणाम अ—22

अंतरधान—अंतर्ध्यान, आँख से ओझल। बा—77

अंतरहित—अंतर्ध्यान। बा—133

अंतरहित—छिपे हुए, अंतरिक्ष से। बा—351

अंतर जामी—हृदय की बात सुनने वाले (भगवान शंकर)। बा—51

अंतरु—भेद। बा—70

अंतहुँ—अंत में, बाद में। अ—56

अंतावरि—अंतड़ियाँ। लं—81

अंतावरी—अंतड़ियाँ। अर—20

अंथयउ—डूब गया। अ—156

अंदेसा—चिन्ता, सन्देश। बा—14

अंध—विवेकशून्य। उ—70

अंब—माता। बा—31

अंबक—नेत्र। बा—147

अंबरपीत—पीताम्बर। उ—12

अँबारी—छज्जे। बा—213

अँबारी—हाथियों के हौदे। बा—300

अंबिका—माता पार्वती। बा—67

अंबु—जल। बा—318

अंबुज—कमल। बा—147

अंबुधर—जलयुक्त मेघ। उ—12
अंबुधि—समुद्र। बा—85
अंहुपति—वरुण। लं—15
अंभोज—कमल। बा—318
अंसन्ह सहित—अंशों सहित। बा—152
अकंटक—सुखी, कष्टरहित। बा—87
अकंपन—एक राक्षस। लं—62
अकिंचन—इच्छा रहित, सर्वत्यागी। बा—161
अकुंठा—अखंड। लं—26
अकथ—अवर्णनीय, महान। बा—2
अकथनीय—अवर्णनीय। बा—60
अकनि—शब्द सुनकर। बा—302
अकरुन—दयारहित। बा—275
अकल—अगोचर, अखंड। बा—50
अकलंका—निर्दोष। बा—72
अकसर—अकेले। अर—24
अकाजु—बुराई। बा—4
अकाजेउ—मरे हों। अ—247
अकाम—कामना रहित। बा—76
अकामिनां—निष्काम पुरुषों को। अर—4
अकाल—असमय, बिना ऋतु के। अर—24
अकासवानी—आकाशवाणी, दैवी निर्देश। बा—173
अकुल—बिना परिवारवाला। बा—79
अकुलानी—घबड़ा गई, व्याकुल हो गई। बा—58
अकुलाहीं—व्याकुल हो गई है। बा—58
अकुलाहीं—व्याकुल हो रहे हैं। बा—135
अकोविद—अज्ञानी। बा—115
अखंड—न टूटने वाला, बहुत बड़ी। बा—58
अखयवटु—अक्षयवट। बा—44
अखारा—नाच गाना का अखाड़ा। लं—13
अखिल—सम्पूर्ण। बा—191
अखिल अघपूग—संपूर्ण पापसमूह। उ—92
अखिलेस्वर—संसार के स्वामी। बा—48
अग—अगम। बा—185
अग जग—जड़—चेतन समस्त जगत। अर—32
अग जग नाथ—चराचर के स्वामी। लं—36
अगम—अप्राप्य, कठिन। बा—23
अगवान—बारात की अगवानी। बा—304
अगवाना—आगे आकर स्वागत करने (शिव जी की बारात का)। बा—95
अगवानन्ह—अगवानी करने वाले। बा—305
अगनित—बहुत से। बा—40
अगहु—पकड़ में न आने योग्य। अ—47
अगहुड़—आगे को। अ—25
अगाधू—अगाध, अथाह, अत्यन्त गहरा। बा—5

अगिनि—अग्निदेवता। बा—189

अगिनि समाऊ—अग्निहोत्र की सब समाग्री सहित। अ—187

अघ—पाप। बा—4

अघटित—असत्य, असम्भावित। बा—115

अघटित—अमिट। अ—165

अघरासी—पापराशि। उ—124

अघरूप—पाप मूर्ति। बा—176

अघाई—पूर्णतम, भरपेट। अं—52

अघाउँ—तृप्त होऊँ। लं—57

अघात—चोट, छकते हैं। कि—14

अघाती—छकती, संतुष्ट होती। बा—28

अघाने—तृप्त हुये। अ—108

अघारी—भगवान। बा—186

अचंचल—स्थिर। बा—230

अच्छ—अक्षय कुमार। लं—36

अच्छत—चावल। बा—296

अचगरि—चपलता। बा—277

अचर—स्थावर, जड़। बा—84

अचल—स्थिर। बा—2

अचवाँइ—आचमन कराकर, हाथ मुँह धुलवाकर । बा—99

अचारा—आचरण। बा—183

अचारु—कुलाचार। बा—323

अचेत—ना समझ, अर्धचेतन। बा—30

अछत—रहते हुये। बा—2, 279

अज—ब्रह्मा, ईश्वर, जिसका जन्म न हुआ हो। बा—13

अजय—जिसे कोई जीत न सके। बा—170

अजर—दीर्घायु। बा—82

अजसु—अपयश। अ—33

अजहुँ—इस समय भी। बा—50

अजा—अजन्मी, पार्वती, बकरी बा—98

अजाचक—अयाचक (मालामाल कर दिया)। उ—12

अजादि—ब्रह्मा इत्यादि। बा—54

अजित—अजय। कि—26

अजिन वसन—वल्कल वस्त्र अ—211

अजिर—आँगन। बा—105

अजे—अजेय। उ—14

अट्टहास—खिलखिलाकर हँसना। सु—25

अटन्ह—अटारियों। बा—347

अटनु—घूमना। अ—280

अटपटि वानी—उल्टी सीधी अनुपयुक्त भाषा। बा—134

अढुकि परहिं—ठोकर खाकर गिरते है। अ—143

अतनु—कामदेव, बिना शरीर वाला। बा—247

अतर्क्य—तर्क रहित, विवादरहित। बा—121

अति—बड़ा, बहुत। बा—2

अतिकाय—एक राक्षस। लं—62

अति खिसिआन—बड़े गुस्से में। सुं—9

अतिथि—मेहमान। बा—32

अत्रि प्रिया—अत्रिपत्नी अनसूया। अ—132

अतिरोषी—बहुत क्रोधवाला। बा—171

अतिसय—अत्यन्त। बा—18

अतुल—जिसे तोला न जा सके, अधिक। बा—153

अतुल बल—अत्यन्त बलशाली। बा—178

अतुलित—अधिक। बा—188

अथाई—चबूतरों पर (जहाँ तहाँ)। अ—11

अदभ्र—महान्। उ—72

अदभुत—अनोखा। बा—43

अदृस्य—अन्तर्ध्यान। बा—189

अदाया—निर्दयता। लं—16

अदिति—देवताओं की माता। बा—31

अदिन—बुरा दिन। अ—181

अदेय—न देने योग्य। बा—149

अदोषा—कलंकरहित। अ—325

अधगति—नीची गति को। उ—107

अधन—निर्धन। बा—161

अधम—नीच। बा—18

अधर—होंठ। बा—136

अधर बुधि—अस्थिर बुद्धि की। अ—16

अधगो—नीचे की इन्द्रियाँ। लं—15

अधमाधम—नीच से नीच। उ—107

अधारा—सहारा। बा—22

अरुझाई—अधिकाधिक उलझती ही जाती है। उ—117

अधिकाई—बहुत। बा—11

अधिकाति—बढ़ती ही जा रही है। बा—359

अधिाकान—बढ़ गया है। अ—51

अधिकारी—योग्य, पात्र। बा—48

अनंग—कामदेव। बा—87

अनंत—जिसका अंत न हो, दीर्घकालीन, लक्ष्मण जी। बा—33

अनंदे—आनन्दमग्न हो गये। बा—99

अन्न—अनाज, धान्य। बा—101

अन्यथा—झूठ। बा—88

अन्हवाइ—नहलाकर। बा—43

अन्हवाये—नहलाये। बा—11

अन अहिवातु—विधवापन। अ—25

अनइच्छित—बिना चाहे हुये। उ—119

अनइस—बुरा। आ—163

अनख—क्रोध। बा—28

अनख—स्पर्धा, होड़, बराबरी। अर—30

अनघ—पाप रहित। बा—22

अनजानत—अज्ञान, अनजाने। बा—282

अनट—अत्याचार, उपद्रव। अ—269

अनत—अन्यत्र, दूसरी ओर। बा—11

अनन्य—घोर, अन्य नहीं। बा—145

अनपायनी—अचल। कि—25

अनभएँ—होने से पहले। बा—172

अनभल—बुरा। बा—5

अनमनि—उदास। अ—13

अनमिल—बेमेल। बा—15

अनयन—बिना आँख के, जो देख न सके। बा—229

अनृत—झूठ। लं—1

अनरथु—अनर्थ। अ—157

अनल—आम। बा—5

अनल दाहि पीटत घनहिं—आग से जलाकर घन से पीटते हैं। उ—37

अनलहु ते—अग्नि से भी अधिक (जलाने वाला)। अर—2
अनवद्य—अनिंद्य, दोष रहित। बा—90
अनहित—बुरा। बा—3
अनादि—पुराना (जिसका आदि न हो)। बा—21
अनामय—नीरोग, कुशल। बा—22
अनामा—जिसका कोई नाम न हो, ईश्वर। बा—13
अनारम्भ—कोई भी आरम्भ (फल की इच्छा से) न हो। उ—46
अनिकेत—जिसका कोई घर नहीं, शिवजी। उ—46
अनिप—सेनापति। लं—46
अनिमादिक—अणिमादिक आठों सिद्धियाँ। बा—22
अनिर्वाच्य—अवर्णनीय। सुं—8
अनिल—वायु। बा—7
अनी—किरण समूह, सेना रूप में। उ—14
अनीक—सेना, टुकड़ी, टोली। बा—188
अनीति—अत्याचार। बा—183
अनीती—अनीति, अनुचित। बा—56
अनीसहिं—जीव में। बा—70
अनीह—बिना इच्छा वाला, ईश्वर। बा—13
अनु—अथवा, अन्यथा, नहीं तो। अ—30
अनुकथन—बाद में चर्चा होती है। बा—41
अनुकूला—पक्ष में, कृपालु। बा—15
अनुग—अनुगामी, स्वामी। अ—229
अनुगामी—पीछे चलने वाले। बा—17
अनुग्रह—कृपा बा—1
अनुचर—दास। बा—278
अनुचरन्ह—सेवकों ने। उ—56
अनुज—छोटा भाई। बा—176
अनुजन्ह—छोटे भाईयों को। बा—205
अनुजवधू—छोटे भाईयों की स्त्री। कि—9
अनुजा—छोटी बहिन। उ—102
अनुदिन—दिन दिन (सदैव) उत्तरोत्तर। अ—205
अनुभवहिं—अनुभव करते हैं। बा—22
अनुभाऊ—प्रभाव। आ—289
अनुमाना—विचार किया। बा—52
अनुमोदन—प्रशंसा। उ—129
अनुरागा—अनुराग, प्रेम। बा—1
अनुरागी—प्रेम में मग्न हो गई। बा—336
अनुरूप—अनुसार, योग्य बा—12
अनुरोधू—हठ। अ—55
अनुसंधाना—खोज, कामना। बा—156
अनुसरई—मानेगा। बा—168
अनुसरहीं—अनुसरण करते हैं, पीछे चलते हैं बा—3
अनुसरेहू—पालन करना। बा—334
अनुसारी—चलाई थी। अ—16
अनुसासन—आज्ञा। बा—93
अनुहरइ—अनुसरण करता है। बा—277
अनुहरत—अनुकूल, सदृश। बा—219
अनुहरत—योग्यतानुसार। अ—177
अनुहारि—अनुकूल जानकर। बा—230
अनुहारी—अनुसार। बा—28

2F

अनूपम—अनोखा, अद्वितीय। बा–19
अनूपा—अलौकिक। बा–22
अनूपान—अनुपान (औषधि के साथ सेवन करनेवाला पदार्थ)। उ–122
अनेक—बहुत। बा–9
अनैसे—टेढ़े। बा–279
अपकार—बुराई, अनभल। बा–137
अपकीरति—अपयश। बा–273
अपछरा—अप्सरा, देवलोक की नर्तकियाँ। बा–86
अपजस—अपयश, बुराई। बा–7
अपडर—कल्पित डर। बा–29
अपतु—नीच। बा–26
अपनपौ—अपनी महानता। बा–161
अपनाइ—अपने अधीन करके। बा–181
अपनाई—आत्मीय बनाकर, अपना लिया। बा–161
अपभय—व्यर्थ के डर से। बा–285
अपमाना—निन्दा, विरोध। बा–59
अप्रतिहत—अबाध। उ–109
अप्रेमय—असीम। अर–4
अप्रिय—बुरी। बा–208
अपर—अन्य, दूसरे। बा–46
अपरना—अपर्णा (पार्वती का नाम)। बा–74
अपर रिधि—दूसरी ऋद्धियाँ। उ–83
अपराधा—दोष। बा–58
अपलोक—अपयश, बुराई। बा–5
अपवरग—अपवर्ग, (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य)। बा–315
अपवादा—बुराई, निन्दा। बा–64
अपहरई—अपहरण कर लेती है। उ–59
अपहरहीं—छीने लेते हैं। बा–299
अपान—अपने आप को, अहंभाव। बा–233
अपार—बड़ी। बा–6
अपावन—अपवित्र। बा–93
अपुनीत—अपवित्र। बा–69
अपेल—अटल, उल्लंघनरहित। सुं–59
अबल—निर्बल। उ–115
अबलन्ह—स्त्रियों के । बा–96
अबला—स्त्रियाँ, स्त्री, माया । बा–85
अबलानन—स्त्री का मुख । उ–101
अबलामयं—स्त्री रूप ही । बा–85
अबाधा—बाधारहित, एकरस । बा–37
अबाधी—बाधारहित । उ–116
अबुध—अज्ञानी । बा–274
अबूझा—बेसमझ, अज्ञानी । लं–40
अभंगू—न मिटने वाला । बा–7
अभागा—बेचारा, दुर्भाग्यवान । बा–39
अभारू—भार, जिम्मेदारी । अ–269
अभास—झलक दिखाई पड़ रही है । लं–12
अभिअंतर—अतःकरण का । उ–49
अभिजित—दिन का आठवाँ मुहूर्त, विजयी । बा–191
अभिनंदन—अनुमोदन । अ–176
अभिमत—इच्छित, अनोखे । बा–27
अभिमाना—गर्व, घमंड। बा–39
अभिमाना—घमंडी। बा–158

अभिराम—आनन्द देने वाले, सुन्दर। बा—75
अभिलाषु—इच्छा । बा—8
अभिषेक—पूजा । अ—157
अभीष्ट—मनचाहा। उ—35
अभूत रिपु—कोई भी शत्रु नहीं, अजातशत्रु। उ—38
अभेद—जिसका भेदन न हो सके, अभेद्य। बा—50
अभेदवादी—ब्रह्म और जीव को एक बताने वाला ज्ञानी। उ—100
अभोगी—विषय रहित। बा—90
अमंगल—दुःख। बा—10
अमंगल—डरावना। बा—67
अमर—न मरने वाला, देवता। बा—82
अमरउ—देवता भी। अ—26
अमरता—अमरत्व, कभी न मरना। बा—5
अमरपद—देवताओं का पद। अ—298
अमरपुर—अमरावती। अ—141
अमरावति—स्वर्ग। बा—152
अमल—दोषरहित, निर्मल। बा—42
अमाई—समाता था। बा—307
अमात—समाता। बा—284
अमान—मानहीन। बा—67
अमाना—परिमाणरहित। बा—192
अमानुष—मनुष्य की शक्ति से परे। बा—357
अमाया—निष्कपट। लं—59
अमित—असीम, अधिक। बा—12
अमित अवकासा— अनन्त अवकाश(स्थान)। उ—91
अमितनागबल—असंख्य हाथियों का बल। सुं—54
अमितबोध—असीम ज्ञानवान्। अर—45
अमिति जुगुति— अनगिनत युक्तियाँ। उ—112
अमिय—अमृत। बा—1
अमी—अमृत। बा—19
अमोघ—अचूक। सुं—1
अमोघशक्ति—जिसकी शक्ति कभी बेकार नहीं होती। लं—110
अमोले—अत्यन्त मूल्यवान, अमूल्य। बा—150
अय—लोहा। बा—298
अयं—यह। बा—85
अयन—घर। बा—1
अयमय—लौहमयी, फौलाद। बा—275
अयान—मूर्ख। अ—207
अयानी—अज्ञानी। बा—120
अयुतजन्मभरि—दश हजार वर्ष तक। उ—107
अरंडु—एरंड, रेड़की। अ—42
अरंभा—प्रारम्भ। बा—35
अरंभेउ—प्रारम्भ हुआ। अ—157
अरगाई—चुप हो गये। अ—259
अरघु—अर्घ्य। बा—319
अरति—अप्रीति। अ—295
अरथ—धन, शब्दार्थ। बा—37
अरधंग—आधे अंग में, पत्नी रूप में। बा—98
अरनी—ईंधन, लकड़ी (यज्ञ में मन्थन की जाने वाली)। बा—31
अर्क—मदार। कि—15

2B

अर्ध–आधा। बा–190
अर्धजलपरे–आधे जल में रक्खे जाते हैं। लं–88
अर्पा–अर्पित कर दिया हो। लं–67
अर्पित–चढ़ा देते थे, न्योछावर कर देते। बा–156
अर्भक–बच्चे। बा–272
अरि–शत्रु। बा–4
अरिमर्दन–शत्रु नाशक। उ–91
अरिहि–शत्रु को भी। अ–32
अरिहुक–शत्रु का भी। अ–183
अरी–अरि। उ–14
अरुन–लाल, सूर्य के सारथी का नाम। बा–1
अरुनचूड़–मुर्गा। बा–358
अरुनपानि–लाल लाल हथेलियों वाले। उ–77
अरुनसिखा–मुर्गा। बा–226
अरुनारी–ललाई। बा–195
अरुनारे–लाल–लाल। बा–199
अरुनोदय–सूर्य निकलने पर। बा–238
अरुनोपल–लाल पत्थर। लं–40
अरूप–जिसका कोई रूप न हो, ईश्वर। बा–13
अल्पमृत्यु–छोटी अवस्था में मृत्यु। उ–21
अलंकृति–अलंकार, आभूषण, अर्थ का चमत्कार। बा–9
अलंपट–लिप्त न होने वाले। उ–38
अलख–स्थूल दृष्टि से देखने में न आने वाले, अदृश्य। अ–93
अलखगति–अगोचर, परब्रह्म। बा–108
अलखित–न जानने योग्य। अ–110
अलच्छि–दरिद्रता। बा–6
अलप–थोड़ा, अल्प। बा–12
अलान–हाथी बाँधने की काँटेदार लोहे की बेड़ी। अ–51
अलि–भौंरा। बा–243
अलिमाला–भौंरा की पक्तियाँ। बा–37
अली–सखियाँ। बा–236
अलीका–असत्य। बा–216
अलीहा–झूठ। अ–48
अलेख–बेहिसाब, अत्यधिक। अ–294
अलेप–निर्लेप। अ–219
अलोला–स्थिर हो गया। कि–7
अलौकिक–अद्वितीय, महान, अनोखा। बा–2
अव्यक्त–निराकार। अर–32
अव्याहत–अबाध। उ–110
अवकलन–समझ में आता। अ–253
अवज्ञा–अपमान। सुं–26
अवगाही–अथाह, कठिन। बा–9
अवगाही–गोता लगाकर। बा–39
अवगुन–दोष। बा–67
अवघटघाटा– दुर्गम घाटियाँ। अर–7
अवचट–चकित होकर। बा–248
अवटै–पकावे। उा–117
अवडेरि–त्याग कर। बा–79
अवढरदानी–मुँह माँगा देने वाले। अ–44
अवतंसा–भूषण। बा–88
अवतरिहउँ–अवतार लूँगा। बा–187

अवतरेउ—अवतार लिया है। बा—17
अवध—अयोध्याजी। अ—324
अवधपुरी—अयोध्याजी। बा—16
अवधि—सीमा, समय। बा—16
अवधेस—अवधपति श्रीराम। उ—14
अवधेस—कुमार दशरथ के पुत्र। बा—46
अवनि—पृथ्वी। बा—154
अवनिकुमारी—पृथ्वी की कन्या सीता जी। अ—64
अवनिप—राजाओं की। बा—279
अवनीसा—अवनीश, राजा। बा—6
अवमाना—निन्दा। बा—63
अवर्त—चक्र। अ—276
अवँराई—आमों का बगीचा। बा—37/उ—50
अवराधक—आराधना करने वाले। कि—7
अवराधन—आराधना, प्रक्रिया। उ—110
अवराधे—पूजा किये हुये। बा—70
अवरेखी—अंकित। बा—264
अवरेब—वक्रोक्ति। बा—37
अवलंबन—आश्रय, सहारा। बा—27
अवलंबभवंत कथा—आपकी लीला कथा का आधार है। उ—14
अवलंबा—सहारा। अ—60
अवलि—कतार, पँक्ति, समूह। बा—243
अवलोकनि—देखने में, देखना। बा—42
अवलोकि—देखकर। बा—119
अवसर—समय, मौका। बा—84
अवसहिं—किसी के वश में न होने वाला, स्वतन्त्र, भगवान। अर—26
अवसाना—अन्त, मृत्यु। बा—235
अवसि—अवश्य। बा—90
अवसेरी—(भरत से मिलन को) मन में आना। अ—7
अवसेषित—बचा था। बा—170
अवाँ—कुम्हार का आँवा। बा—58
अवासु—आवास, घर। अ—179
अविकारी—दोष रहित। बा—23
अविगत—अज्ञेय। बा—186
अविचल—स्थिर। बा—76
अविचलपावनी— अचल पवित्र कथा। सुं—35
अविछीन—अविच्छिन्न, एकतार। उ—116
अविनय—ढिठाई। अ—64
अविनासिनि—कभी नाश न होने वाली। बा—98
अविनासी—ईश्वर। बा—23
अविरल—अनन्य, प्रगाढ़। अ—75
अविरलछाँह—घनी छाया। अ—237
अविरोधा—अनुकूल। अ—296
अविवेक—अज्ञान। बा—15
अविवेकहिं—अज्ञानता को ही। बा—222
अविहित—अनुचित। बा—119
अस्त रवि—सूर्यास्त। बा—159
अस्तुति—प्रार्थना। बा—83
अस्थि—हड्डी। अ—179
अस्थि मात्र—केवल हड्डी ही शेष, अत्यन्त कृश शरीर। बा—145
अस्थिसैल—पर्वत के समान अस्थियाँ। लं—15

असंका—आशंका, सन्देह, निडर। बा—12
असंकू—निडर। बा—274
असंभावना—अनहोनी।(मिथ्या कल्पना)। बा—119
असंमत—विरोध, विपरीत। बा—115
अस—ऐसा। बा—11
असआवा—ऐसा विचार हुआ। बा—57
असज्जन—असाधु, दुष्ट। बा—5
असन—भोजन। बा—161
असनि—अशनि, बज्र। लं—32
असनिहु के घाय—वज्र के आघात (प्रहार) भी। अ—306
असमंजस—दुविधा (द्विविधा)। अ—85
असमंजस—अनमेल, कठिनाई, अड़चन। बा—14
असमय—बुरा समय। बा—158
असमसर—कामदेव। बा—126
अस समउ—ऐसा अवसर। अ—42
असवार—सवार (घुड़सवार)। बा—298
असवारा—बैठा है, बैठ गये। बा—95/298
असा—ऐसा है। उ—102
असाँचा—झूठ। बा—175
असाध—असाध्य। अ—34
असाधू—दुष्ट। अ—207
असि—इसी प्रकारसे, तलवार। बा—90
असिकला—तलवार चलाने की कला में। बा—298
असिधारा—तलवार की धार। बा—67
असिब—अमंगल, भयावना। बा—92
असीस—आशीर्वाद। बा—70
असीसहिं—आशीर्वाद देते हैं। बा—319
असुर—राक्षस। बा—18
असुराधिप—राक्षस पति, जलंधर। बा—123
असुरारी—भगवान राम। बा—51
असेषा—सभी, संपूर्ण। बा—118
असोकी—शोक रहित। बा—164
असोच—निश्चिन्त। कि—3
असौच—अपवित्र। लं—16
अह—अहंता। अ—225
अहइ—है। बा—167
अहउँ—हूँ। बा—52
अहहिं—हैं। बा—14
अहनिसि—दिनरात। उ—25
अहमिति—अहम्+इति=मैं ही सब कुछ हूँ ऐसा भाव। बा—116
अहमिति—ऐसा, अंहकार है। बा—283
अहसि—है। अ—162
अहह—अरे। बा—258
अहहीं—हैं। बा—46
अहहू—हो। अ—43
अहार—भोजन। बा—144
अहारू—आहार, भोजन। बा—177
अहि—सर्प। बा—11
अहिकुलवासा—नागकुल के रहने का स्थान (पाताल लोक)। बा—178
अहिगन मँह—साँपों के मध्य में। सुं—20
अहित—अनभल, बुरा। सुं—40
अहिन्ह कै—साँपों की। सुं—2
अहिनाहू—शेषनाग जी(सपों के स्वामी)। बा—361

अहिनी—नागिन। अर—17
अहिप—शेषनाग। अ—254
अहिपति—शेषनाग जी। सुं—35
अहिबेलि—नाग बेलि, पान की लता। बा—288
अहिभवन—साँप का बिल। बा—113
अहिभामिनी—नागिन। अर—30
अहिराजा—शेषनाग जी। बा—195
अहिवाता—सुहाग, सधवा। बा—67
अहिसीस—शेषनाग के सिर पर। अ—117
अहीसा—शेषनागजी। बा—105
अहेरी—शिकारी। अ—133
अहेरे—शिकार। बा—159
अहोभाग्य—सौभाग्य। सुं—47

—आ—

आइहहिं—आवेंगे। बा—310
आउब—आऊँगा। बा—169
आउब—आऊँगी। बा—234
आँक—निश्चय। अ—183
आकर—भंडार, योनि। बा—8
आकर चारि—चार प्रकार के जीव (स्वेदज, अण्डज, उद्‌भिज, जरायुज)। बा—8
आकाश वास—आकाश को ही वस्त्र रूप में धारण करने वाले दिगम्बर शिव। उ—108
आकु—मदार। उ—115
आकृति—शकल, बनावट। बा—137
आखर—अक्षर। बा—9
आखर जुग—रामनाम (दो अक्षर)। अ—316
आँखि देखावहिं डाटि—डाटकर आँख दिखाते हैं, उपेक्षा करते हैं। उ—99
आगम—शास्त्र। बा—12
आगमन—आना। बा—207
आगर—घर, भंडार। बा—192
आगार—घर। बा—17
आगारा—महल। लं—10
आगिलि—अगली, इसके बाद की। बा—206
आचमन—हाथ मुँह धोने के लिए जल। बा—329
आचरजु—आश्चर्य। बा—33
आँचरन्हि—छोरों पर। बा—327
आचरन—आचरण, चरित्र। बा—183
आचरनी—आचरण होता है। उ—37
आछी—अच्छी, सुन्दर। बा—8
आजू—अब, आज। अ—73
आत्माहन—आत्मघाती। उ—44
आतप—गर्मी, धूप। बा—42
आतम अनुभव—आत्मानुभव। उ—118
आतमवादी—आत्म तत्त्व के मर्मज्ञ। उ—70
आतुर—रोगी। लं—42
आदिकवि—वाल्मीकि जी। बा—19
आदि देव—भगवान कपिल। बा—142
आदि सक्ति—सीता। बा—148
आदि सृष्टि—प्रारम्भिक सृष्टि। बा—162
आन—दूसरा, अन्य, सौगन्ध। बा—3

आन अनुहारी–दूसरी ही सूरत में देखा। बा–226
आनत–आते ही। बा–119
आनँदरासी–आनन्द समूह, ईश्वरं। बा–23
आनन–मुख। बा–106
आनब–ले आऊँगा। बा–169
आनहु–ले आओ। अ–6
आनहु जाई–ले आइये। बा–322
आना–आई हूँ। बा–54
आना–आन, सौगन्ध। अ–43
आनि–लाकर। आ–2
आनिबी–ले आवेंगे। सुं–32
आनिय–ले आइये। सुं–31
आनी–ग्रहण की है, लाकर। बा–113
आनु जल–पानी ले आ। अ–101
आनेसु–ले आना (लाओ)। बा–182
आनौ–ले आऊँ। आ–206
आप स्वयं–श्रीराम। बा–17/210
आपन्नमामीश– (आपत्+नमामि+ईश) मैं दुःखी आप शिव को नमन कर रहा हूँ। उ–108
आपनि पर–अपनी पराई। बा–319
आपुनु–स्वयं। बा–183
आपु विषय–अपने विषय में, अपने प्रति। बा–161
आपुहि–अपने को। अ–57
आपू–आप (नारदजी)। बा–26
आभीर–अहीर, ग्वाले। उ–130
आमलक–आँवला। बा–30
आमिष–मांस। बा–173
आयत–चौड़ी। बा–327
आयत उर–विशाल वक्ष। सुं–45
आयसु–आज्ञा। बा–52
आयुध–शस्त्र, हथियार। बा–188
आयूहीन–अवस्था क्षीण हो गई। सुं–42
आरजसुत–आर्य पुत्र श्रीराम। अ–97
आरत–व्याकुलता से। अ–52
आरत–आतुर, दुखी, अधीर। उ–1
आरतनादू–आर्तनाद (हाहाकार)। अ–81
आरत बंधो–हे आर्तों(दीन दुखियों) के बन्धु श्रीराम।उ–18
आरत भारी–अति दुखी। बा–22
आरति–दुःख (आर्त भाव)। बा–43
आरतिहर–दुःखों को हरने वाले। उ–9
आराती–नाश करने वाले, शत्रु। बा–57
आरामः–बगीचा। अर–11
आरूढ़–सवार हैं। सुं–11
आरौं–आरव, आहट, शब्द। बा–156
आल–बाल–थाल्हें। बा–344
आलसहूँ–आलस्य से। बा–28
आलि–हे सखी। बा–222
आँव छाँह–आम की छाया में। उ–57
आव–आते। बा–44
आव–यज्ञ। लं–85
आवत–आती हुई, आता हुआ, आते समय। बा–304/लं–94
आस–आशारूपी। बा–43
आसा–दिशायें। लं–119
आश्रमन्ह–स्थानों को। बा–43

आश्रमी चारि—चारों आश्रम वाले, वर्णाश्रमों में स्थित। कि—16
आश्रित—सहारे। बा—118
आसिषा—आशीर्वाद। बा—343
आसीन—विराजमान्। अर—3
आसीना—विराजमान, बैठे हुए। बा—54
आसुतोष—तुरन्त प्रसन्न होने वाले, शिवजी। बा—70
आसू—आशु, तुरन्त। लं—55
आहिं—हैं। अ—117
आहुति—होम की आहुतियाँ। बा—189

—इ—

इन्द्रजाल—माया। अर—39
इन्द्रजीत—मेघनाद। बा—183
इन्दिरा—लक्ष्मीजी।बा—54
इंदु—चन्द्रमा। बा—1
इच्छाचारी—स्वेच्छाचारी, वेरोकटोक, इच्छानुसार। अ—172
इच्छामय—स्वेच्छा से। बा—152
इच्छित—चाहा हुआ। बा—70
इतराई—इतराते हैं (मर्यादा उल्लंघन करते हैं)। कि—14
इतिहासा—पौराणिक कथायें। बा—58
इदमित्थं—यह बस वही है, ऐसा। बा—121
इन्ह—इन (दोनों राजाओं जनक और दशरथ)। बा—310
इरिषा—ईर्ष्या, जलन, द्वेष। बा—136
इव—तरह, समान। बा—16
इष्ट देव—आराध्य, भगवान। बा—51
इहइ—यही। बा—187
इह लोके परे वा—इस लोक अथवा परलोक में। उ—108
इहाँ—इस लोक, यहाँ। उ—45

—ई—

ईति—महामारी। अ—235
ईति—धान पकते समय का रोग। अ—253
ईषान—ईषान दिशा (पूर्व व उत्तर के बीच का कोना)। उ—108
ईषना तीनी—तीन प्रबल इच्छाओं ने (पुत्र,धन,लोकप्रतिष्ठा)। उ—71
ईस—ईश्वर। बा—21
ईस—शिवजी। बा—87
ईस—इष्ट देव। बा—196
ईस—ईश्वर, इष्ट देव। बा—321

—उ—

उअहिं—उदय हो। उ—78
उकसहिं—उचकते हैं। बा—135
उकुति—अलंकार पूर्ण उक्ति। लं—1
उखारी—उखाड़ा। बा—129
उग्र—भीषण, घोर। बा—177
उग्रबुद्धि—उग्र बुद्धिवाला। उ—97
उगिलत नाही—नहीं छोड़ रहा है। बा—156
उघरहिं—खुल जायँ। बा—1
उघरहिं अंत—भेद खुलने पर। बा—7

उघारतपी—नंगे बदन रहना (तपस्वी का)। उ—101

उघारि—खोलकर । बा—87

उघारी—नंगी(म्यान से बाहर) खड़ी हो। अ—31

उच्चरहीं—पढ़ते थे; बोलते थे। बा—101

उचाट—उच्चाटन। अ—295

उचारी—बोले। बा—112

उछंग—गोदी। बा—68

उछाहू—उत्साह, उल्लास, खुशी। बा—39

उजरउ—उजड़ जाय, नष्ट हो जाय। बा—80

उजरे हरष—मिट जाने पर प्रसन्न। बा—4

उजागर—यशस्वी, प्रसिद्ध। बा—28

उजारि—उजाड़, नष्ट। बा—177

उजिआर—प्रकाश। बा—21

उडगन—तारागण। बा—32

उतंग—ऊँचा। सुं—3

उतकरष—बड़ाई, श्रेष्ठता। सुं—40

उत्पल—कमल। कि—30

उत्तम—श्रेष्ठ। बा—240

उत्तर प्रति उत्तर—दलीलें (उत्तर—प्रत्युत्तर)। उ—111

उत्कंठा—प्रबल इच्छा, लालसा। बा—229

उतपति—जन्म। बा—162

उतपात—उपद्रव, अनर्थ। बा—41

उतर—उत्तर। बा—41

उतराई—नाव द्वारा पार उतारने की मजदूरी। अ—102

उताइल—जल्दी—जल्दी। अ—234

उताना—उल्टा,पैर ऊपर की ओर करके लोटना। लं—40

उतारहि पारु—नार उतार दे। अ—101

उद्वेग—घबड़ाकर। अ—126

उदउँ—निकला है। बा—238

उदघाटी—खोलकर। बा—239

उदधि—सागर। बा—6

उदभव—पैदा होना, उत्पत्ति। बा—163

उदय—निकलने पर। बा—4

उदय गिरि—उदयाचल। बा—254

उदर वृद्धि—जलोदर। उ—121

उदर रेख—पेट पर रेखायें (त्रिवली)। बा—147

उदारा—उदार, दानी, महत्त्वपूर्ण। बा—10

उदास भायँ—उदासीन भाव से। अ—48

उदासा—सन्यासी। बा—79

उदासा—साधुता। बा—162

उदासी—सन्यासी, साधु। बा—48

उदासीन—सन्यासी, साधु। बा—4

उधारि—उद्धार करके। बा—221

उधारे—उद्धार किया। बा—24

उनीदवस—नींद के वश। बा—355

उपकारा—भलाई। बा—84

उपकारी—भलाई करने वाला। बा—112

उपचार—उपाय, इलाज। अ—107

उपजहिं—पैदा होते हैं। बा—5

उपजावा–उत्पन्न किया। बा–320
उपद्रव–विध्वंसात्मक कार्यवाही। बा–183
उपदेसा–उपदेश कर रहा हैं। अ–2
उपदेसेउ–शिक्षा दी, निर्देश किया। बा–72
उपधान–तकिया। अ–91
उप पातक–बड़े छोटे पाप। अ–167
उपमा–उदाहरण। बा–37
उपरना–दुपट्टा। बा–327
उपराजा–रचा हुआ है। उ–60
उपरोहित–परिवार में पूजा कराने वाला ब्राह्मण, कुलगुरु। बा–169
उपरोहित कर्म–पुरोहिती का पेशा। उ–48
उपल–पत्थर, ओला। बा–4
उपवन–बगीचा। बा–86
उपवरहन–तकिया। बा–356
उपवासा–व्रत। बा–74
उपवीत–यज्ञोपवीत, जनेऊ। बा–92
उपहार–भेंट। बा–305
उपहास–हँसी। बा–8
उपाई–रचना की। बा–186
उपाऊ–उपाय, तरीका। बा–3
उपाए–रचा, पैदा किया। अ–317
उपाटी–उखांड़ लिया। लं–70
उपाधी–उपाधि, पदवी। बा–21
उपाधी–उपद्रव। अ–183
उपारी–उखाड़कर। कि–30
उपारे–उखाड़ डाले। सुं–18
उपाया–पैदा किया हुआ। उ–87
उपासक–पूजनेवाले भक्त। बा–18
उबटि–उबटन करके। बा–336
उबरा–बचा शेष रहा। बा–326
उबरे–बच पाये, उद्धार हो सका। बा–85
उभय–दोनों। बा–5
उभौ–दोनों। कि–8
उमगि–उमड़ कर। बा–318
उमगी–उमड़ पड़ी। बा–359
उमगेउ–उमड़ पड़ा। बा–39
उमा–पार्वती जी। बा–10
उमाकृत वेषा–सती का बनावटी रूप। बा–53
उमारमन–महादेव जी। बा–1
उमेस–उमा+ईश=शिवजी। बा–15
उर–हृदय। बा–1
उरआनी–निश्चित ही। बा–320
उरग–साँप। अर–24
उरगाद–गरुड़जी। अर–11
उरगारी–गरुड़जी। अर–17
उरताड़न–छाती पीट पीट कर। लं–77
उरन्हि–हृदयों पंर। बा–243
उरभूषन–वक्ष पर पहनने वाले आभूषण। बा–327
उर राखी–हृदय में धारणकर लिया। बा–77
उरलाई–हृदय से लगा लिया। बा–338
उरालय–हृदय रूपी घर में। उ–34
उरिन–ऋण रहित। बा–276

उलूक—उल्लू। बा—255

उलूकहिं—उल्लू को। सुं—45

उसासू—लंबी साँस। अ—13

—ऊ—

ऊखमय—रस की। बा—275

ऊतरु—उत्तर। अ—13

ऊना—ग्लानि, दुःख। अ—21

ऊमरि—गूलर। अर—13

—ए—

ए—इन। बा—326

एइ—ये ही। बा—311 / 320

एक छत्र—अखंड, अकेला। बा—164

एकटक—टकटकी लगाये। अ—115

एकतनु—एक ही शरीरधारी। बा—162

एक ते एका—एक से बढ़कर एक। बा—54

एक नारि व्रत—एक पत्नी व्रती। उ—22

एक रस—सर्वथा निर्विकार। बा—341

एक रस—अखंड। उ—78

एकवीर—अद्वितीय वीर। अर—29

एक हि बारा—एक साथ मिलकर। बा—251

एका—एकमात्र स्त्री। अर—44

एकाकिन्ह—एकान्त वासियों के। बा—79

एकान्त—अकेले में। बा—71

एतनिअ—इतनी ही है। अ—1

एतनेहि—इतने में ही। सुं—15

एतनोई—इतना ही है। अ—316

एतादृस—ऐसे(ऐश्वर्य और प्रभावशाली)। अ—98

एतेहु पर—इतने पर भी। बा—12

एवमस्तु—ऐसा ही हो। बा—150

एहि ते—इससे अधिक। अ—81

एहि विधि—इस प्रकार से। बा—190

एहि भाँति—इस प्रकार से। बा—236 / 359

एहि मँह—इस(राम चरित मानस) में। बा—10 / उ—129

एही—इसी। बा—61

एहूँ मिस—इसी बहाने। बा—206

एहू—यह कविता। बा—9

—ऐ—

ऐन—अयन, घर, धाम। अ—116

ऐसिउ पीर—ऐसी भारी पीड़ा को भी। अ—27

ऐहहिं—आयेंगे। अ—31

ऐहहु—आओगी। बा—52

—ओ—

ओऊ—इन दोनों ने भी। बा—195

ओघ—समूह। बा—16

ओट—आड़। बा—232

ओड़न—ढाल, वार रोकने में सहायक उपकरण। अ—191

ओड़िअहिं—रोके जाते हैं। अ—306

ओदन—चावल। बा—203
ओधे—जग गये। अ—323
ओर—अंत तक। अ—24
ओरे—ओले। अ—147
ओहार—पर्दा। बा—348
ओही—उसको (उस राजकन्या को), उससे। बा—132

—औ—

औतेहु—आते, आये होते। बा—282
औरउ—और भी, दूसरे भी। बा—30/196/उ—45
औषध—औषधि, दवा। बा—171

—क—

कंक—चील (क्रौंच)। अर—20
कंकन—कंकण (हाथों के कड़े)। बा—230
कंचन—सोना। बा—12
कंज—कमल। बा—1
कंजारुन—लाल कमल। सुं—45
कंटक—काँटे। अ—62
कंठ—गला। बा—72
कंठा—गले में। बा—243
कंडु—खुजली। उ—121
कंत—पति। बा—71
कंद—मूल, जड़। बा—194
कंदर—पर्वतों की गुफायें। अं—62
कंदरन्हि—गुफाओं में। बा—84
कंदुक—गेंद। बा—253
कंध—तने। उ—13
कंधर—कंधा (गर्दन)। बा—147
कंप—धड़कन, कँपकपी, काँपने लगा। बा—55
कंपति—समुद्र। लं—5
कंप न भूमि—न भूकंप हुआ। लं—14
कंपेउ—भयभीत हो गये। बा—87
कंबु—शंख। बा—199
कँहरत—कराह रहे हैं। लं—88
काँकर—कंकड़। अ—62
काँख—बगल। लं—65/24
काँच किरिच—काँच के टुकड़े। उ—121
काँजी—खटाई। अ—231
काँधी—कंधे पर धारण किया, शिरोधार्य किया। बा—182
काँवरि—वहँगी। अ—278
किंकर—दास। उ—2
किंकरी—दासी। बा—336
किंकिनी—करधनी, घंटी। बा—199
किंबा—अथवा, या। लं—20
किंसुक—पलास। लं—54
कुंकुम—केसर। बा—194
कुंचित—घुँघराले। बा—199
कुंजर—हाथी। बा—322
कुंजरगामी—हाथी की सी चाल वाले। बा—255
कुंजरमनि—गजमुक्ता। बा—243
कुंठित—गोठिल। बा—280
कुंडल—कान का आभूषण। बा—92
कुंडल मकर—मकरा कृति कुंडल। बा—147

कुंत—भाला। सुं—15

कुंभ—हाथी के मस्तक का अगला भाग, घड़ा। लं—12

कुंभज—अगस्त्य मुनि। बा—32

कुंभजादि—अगस्त्य आदि। लं—120

कूँड़ि—लोहे का टोप। अ—191

कचं—बाल। बा—199

कछुक—कुछ थोड़े से। बा—131

कछु कहन न पारहिं—कुछ कह नहीं सकते। उ—17

कज्जलगिरि—काजल के पर्वत। अर—18

कटक—सेना। बा—25

कटकई—सेना। बा—154

कटकटान—कटकटाये, शब्द किया। लं—32

कटाच्छ—तिरछी दृष्टि। बा—331

कटि—कमर। बा—147

कटि किंकिनि—करधनी। उ—76

कटि सूत्र—मेखला, करधनी। बा—327

कटु—कठोर, कड़वा। बा—281

कटु तुंबरि—कडुई तूँवी। बा—113

कटु रटनि—जली कटी बक बक कर, कर्णकटु बकवास। लं—24

कटु बादी—अनुचित बोलने वाला। बा—275

कठोरी—भयानक। अ—22

कढ़हारू—निकालने वाला (केवट)। बा—260

कत—किसलिये, क्योंकर। बा—97

कतहुँ—किसी प्रकार से, बा—199

कथइ—वर्णन करता था। बा—162

कदंबा—बहुत से। अ—82

कद्रू—सर्पों की माता। अ—19

कदराई—कायरता, हिचक। बा—12

कदरी—कदली, केला। सुं—58

कदलि—कदली, केला। बा—287

कन—कण, नोक, चिनगीरी। बा—258

कनक—सोना। बा—178

कनकउ—सोना भी। बा—80

कनक कलप वर बेलि—सोने की सुन्दर लता। अ—163

कनक कसिपु—हिरण्य कश्यप। बा—27

कनक कील—सोने की कील। बा—328

कनक घट—सोने का घड़ा। बा—278

कनक भाजन—स्वर्ण पात्रों में। बा—101

कनकमय सिखर—स्वर्ण मय शिखर। उ—56

कनकलोचन—हिरण्याक्ष (एक राक्षस)। अ—297

कपट—छल। बा—12

कपट सयाने—कपट करने में चतुर। उ—100

कपाटा—दरवाज़े। बा—214

कपाटी—किवाड़। अ—145

कपारू—कपाल, मस्तक। अ—163

कपाला—मस्तकों। लं—29

कपाली—मृत खोपड़ियों को धारण किये हुये शिव। बा—79

कपि—बन्दर। बा—25

कपिंदा—श्रेष्ठ वानर। सुं—35

कपिंदा—कपि श्रेष्ठ अंगद। लं—32

कपि कुंजर—वानर श्रेष्ठ। लं—32

कपि कुंजरहिं—वानरों में श्रेष्ठ। लं—19

कपि पति—सुग्रीव। बा—18
कपिराई—हनुमान जी। सुं—5
कपिलहिं—सीधी और दुधारू गाय को (श्वेतवर्ण की गाय को)। उ—39
कपि लीला करि—बंदर घुड़की देकर। लं—44
कपूत—कुपुत्र। बा—266
कपोत—कबूतर। अर—30
कपोल—गाल। बा—147
कबंध—एक राक्षस। अर—33
कबहुँक—कभी। बा—222 / उ—44
कबारू—धंधा। अ—100
कबुली—कबूल करवाकर (बलि पशु बनाकर)। अ—22
कमठ—कच्छप, कछुवा। बा—20
कमनीया—कमनीय, सुंदर। बा—247
कमान—धनुष। अ—41
कमल कुल—कमलों के समूह। बा—37
कमलापति—भगवान विष्णु। बा—136
कमलासन—स्थित मुद्रा के एक आसन का नाम (पद्मासन)। बा—58
कर—हाथ, किरण। बा—3
कर—का। अ—50
करके—कसकने लगे। अ—54
करगत—हाथ में, पास, मुट्ठी में। बा—45
करज—हाथ की उँगलियाँ। उ—177
करनधार—खेने वाला, कर्णधार। अ—277
करत—कहते हुये, रचना करने में। बा—12
करतब—क्रिया, कार्य, करनी। बा—12
करतब रहेऊ—कराना था। अ—35
करतलगत—हथेली पर, मुट्ठी में। बा—21 / 30
करतार—ब्रह्मा, ईश्वर। बा—6
करतारी—हाथ की ताली, हथेली। बा—114
करतूति कराल—भयंकर करतूतें। अ—281
करतूती—कृत्य, करनी, किया हुआ। बा—5
करन विभूषण—कान का आभूषण, कर्णफूल। बा—20
करनबेघ—कनछेदन। अ—10
करन्हि—हाथों में। बा—346
करनि—करने वाली। अ—87
करनी—करतूत, रीति, चाल। बा—58
करनीया—करना चाहिये। अ—96
करब—करूँगा। बा—84
करब—करते रहियेगा। बा—360
करब अकाजू—काम बिगाड़ देगी। अ—73
करम—भाग्य। बा—97
करम कथा—कर्म कथा, भाग्य। बा—2
करत मन बानी—मन, वचन और कर्म से। बा—16
करवरें—बलाओं एवं बाधाओं को। बा—357
करवाल—तलवार। लं—101
करष—विरोध। सुं—36 / लं—18
करषहिं—खींच रही है। बा—347
करषा—जोश। अ—191

करषि—खींच। बा—137
करसि—कर रही हैं। अ—15
करसि पान—मदिरा पीकर। अर—21
करहिं—करते रहे। बा—342
करहिं कूटि—व्यंग्य वचन कहते थे। बा—134
करहु—कर दो। बा—332
करहु सेतु—पुल तैयार करो। लं—1
करहू—बना लो। बा—335
करारा—ऊँची कगार। अ—133
करालं—विकराल। उ—108
कराल—कौवा। लं—78
कराल कृपाना—भयानक कटार। अर—29
कराला—कठिन, भयानक। बा—12
कराला—कठिन कलियुग में। बा—27
करावन—कराने। बा—334
करहिं—निर्माण करवाते हैं। बा—13
करि—लगाकर। बा—2
करि—हाथी। अर—37
करिअहि—कीजिये। अ—4
करिकर—हाथों की सूँड़। बा—147
करिगन—हाथियों का झुंड। बा—32
करिनि—हथिनी। अ—29
करिय समाजू—तैयारी की जाय। अ—4
करिया मुँह करि—मुँह काला करके। लं—49
करिवर—गजगामिनी। अर—36
करिवर कर हीना—सूँड़ बिना श्रेष्ठ हाथी। लं—61
करिवर बदन—श्रेष्ठ हाथी के मुखवाले हैं। बा—1
करिवरन्हि—श्रेष्ठ हाथियों पर। बा—300
करिहि—कर देगी। बा—40
करीला—काँटों के। अ—63
करुआई—कड़ुवापन। बा—10
करुइ—कड़ुई। अ—16
करुना—करुणा, दया। बा—1
करुना ऐन—करुणाधाम। अ—100/136
करुनाकंदा—करुणा के मूल। लं—4
करुनाकर—करुणा की खान श्री राम जी। सुं—45
करुना करति—विषाद करती हुई। बा—87
करुना करहू—रोइये—पीटिये। अ—35
करुनानिधान—दया के घर श्री राम। बा—18
करुनापुंजा—दया राशि भगवान। बा—148
करुनायतन—कृपा निधान भगवान शंकर। बा—110
करोरी—करोड़ों। अ—287
कलंका—दोष। बा—97
कल—सुन्दर। बा—20
कल करनी—सुन्दरी कारीगरी से। बा—344
कलकंठ—कोयल। बा—9
कलपकोटिक—करोड़ों कल्पों। बा—342

कलपतरु—देवताओं का कल्पवृक्ष पारिजात—बा0—26

कलपना—संकल्प। लं—2

कलप बेलि—कल्प लता। अ—59

कलप भेद—कल्प भेद। बा—33

कलपि—रचकर। अ—228

कलभ—हाथी का बच्चा। बा—233

कलमले—कलमला उठे। बा—261

कलवल बचन—तोतले वचन। उ—77

कलहंसा—राज हंस। अर—40

कलातीत—कलाओं से परे। उ—108

कलापा—बहुविधि रोना। अ—57

कलापा—रोते हुये। अ—86

कलिकाल—कलियुग। बा—12

कलि कुकाठ करि कीन्ह कुजंत्रू—कलह रूपी कुकाठ का कुयन्त्र बनाया। अ—212

कलित—सुन्दर। बा—243

कलिमल—कलियुग के पापों को। बा—1

कलिमल सरि—कर्मनासा नदी। बा—5

कलिल—कीचड़। उ—82

कलुष—पाप। बा—16

कलेवर—मूर्ति, शरीर। बा—12

कलेसा—क्लेशों को, दुःखों को। बा—2

कल्पहिं—कल्पना करते है। उ—100

कल्पांत—कल्प के अन्त में भी। उ—57

कल्पांतकारी—कल्प का अन्त (प्रलय) करने वाले। उ—108

कल्पांत न नास—मानो प्रलय होने पर भी उनका नाश नहीं। उ—102

कल्पिकरि—कल्पना कर करके। उ—97

कल्पित—बनावटी। बा—115

कल्लोलिनी—नदी। उ—108

कवन—कौन सी। अ—81

कवन विधि—किस प्रकार से। बा—55

कवनिहु—किसी। अ—95

कवने—किस। अ—29

कवलु—कौर, ग्रास। बा—274

कवित—काव्य,रचना। बा—11

कष्टसाध्य—कठिनाई से होने वाले। बा—167

कसि—कैसी। बा—280

कसि फाबी—कैसी फब रही हैं(अच्छी लग रही हैं)। अ—25

कस्यप अदिति—भगवान राम के माता—पिता (दशरथ कौशल्या कश्यप तथा अदिति के रूप में अवतरित)। बा—123

कहउँ जान—जाने को कहती हूँ। अ—55

कहँरत परे—पड़े कराह रहे हैं। अर—20

कहब—कहेंगे। अ—70

कहसि किन—कहती क्यों नहीं। अ—13

कहाउति—कही हुई कहावत। अ—296

कहाउब—कहलाया। अ—35

कहिअत—कहने में। बा—18

कहि कहई—कहकर वर्णन करता हैं। बा—341

कहि गति घर की—अपने घर घर का (सभी देवताओं का) दुखड़ा रोया। अ—321

कहि न सिराई—कहते नहीं बनता। बा—193

कहिअ—कहा जाय। अ—2

कहिहि का राऊ—राजा क्या कहेंगे। अ—39

कही सुहाई—सुन्दर बातें कह सुनाई। बा—296

कहै को पारा—कौन कहकर पार पा सकता है। बा—349

कहौ काह—क्या वर्णन करूँ। बा—321

कहौं पद रोपि—प्रतिज्ञा करके कहता हूँ। उ—71

काऊ—कभी भी। बा—39

काक—कौवा। बा—3

काकू—कटु वचन। अ—261

काके—किसका। बा—294

काखासोती—जनऊ की तरह। बा—327

कागद—कागज। बा—9

कागभुसुंडिहि—काकभुशुण्डिजी को। बा—30

कागा—कौवा। बा—5

काचा—कच्चा (कमजोर)। सुं—37

काछे—बनाये, सजाये। बा—221

काज—प्रयोजन, काम। बा—4

काठ—लकड़ी। अ—100

काढ़त—निकाल रहा हैं। लं—23

काढ़ि—निकालकर। अ—47

काढ़ि असि—तलवार निकालकर। सुं—9

काढ़े—निकाले जाने पर। अ—70

काढ़े—(जैसै) चित्रित किये गये। अ—84

काढ़ेसि—निकाली। अर—29

कातरि—अधीर। अर—69

कानन—वन, जंगल। बा—161

कान न कीन्ह—नही सुना, ध्यान नहीं दिया। अ—50

काननचारी—वन में विचरने वाले। अर—11

कानन जाता—वनयात्रा। अ—53

कान दीन्हे—कान बन्द करके। बा—261

कानि—मर्यादा। अ—303

कानी—मर्यादा। बा—62

काम—वासना। बा—12

कामकृत—कामकला, कामदेव का रचा हुआ। बा—85

कामकोकिल—कामदेव की कोकिलें (कोयलें)। बा—322

कामगज—कामदेव के हाथी। बा—318

कामतरु—कल्प वृक्ष। बा—27

कामद—इच्छित फल देने वाले। अ—279

कामद—कामधेनु। बा—31

कामद—कामधेनु। बा—31

कामदुहा—कामधेनु। बा—326

कामधेनु—देवलोक की गाय (इच्छित फल देने वाली)। बा—155

कामना—इच्छा। बा—22

कामरिपु—शिवजी। बा—107

कामरूप—मनमाना रूप धारण करने वाले। बा—176

कामरूप—छली (मनचाहा रूप बदलने वाला)। सुं—43
कामसुरभि—कामधेनु। बा—331
कामादिहर—काम आदि विकारों का हरने वाला। लं—121
कामारि—भगवान शंकर। बा—120
कायर—डरपोक। बा—43
कारमुक—धनुष। लं—93
कारिख—काला। बा—7
कारि जनु साँपिनि—जैसे काली नागिन(फुफकार छोड़ रही हो)। अ—13
कारिनि—करने वाली। बा—98
कारे—काले। लं—46
काल—समय। बा—7
काल—कलिकाल। अर—6
कालउ—मृत्यु भी। बा—165
काल कलेवा—काल का ग्रास। उ—94
कालकूट—विष। बा—19
कालदूत—मृत्यु का संदेश सुनाने वाले। लं—78
कालनिसा—काल रात्रि। सुं—15
कालि—कल। अ—11
कालिका—काली देवी। बा—47
काली—कल ही। बा—229
कास—काँस (जंगलों में सफेद फूस शरद् ऋतु में)। कि—16
कासु—किसकी। अ—267
काह—कैसी। बा—269
काह कहिहि—क्या कहेंगे। अ—50
काह बिगारा—क्या बिगाड़ा था। बा—97
काहा—क्या। बा—313
कहि धौ—पता नहीं किसको। बा—240
काहुक—कभी किसी का। अ—20
काहुहि—किसी को। अ—93
काहू—किसी के लिये। बा—20
काहू—किसी की भी। बा—281
काहे करसि—क्यों कर रही हैं। अ—36
किंकर—सेवक। बा—8
किधौं—या।(मानो) बा—95
किधौं—कहीं। उ—1
किन—क्यों नहीं। बा—52
किंनर—नपुंसक, देवताओं में नाच गाना करने वाले। बा—7
किमपि—किसी से कुछ भी। बा—162
किमपि नहिं—कुछ भी नहीं। लं—107
क्रियन्ह—चार क्रियायें (श्रद्धा, योग, ज्ञान, यज्ञ)। बा—325
किराती—भीलनी। अ—13
किरीट—मुकुट। बा—11
किलकत—किलकारी मारते हुये। बा—203
किलकनि—किलकारी। उ—77
किसलय—पत्ते। अ—66
किसु—किसका। बा—78
किसोरक—बच्चा। बा—263
किसोर—बिल्कुल सुकुमार। बा—208
किसोरी—लड़की। अ—60
कीचहिं—कीचड़ को। बा—7
कीचा—कीचड़। बा—194
कीजिअ काजु—काम करें। अ—38
कीट—कीड़ा। अ—26

कीती–कीर्ति। सुं–35
कीन्हेसि कपट प्रबोध–उल्टा सीधा समझा दिया। अ–18
कीर–तोता। बा–227
कीरति–कीर्ति, यश। बा–3
कीस–कीश, बन्दर। बा–18
कुंद–श्वेत, एक पुष्प है। बा–1
कुअंक–दुर्भाग्य रेखा। बा–32
कुअँर–राजकुमार। बा–229
कुअँरि–कुमारी, (सीताजी) राजकुमारी। बा–245
कुअवसर–कुसमय। अ–74
कुआरी–अविवाहित। बा–81
कुकरमू–अधर्म। अ–253
कुकवि–छोटे कवि। बा–10
कुगाँव–बुरा गाँव। अ–323
कुधर–पर्वत। सुं–55
कुघातु–बुरी घात,भीषण दाँव। अ–22
कुचलिहि–कुचाली कैकेयी को। अ–51
कुचाली–कुचक्री। बा–29
कुचाह–कुसमाचार। अ–226
कुजाती–बुरी (निन्दित) जातिवाले। बा–6
कुजोग–कुसंग। बा–7
कुजोगी–विषयी। लं–34
कुटिल–टेढ़ा, दुष्ट। बा–8
कुटिलाई–कुटिलतायें। अ–228
कुठाटु–षड्यन्त्र। अ–295
कुठायँ–कुठौर। अ–30
कुठारी–कुल्हाड़ी। बा–114
कुठारु–फरसा, कुल्हाड़ी। बा–273
कुठाहर–कुसमय में। अ–36
कुतरक–अनुचित तर्क। बा–32
कुतरकी–गलत तर्क करने वाली। बा–9
कुदाना–कुत्सिल दान। उ–99
कुदेस–बुरा देश, जंगली प्रान्त। अ–223
कुधर–पहाड़। अर–20
कुधात–निम्न धातुओं। बा–3
कुनारि–कुलटा स्त्री। कि–7
कुपंथ–बुरा रास्ता। बा–12
कुपथ–कुपथ्य, हानि कर भोजन। बा–133
कुबरी–मंथरा, दासी। अ–13
कुबामा–नीच स्त्रियाँ। अ–223
कुभाँति–बुरा हाल। अ–30
कुभायँ–दुर्भाव (वैर से)। बा–27
कुभोग सरेन–कुभोग रूपी बाण द्वारा। उ–14
कुम्हड़बतिया–कद्दू (सीताफल) की छोटी बतिया। बा–273
कुमत–षड्यन्त्रकारी मत (राम का राजतिलक) बुरे विचार। अ–21
कुमत–बुरा विचार (निश्चय)। अ–162
कुमति–नीच बुद्धि वाले। अ–24
कुमति–अरी कुमति दुर्बुद्धि। (कैकयी से भरत ने संबोधित किया)। अ–162
कुमतिहिं–दुर्बुद्धि कैकेयी को। अ–25
कुमार–कौमार्य अवस्था। बा–204
कुमारगामी–कुमार्ग पर चलने वाले दुष्ट राक्षस। सु–22

कुमारि—पुत्री। बा—70
कुमारी—अविवाहित। अर—17
कुमुख—(कैकेयी के) बुरे मुख में। अ—43
कुमुद—कुई का फूल, जलकमल। बा—32
कुमुद—कमलिनी, कुमुदिनी। बा—238
कुमुदबन्धु—चन्द्रमा। बा—243
कुमुदिनी—कमलिनियाँ। अ—118
कुमुलानी—मुर्झा गई। बा—108
कुयोगिनां—विषयी पुरुषों के लिये। अर—4
कुरंगा—हिरण। बा—49
कुररी—एक पक्षी। अर—31
कुराई—दरारें। अ—311
कुरी—एक जाति या वर्ग। उ—15
कुरूप—बुरी सूरत। बा—133
कुरोगा—सीताराम लक्ष्मण का विरह रूपी बुरा रोग। अ—317
कुल—वंश। बा—71
कुलघाती—हे कुलघाती (कुल नाश करने वाले) सुं—52
कुलवृद्ध—परिवार की बूढी स्त्रियाँ। बा—322
कुलमान्य—कुल की माननीय। अ—49
कुलह—बाज की आँख पर की टोपी। अ—28
कुलि—सम्पूर्ण। बा—35
कुलिस—वज्र, हीरा। बा—113
कुलिसहु चाहि—वज्र से भी अधिक। उ—19
कुबलय—कमल। सुं—15
कुवस्तु—बुरी वस्तु। बा—7
कुविचारी—कुरे विचार वाले। बा—8
कुविहग—(बाज) दुष्ट पक्षी। अ—28
कुवेषता—बुरा वेष। अ—25
कुवेषु—कुरूप। बा—7
कुष्ट—कोढ़। उ—121
कुसंकट—बुरे बुरे संकट। बा—22
कुसंग—बुरी संगत। बा—38
कुसकेतु—कुशध्वज (जनक के भाई और मान्डवी के पिता)। बा—325
कुसल—चतुर। बा—41
कुसलात—कुशल—प्रश्न, हालचाल। बा—55
कुसाजु—बुरी हालत में पड़े हैं। अ—39
कुसुम—फूल। बा—233
कुसुमहु चाहि—फूल से भी अधिक। उ—19
कुसुमांजलि—पुष्पवर्षा। बा—265
कुसुमित—फूले हुये। बा—86
कूजहिं—मीठी बोली बोलते हैं। उ—23
कूजहिं—बोलने लगी। बा—126
कूट—पर्वत। बा—357
कूटि—व्यंग्य, उपहास। बा—134
कूप—कुआँ। बा—94
कूर—क्रूर, दुष्ट। बा—8
कूरुम—कच्छप। बा—261
कूला—किनारा, तट। बा—39
कृत—रची हुई। बा—10
कृत—किया हुआ, करता है। बा—13
कृत—रक्खे हैं। लं—11
कृतग्य—भलाई करने वाले। बा—76

कृतग्य—कर्म (रहस्य) के ज्ञाता। उ—124
कृतकृत्य—धन्य, कृतार्थ। बा—222
कृतदूरि—दूर करने वाले। उ—14
कृतजुग—सतयुग। उ—40
कृतान्त—यमराज, मृत्यु। अर—29
कृपन—कंजूस। बा—259
कृपनाई—कंजूसी, दरिद्रता। बा—149
कृपान—दुधारी तलवार। लं—40
कृपानिकेता—कृपानिधान शिवजी। बा—50
कृपामृत—कृपारूपी अमृत से। बा—145
कृपाल—दयालु, ईश्वर। बा—13
कृपाविलोकनि—कृपा पूर्वक देख लेने मात्र से। उ—51
कृमि—कीड़ा। अ—60
कृष्णतनय—प्रद्युम्न (कामदेव का अवतार)। बा—88
कृषी—खेती। बा—4
कृस—कृश, दुबला। बा—143
कृसानु—अग्नि। बा—4
केकिहि—मोर को। बा—161
केत—पुच्छलतारा (अनिष्टकारी)। बा—4
केता—कितना। उ—115
केतिक—कितने। अ—11
केतू—पताकास्वरूप। बा—285
केरा—केला। अ—6
केरी—(कैकेयी) की थी। अ—49
केलि—खेलकूद। अ—10
केलिमृग—खेलने के लिये पालतू हिरन। अ—83
केवट—निषाद (गुह)। बा—41
केवट कुशल—चतुर केवट। बा—41
केस—केश, बाल। बा—147
केहरि—सिंह। बा—32
केहरि—केसरी (एक वानर का नाम)। सुं—54
केहरिनाद—सिंह समान गर्जन। सुं—35
केहि—किस। बा—335
केहि काम—किस लिये हो रहा हैं। लं—1
केहि खाँगे—किस कमी के लिये। अर—31
केही—किसी ने भी। बा—172
केही—किसको। बा—345
कै—अथवा। अ—60
कैकय नंदिनि—कैकेयी। अ—91
कैकयसुता—कैकेयी। बा—195
कैरव—कुमुद, सफेद कमल। अ—10
कैलास—गौरी शंकर की चोटी, एवरेस्ट पर्वत। बा—179
कैलासहिं—कैलाश पर्वत पर। बा—103
कैवल्य—मोक्ष। उ—119
को—कौन। बा—335
कोक कोकी—चकवा चकवी। अ—86
कोक तिलोक—त्रैलोक्य रूपी चकवा। अ—209
कोका—चकवा चकई। बा—85
कोकिल—कोयल। बा—227

कोकिलवयनी—कोयल के समान मधुर बोलने वाली स्त्रियाँ। बा—286

कोकी—चकवी। अ—66

कोछे घाली—गोद में डाल गया था। उ—18

कोट—किला, परकोटा, चहारदीवारी। बा—178

कोट कँगूरन्हि—परकोटे के कँगूरों पर। लं—40

कोटि—करोड़। बा—11

कोटिक—करोड़ों। अ—18

कोटि कुटिलमनि—करोड़ों दुष्टों की शिरोमणि। अ—27

कोटि सत—अरबों। उ—11

कोठि—कोठी, बडी राशि या ढेरी। अ—50

कोतल—बिना सवार के (घोड़ा)। अ—203

कोदंडा—धनुष। बा—147

कोप—क्रोध बा—65

कोपगृह—कोपभवन। अ—22

कोपर—परात। बा—305

कोपी—को+अपि=कोई भी। अ—299

कोरी—करोड़ों। बा—200

कोरे—सादे। बा—9

कोल—सुअर। बा—156

कोल—हे वाराह! (एक वन्य जति)। बा—260

कोलाहल—शोर। बा—267

को बरनै पारे—कौन वर्णन करके पार पा सकता है। बा—199

कोविद—पंडित, विद्वान। बा—3

कोस—कली, पुष्पकोश। अ—204

कोस—खजाना। लं—116/ (कोष) अर—6

कोसल नाथ—दशरथजी। अ—270

कोसलपुर—अयोध्या। बा—141

कोसलराऊ—रामचन्द्रजी। बा—28

कोसलराय—दशरथजी। बा—326

कोसल—अयोध्या। अ—103

कोह—क्रोध। बा—12

कोहबरहिं—कोहबर में, कुल देवता के स्थान में। बा—327

कों हम कहाँ—हम कौन हैं और कहाँ हैं? उ—17

कोहाब—क्रोधित होना, मान करना। अ—28

कोहि—क्रोधी। बा—210

कौड़ी लागि—कौड़ियों के लिये, थोडे लाभ हेतु। उ—99

कौतुक—तमाशा, आश्चर्य। बा—1

कौतुक निधि—लीलाधारी। बा—124

कौतुक ही—अनायास। बा—66

कौतुकिअन्ह—खिलवाड़ करने वालों को, ढूँढ़ने वालों को। बा—81

कौमुदी—चाँदनी। अ—118

कौल—वाममार्गी। लं—31

कौसिक—विश्वमित्रजी। बा—214

कौसिक रूप—विश्वामित्र का स्वरूप मानो। बा—262

कौसिकादि—विश्वामित्र आदि। बा—330

क्रम—कर्म, सिलसिला। बा—186

क्रमनासा–कर्मनाशा (वह नदी) जिसमें स्नान से सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं। बा–6

क्रियन्ह–चार क्रियायें (श्रद्धा, योग, ज्ञान, यज्ञ)। बा–325

–ख–

खंडि–खंडन कर। उ–111

खंडित–कटी हुई है। सुं–11

खंभन–खंभों पर। बा–288

खँसेउ–गिरकर। अ–148

खाँड–शकर, खड्ग। बा–275

खाँडे–तलवार के। अ–191

खग–पक्षी। बा–7

खगनाथा–गरुड़ जी। लं–111

खगनायक–गरुड़जी भी। बा–316

खगनाहा–गरुड़जी। उ–63

खगपति–गरुड़जी। अर–29

खगमृग–पशु–पक्षी। अ–56

खगमुखर–पक्षियों की चहचहाहट। बा–195

खगराई–पक्षिराज, गरुड़जी। उ–91

खगराजा–गरुड़जी। उ–63

खगराया–गरुड़जी। उ–78

खगसाँई–गरुड़जी। उ–70

खगहा–गैंडा। अ–236

खगेसा–गरुड़जी। अर–28

खचाई–खींच दी थी। लं–36

खचित–जड़ा हुआ, जटित। बा–178

खची–बनाई है। अ–27

खद्योत–जुगुनू। अर–11

खनि–खोदकर। अ–324

खप्परन्हि खग्ग अलुज्झि जुज्झिहिं–पक्षी खोपड़ियों में उलझ–उलझकर लड़े मरते हैं। लं–88

खबरि जनाई–सूचना दी। बा–175

खभारू–चिन्ता, विषाद, खलबली। अ–97

खर्पर–खोपड़ियाँ। अर–20

खर्पर–पीठ पर। सुं–35

खर्व–छोटा सा। बा–256

खर–तेज़ धार, तीव्र, गधा। बा–275

खरबर–विघ्न, अड़चन, खलबली। बा–268

खरभरु परा–हलचल मच गई। बा–84

खरभरे–खलबला उठे। सुं–35

खरारी–भगवान राम। बा–192

खरी सेव–गदही की सेवा करेगा। उ–110

खरो सो–तनिक भी। अ–314

खलउ–दुष्ट भी। बा–7

खलगन–दुष्ट जन। बा–4

खलु–निश्चय ही। सुं–33

खस–उशीर (एक जंगली जाति), एक सुगन्धित घास। अ–194

खसी माल–माला खिसक गई। बा–236

खसेऊ–गिरा। लं–14

खाइअ पहिरिय–खाती पहनती हूँ। अ–19

खानिक–खानें। बा–1

खानी—घर, समूह, खान। बा—2
खाल कढ़ाइ—अपनी खाल खिंचवा कर। उ—121
खाहू—खाओ। बा—173
खिन्न—दीन—दुखी। बा—18
खिसिआन—कुपित हो गया। सुं—24
खीन—क्षीण, शुष्क। बा—74
खीर—दूध। अ—232
खीस—विध्वंस। बा—64
खुआरू—बरबाद हो जाते। अ—305
खुटानी—शामत, अनिष्ट। बा—269
खुनिस—अप्रसन्नता। अ—260
खेत—रणभूमि में। लं—35
खेत सुहाये—जीत होगी। अ—192
खेता—युद्ध में। अ—230
खेद—दुःख, पछतावा। बा—157
खेम—कुशल। अ—24
खेलाउब—खिलायेंगे। अ—136
खेलारू—खिलाड़ी। अ—240
खोई—दूर कर दिया। बा—171
खोज मारि—चिन्हों को मिटाकर। अ—85
खोट—नीच। लं—51
खोरी—दोष, दुष्ट। बा—9
खोरी—खौर। बा—219
खोह—गुफा। बा—171

—ग—

गंजन—नष्ट करने वाले। बा—186
गंजा—नष्ट कर दिया, चूर्ण कर दिया। सुं—21
गंधर्व—देवताओं के यहाँ गान करने वाले। बा—7
गुंजत—गूँजने लगे, गाने लगे। बा—86
गुंजा—घुँघचियाँ। अ—26
गएहुँ—पहुँचने पर भी। बा—39
गगन—आकाश। बा—7
गगन गिरा—आकाशवाणी। बा—186
गच—पक्का आँगन। बा—224
गचढ़ारी—ढली हुई फर्श। उ—27
गज—हाथी। बा—11
गज—राजा इन्द्रद्युम्न का शापवश हाथी अवतार। बा—26
गजगन—हाथियों का समूह। बा—267
गजगामिनी—हाथियों की सी चाल वाली। बा—317
गजबदन—गणेश जी। बा—235
गजमनि—गजमुक्ता। उ—9
गजराज—हाथी। बा—256
गजराजघटा—हाथियों के समूह। अर—18
गजानन—गणेशजी। बा—339
गजारी—सिंह। लं—30
गजाली—हाथियों की कतार। अ—228
गढ़—किला। अ—105
गढ़—किला (लंका की चहारदीवारी)। लं—38
गढ़िछोली—गढ़छोलकर। अ—17
गतक्रोध—क्रोधरहित। लं—111
गतभेदा—भेदशून्य। अ—93
गतलाज—निर्लज्ज। अ—178
गति—सुगति, श्रेष्ठ पद। बा—3
गति—दशा, चाल। बा—10

गथ—मूल्य। उ—28

गद—एक वानर का नाम, औषधि। सुं—54

गदगद—पुलकित। बा—72

गनक—ज्योतिषी। अ—323

गनकन्ह—ज्योतिषी ने। बा—312

गननायक—गणेशजी। बा—1

गनप—गणेशजी। अ—273

गनपतिहि—गणेशजी। बा—100

गनराऊ—गणेशजी। बा—19

गनि—विचार करके। बा—43

गनिअ—गिनती करनी चाहिये। अ—42

गनिकाऊ—वेश्या (जीवन्ती नामक) भी। बा—26

गनि लेई—गिन रही हो (मानो राजा के अंतिम क्षणों को मृत्यु स्वयं गिन रही हो)। अ—40

गनी—अमीर। बा—28

गनी—गणना कर रक्खी थी। बा—312

गनेसु—बड़ा शुभ। अ—208

गभीरं—गंभीर। उ—108

गभीरा—गंभीर, घोर। बा—74

गभुआरे—गर्भ के बाल। बा—199

गम—चलना (गमन करना)। अ—289

ग्याति—ज्ञानी। बा—214

ग्याति—कुटुम्बियों को। बा—354

ग्याति—जाति। अ—104

ग्यातिसन—जातिवालों से। अ—189

ग्यानघन—ज्ञान रूपी बादल, अत्यधिक ज्ञानी। बा—17

ग्यानज्योति—ज्ञान उत्पन्न करने हेतु। उ—32

ग्यानधाम—ग्याननिधि, भगवान। बा—51

ग्याननिधि—ज्ञान का कोष, पूर्णज्ञानी। बा—30

ग्यानातीत—बुद्धि से परे। बा—192

गयंदु—पकड़े हुये (नये) हाथी। अ—51

गय—हाथी। बा—130

गयादिक—गया आदि। अ—43

गर—गला। कि—21

गरजनि—गर्जना। बा—347

गरल—विष। बा—5

गरवित—गर्व करती है। अ—18

गरह—गलगंड, कंठमाला आदि (गले का रोग)। उ—121

गरहि गात—शरीर गले जा रहे हैं, क्षीण हो रहे हैं। अ—147

गरहिं—नष्ट हो जोते हैं, गले जाते हैं। बा—4

गरि न जीह—जीभ गल नहीं गई। अ—162

गरीब नेवाजू—दीन बन्धु, ईश्वर। बा—13

गरीसा—भारी, बड़ा, श्रेष्ठ। उ—121

गरुअ—भारी, बोझीला। बा—184

गरुआई—भार, बोझ। बा—187

गरुआई—गुरुता, बड़प्पन। बा—260

गरुड़हि—मोर को। सुं—16

गर्दनि मारी—गर्दन पर प्रहार हुआ, अन्याय हुआ। अ—185

गर्भ न गयउ—गर्भ में ही क्यों न नष्ट हो गया। लं—21

गर्भ सहित—गर्भवती। बा—190

गर्भ स्त्रवहिं—गर्भ गिरने लगे। सुं—28
गर्भहिं—गर्भ में। बा—190
गलानी—ग्लानि, दुःख। बा—43
गलित—रहित—बा—161
गँव तकइ—घात लगाती है। अ—13
गवँहि—धीरे से। बा—172
गवनत भयऊ—चल दिये। लं—121
गवनब—चले जाइयेगा। अ—114
गवनहिं—जाते हैं। बा—45
गवने—चले गये। बा—278
गवाँई—खोकर, बिताया। बा—245
गवाँए—व्यतीत किये। बा—74
गवासा—कसाई, गाय काटने वाला। बा—6
गहगहे—अधिक ध्वनि वाले। बा—154
गहन—घना, कठिन, भयंकर। बा—285
गहरु—विलम्ब। बा—132
गहवर—सघन। अ—84
गहबरि—व्यथित। अ—121
गहवरि—गम्भीर। अ—282
गहहि—ग्रहण कर लेते हैं। बा—6
गहा—पकड़ लिया। लं—111
गहागह—बड़ी धूम से। अ—7
गहि—पकड़कर। बा—234
गहि पद—पैर पकड़कर। बा—91
गहे—पकड़ लिये। बा—343
गहेहू—पकड़ना। अ—151
गा—जाता रहा, गया। अ—47
गाइ गोठ—गोशाला। अ—167
गाऊँ—नगर भर (आयोध्या जी) को। अ—57
गाजहिं—चिंघाड़ रहे हैं। अ—236
गाजे—गरजने लगे। बा—302
गाँठी—गाँठ में बँधी हुई। बा—135
गाँडर—भेड़। अ—241
गाड़—गड्ढों में। लं—53
गाढ़—मज़बूत। अ—105
गाढ़ा—कठोर, गहरा। बा—135
गाता—गात, शरीर। बा—44
गाथ—कथा। बा—351
गाथे—गुँथे हुये हैं। बा—327
गाधिकुलचन्द—विश्वामित्र। बा—360
गाधितनय—विश्वामित्र जी। बा—206
गधिसुत—विश्वामित्र जी। बा—352
गाधिसूनु—विश्वामित्र जी। बा—212
गायक—गाने वाले। बा—194
गारि—गाली। बा—329
गारुडि—साँप पकड़ने वाला। उ—93
गाल बजाई—मिथ्या गर्वित होना। बा—246
गाल बजावा—डींग मारना। उ—98
गाल बड़ तोरे—बहुत बढ़चढ़कर बोलने वाली। अ—13
गालव—गालव मुनि, विश्वामित्र के शिष्य। अ—61
गाहक—ग्रहण करने वाले। बा—336
गाहा—ग्रहण करने वाले। बा—6
गिरा—सरस्वती, वाणी। बा—11
गिरा—आकाशवाणी। बा—57
गिरा गोतीता—वाणी और इन्द्रियों से परे। उ—72
गिरा ग्राम्य—गँवारू भाषा। बा—10
गिरापति—भगवान श्री राम। बा—105
गिरि—पर्वत। बा—11

गिरिंदा—बड़े पर्वत। सुं—35

गिरिखंडा—पहाड़ों के टुकड़े। लं—40

गिरिगन—पर्वत समूह। बा—191

गिरिगुहा—पर्वत की गुफा। बा—157

गिरिजा—पार्वती। बा—15

गिरिजाऊ—पार्वती जी भी। सुं—48

गिरिजा रमन—पार्वती जी के साथ रमण करने वाले शिवजी। बा—103

गिरिनंदिनी—पार्वती जी। बा—31

गिरिनाथा—शिवजी। बा—48

गिरिनारि—हिमांचल की स्त्री मैना। बा—96

गिरिनीला—नील पर्वत। उ—62

गिरिपतिहि—हिमांचल को। बा—91

गिरिभव—पर्वत से उत्पन्न हुआ। बा—80

गिरिभवन—हिमालय के घर को। बा—89

गिरिराऊ—हिमांचल। बा—68

गिरिराज कुमारि—पार्वती जी। बा—74

गिरिवर—पर्वतों में श्रेष्ठ। बा—105

गिरिवर गहन—ऊँचे पर्वत। बा—1

गिरिवर गुहा—पर्वत की गुफा। कि—6

गिरिवर राज किसोरी—पार्वती जी। बा—235

गिरिसंभव—पर्वत से उत्पन्न। बा—78

गिरिहि—हिमांचल को। बा—77

गिरीस—हिमांचल। बा—70

गिरीस कुमारी—पार्वती जी। बा—96

गिरीसा—शिवजी। बा—55

गिलई—निगल जाय। अ—232

गीता—गीत। बा—313

गीध—गिद्ध (जटायु)। बा—24

गीवाँ—गर्दन। बा—243

गुड़ी—पतंग। अर—20

गुदरत बनई—छोड़ते ही बनता। अ—240

गुदारा—खेवा लग गया (नौकायें खेने हेतु तैयार हो गई) अ—202

गुन अनुवादा—गुणानुवाद। उ—110

गुन कृत सन्यपात नहिं केही—सत, रज, तम तीनों द्वारा कर्तृत्व की गर्मी किसे नहीं हुई ? उ—71

गुनग्य—गुणवान। कि—23

गुनग्य—गुणों का आदर करने वाले। उ—21

गुनगन—गुणगान, विशेषता। बा—3

गुनगाहकताई—गुणग्राहकता। लं—24

गुनगाहा—गुणगाथा, गुणगान। बा—8

गुनग्रामा—गुणगाथा। बा—14

गुनग्राही—गुण ग्रहण करने वाले। बा—10

गुनद—गुणकारी। बा—10

गुनदूषक—गुण में दोष लगाने वाले। उ—101

गुनमंदिर—गुणों के धाम। बा—186

गुनमय—गुणों से परिपूर्ण। बा—2

गुनवंता—गुणी। बा—213

गुनह—दोष, गुनाह। बा—281

गुनहू—समझ लेना। अ—61

गुनातीत—तीनों गुणों से परे। अर—39

गुनानी—गुण हैं। उ—52

गुनि—विचार करके। बा—230
गुनिन्ह—ज्योतिषियों से। अ—21
गुनि राखा—विचार किया हो। बा—197
गुनी—गुणी, कारीगर। बा—298
गुपुत—गुप्त, छिपा हुआ। बा—162
गुमान असा—घमंड ऐसा है। उ—102
गुमानी—घमंडी। अ—172
गुर—गुरु, मूल पुरुष सूर्य। अ—37
गुरनारी—बड़ी बूढ़ी अथवा गुरुओं की स्त्रियाँ। बा—295
गुरुतर—भार, बोझ। बा—259
गुरू—मंथरा। अ—27
गुह—निषादराज। अ—144
गुहा—गुफा। बा—125
गुहा—निषादराज, गुह। लं—121
गूढ़—गहरा, रहस्ययुक्त। बा—17
गृहकिंकरी—घर की दासी, अपनी सेविका। बा—101
गृहासक्त दुखरूप—दुःखरूप घर में आसक्त हैं। उ—73
गे—चले गये। अ—86
गेहा—गेह, घर को। बा—62
गै—खोई हुई। अ—44
गो—गाय, इन्द्रियाँ। बा—186
गोई—छिपी हुई। बा—3
गोचर—दृष्टगत, विषय। अ—106
गोचरगो—इन्द्रियों के विषय। लं—111
गोतनुधारी—गाय का शरीर धारण किये हुये। बा—184
गोतीतं—इद्रियों से परे। बा—186
गोतीतमीशं—इन्द्रियों से परे ईश्वर (शिवजी)। उ—108
गोद राखि—गोद में बिठाकर। अ—52
गोपद—गाय का खुर(गाय के खुर के परिमाण वाला स्थान) पैर। बा—119
गोप्यमपि—गोपनीय रहस्य को भी। उ—69
गोपर—इद्रियों से परे। अर—32
गोमाय—स्यार,गीदड़। लं—78
गोलक—आँख का डेला, पुतली। अ—142
गोसाईं—स्वामी। बा—56
गोहारी—रक्षक। अ—317
गौर—गोरा, श्वेत। बा—106
गौरि—पार्वतीजी। बा—15
गौरीसा—शिवजी। बा—104
ग्रंथि—गाँठ। उ—117
ग्राम—गाँव। बा—39
ग्रामनर—गँवार। बा—26
ग्रीवा—गला, गर्दन। बा—147
ग्रीषम—ग्रीष्म, गर्मी। बा—42
ग्रसइ—पकड़ती है, निगलती हैं। बा—238
ग्रससि—खा ले। सुं—2
ग्रसि—भक्षण करके, पकड़ कर। बा—156
ग्रसित—घिरा हुआ। बा—30
ग्रसे—घिरे हुए, आबद्ध। बा—114
ग्रह—नक्षत्र। बा—7
ग्रहइ—प्राप्त करता हैं।बा—118
ग्रह ग्रहीत—पिशाच ग्रस्त। अ—180

—घ—

घट—घड़ा, कलश। बा—99
घटइ—घटित होगा, लगेगा। बा—162
घटज—अगस्त्य मुनि। अ—297
घटजोनी—घटयोनि, अगस्त्य मुनि। बा—3
घटब काज मैं तोरे—तुम्हारे काम आऊँगा। कि—7
घटसंभव—अगस्त्य मुनि। उ—32
घटाटोप—बादलों की घटा की तरह। लं—39
घन—बादल। बा—36
घनगहन—घोर जंगल। बा—157
घनघमंड—बादल घुमड़ रहा हैं। लं—13/कि—14
घनबोध—ज्ञान घन। लं—48
घनस्याम—श्यामवर्ण राम। बा—192
घनेरी—अधिक। बा—41
घमोई—पिता के लक्षण के अनुरुप न होना। लं—10
घर जाउ—घर उजड़ जाय। बा—96
घरिक—घड़ी भर। अ—115
घरिनी—पत्नी, स्त्री। अ—100
घरी—घड़ी, समय में। अ—40
घरी—शुभ घड़ी में। अ—113
घरी कुघरी—समय कुसमय, मौका—बे मौका। अ—26
घवरि—गुच्छे। बा—288
घाउ न बाजा—चोट न लगी। लं—76
घाऊ—चोट। बा—313
घाए—आघात। अ—306
घाट मनोहर चारि—पारस्परिक स्थिर होकर''मानस,संवाद'' चार स्थलों पर प्रवाहितहुआ। भुशुन्डि—गरुड़ शिव पार्वती,याज्ञवल्क्य—भरद्वाज तथा तुलसी—संत समाज। बा—36
घाटारोहु—घाटों को रोक दो। अ—189
घाटि—कम। उ—99
घात—निशाना। अ—133
घात—हत्या। उ—99
घात जनु फाबी—दाँव लगा जानकर। अ—17
घामा—धूप, गर्मी। बा—199
घाय—घात। अ—35
घालइ—नष्ट कर डालती हैं। उ—39
घालहि आनहि—दूसरे को भी नष्ट करते हैं। उ—40
घाला—नष्ट किया। बा—79
घालि—लिटाकर। बा—200
घाली—हृदय में छिपा रक्खा हैं। लं—29
घुनाच्छर न्याय—संयोग वश प्राप्त ज्ञान। उ—118
घुम्मरहिं—घोर शब्द कर रहे हैं। बा—301
घुर्मित—चक्कर खाकर। लं—65
घुरघुरात—गुर्राता। बा—156
घूघरवारे—घुघराले। बा—233
घृत—घी। बा—4
घेरी—घेर लिया। अ—55
घेरिन्हि—घेर लिया। बा—175
घोर गति—भयंकर गति, दंडनीय। उ—107
घोरा—घोर,कठिन। बा—166,अ—168

घोरी—घोलकर। अ—22
घ्रान—गंध, घ्राण। बा—118

—च—

चंग—पतंग। अ—240
चंचरीक—भौंरा। अ—324
चंडकर—सूर्य (प्रचंड किरन वाले)। अ—295
चंद किरन रस—चन्द्रमा की किरणों का रस (अमृत)। अ—59
चंदिनि—चाँदनी। अ—11
चंदु—चन्द्रमा। अ—48
चंद्रमौलि—शिवजी। बा—64
चंद्रहास—तलवार। सुं—10
चंपक बागा—चंपा के बाग में। अ—324
चाँकी—मुहर लगा दी गई है। बा—219
चाँपि सकइ—दबा सकता है। बा—126
चाँपी—दबाई। अ—20
चिंतामणि—एक कल्पित रत्न है, वैद्यक का रस। बा—32
चुंबति—चूम रही है। अ—52
चोंच भंग दुख—चोंच टूटने का दुःख। लं—40
चउहट्ट—चौहट, चौराहा। सुं—3
चक्क—चक्रवाक पक्षी। अ—137
चक्कवइ—चक्रवर्ती सम्राट। अ—98
चकइहि—चकवी को। अ—64
चकित—भ्रमित, आश्चर्य से। बा—53
चकित चित—भौंचक्का सा। सुं—53
चकोर—चकवा। बा—32
चरन—नेत्र। बा—29
चख पूतरि—आँख की पुतली, बहुत प्यारी। अ—23
चढ़िहहि—चढेगी, पालन करेंगी। बा—67
चतुरंग—चार प्रकार की सेना (हाथी—घोड़ा—पैदल—ऊँट)। बा—154
चतुर चर चारी—चार चतुर गुप्तचर। अ—271
चतुरसम—चन्दन, केशर, कस्तूरी और कपूर से बना हुआ सुगन्धित द्रव।बा—296
चतुरानन—ब्रह्मा। बा—202
चपरि—तेजी से। बा—156
चपल—तेजी। बा—203
चपेटा—चपत, झापड़। कि—24
चमर—चँवर। बा—289
चर्म—चमड़ा। अर—20
चर—चेतन। बा—84
चरन परत—प्रणाम करते। अ—44
चरन पीठ—खड़ाऊँ। अ—316
चरन बन—बन में चरने को। उ—6
चरफुरहिं—तड़फडाते हैं। अ—143
चरम—मृगचर्म। अ—6
चरहिं—चलते हैं, विचरते हैं। बा—277
चराचर—जड़—चेतन। बा—55
चरित—चरित्र, कथा वर्णन। बा—8
चरू—हविष्यान्त खीर। बा—189
चल्यो बजाइ—डंका बजाकर चला। लं—49
चलत्कुंडलं—कानों में कुंडल हिल रहे हैं। उ—108
चलि ल्याह—लिवा चली। बा—322

चवहीं—टपका देते हैं। उ—23
चवै—बरसाने लगे। अ—48
चहत—चाहते। अ—36
चह दीखा—देखना चाहता है। अ—47
चहसी—चाहता है। लं—31
चहहीं—चाहते। बा—340
चहुँ जुग—सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग। बा—27
चहुँ पासा—चारों ओर। बा—224
चहुँ फेर—चारों ओर से। उ—1
चहु बन्धु—चारों भाई (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न)। बा—40
चाऊ—लड़ने का चाव, प्रसन्नता, उल्लास। लं—41
चाका—पहिया। लं—80
चाड़—चाह। बा—266
चातक ही—पपीहा को। बा—9
चातकी—पपीहावधू। बा—263
चाप—धुनष। बा—17
चापखंड—धनुष के टुकड़े। बा—262
चापत—दबा रहे हैं। लं—11
चापतम भारी—घोर अंधकार रूपी शिव धनुष। बा—239
चापन—दबाने। बा—226
चापमख—धनुष यज्ञ। बा—221
चापलता—चंचलता। अ—304
चामुंडा—दुर्गा जी के विविध रूप। लं—88
चामर—चँवर। बा—350
चार—चारों फल (धर्म—अर्थ—काम — मोक्ष) अर—17
चार—आचरण। उ—98
चार्‌यो—चारों। बा—327
चारिउ अवस्था—चारों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुत, तुरीय)। बा—325
चारिउ चरन धर्म—धर्म अपने चारों चरणों से (सत्य—शौच—दया—दान)। उ—21
चारि खानि—चार प्रकार के जीव (अन्डज—स्वेदज—उद्भिज—जरायुज)। बा—35
चारि दस—चौदह। अ—1
चारि पदारथ—धर्म—अर्थ—काम— मोक्ष। बा—164
चारि फल—चारों फल (धर्म—अर्थ—काम—मोक्ष)। बा—2
चारि भाँति भोजन—चार प्रकार के भोजन (चर्व्य—चोष्य—लेह्य—पेय अर्थात चबाकर—चूसकर—चाटकर—पीकर खाने योग्य) बा—329
चारू—चारु, सुन्दर। बा—11
चाली—चाल। अ—222
चाषु—नीलकंठ पक्षी। बा—303
चाह—कामना। अ—12
चाहत चीखा—चखना चाहती है। अ—47
चाहसि—चाहते हो। बा—21
चाहि—भी (बढ़कर)। बा—258
चाही—देखकर। बा—349
चिक्करत—चिकने। बा—199
चिक्करत—चिघाड़ते हैं। अर—20
चिक्करहिं—चिंघाड़ लगे। बा—261

चिक्कार—चिंघाड़ करके। लं—70
चिकारा—चीख मारकर। कि—27
चित—हृदय। बा—3
चितइ पराहिं—देखते ही भाग जाते हैं। उ—77
चितइ रहेउ—देखते ही रह गये। अ—44
चितई—देखा। बा—260
चित चढ़ेउ—ध्यान आया। बा—63
चित चाऊ—चाव भरे चित्त से। बा—15
चित चेता—मन चेता (मनो कामना)। अ—11
चितयउँ पाछ उड़ात—उड़ते हुये मैंने पीछे की ओर देखा। उ—79
चित्रकेतु—एक राजा थे जो क्रमानुसार गंधर्व, पुनः दैत्य हुए। बा—79
चित्रलिखित—तस्वीर। अ—60
चित्र लिखे से—मूर्तिवत्। अ—303
चित्रित—बनाये गये हैं। बा—213
चितव—ताक रहा है। बा—279
चितवत—देखते हो, देख रहे। बा—87
चितवनि—दृष्टि, निगाह। बा—147
चितवनिहारा—देखने वाला। अ—67
चितवहिं—देख रहे हैं। बा—314/54
चितवा—देखा। बा—54
चितेरे—चित्रकार (कामदेव)। बा—213
चिदाकाशं—चित्+आकाशं=चेतन आकाश रूप। उ—108
चिदानन्द—सदा चेतन तथा आनन्द रूप। बा—75
चिदानन्द सन्दोह—सच्चिदानन्द घन। उ—52
चिन्हारी—परिचय। बा—50
चिनमय—ज्ञानस्वरूप। बा—120
चिबुक—ठुड्डी, ठोडी। बा—147
चिरजीवहु—बहुत दिन तक जीवित रहो, दीर्घायु हो। बा—196
चिराना—पुराना होकर। बा—36
चीन्हा—पहचान लिया। बा—158
चीरा—कपड़े, साड़ी। बा—196/318
चुकाहीं—चुकेंगे। अ—42
चूक—त्रुटि, गलती। बा—29
चूड़ाकरन—मुंडन संस्कार। बा—203
चूरन चारू—सुन्दर चूर्ण। बा—1
चेत—ज्ञान, होश। बा—172
चेतन—सचल, चैतन्य। बा—3
चेतू—चेत, विवेक। अ—269
चेन—चैन, सुख। लं—87
चेरि—चेरी, दासी। अ—13
चेरे—दास, सेवक। बा—18
चैल—वस्त्र। बा—353
चोखा—सुन्दर। अ—325
चोखा—तेजी से। लं—120
चोप—जोश। बा—267
चोरहिं—चोर को। अ—11
चोरि चितु लेई—चित्त को चुरा लेती है। बा—327
चौगाना—चौगाना एक खेल है। लं—27
चौगुन—चार गुना। अ—51
चौतनी—चौकोनी टोपियाँ। बा—219
चौथपन—बुढ़ापा। बा—142
चौथेपन—बुढ़ापे में। बा—208/लं—7

चौपट होई—विनाश हो जाय। बा—180

चौबारे—छत के ऊपर के बंगले। अ—90

चौहट—चौराहे। बा—213

—छ—

छई—छा गई। बा—318

छई—क्षय रोग। उ—121

छत—घाव। अ—161

छतज—लाल। लं—53

छति—हानि। बा—272

छत्रक दंड—बरसाती छत्ते (कुकुरमुत्ते समान), छतरी की डंडी। बा—253

छत्रबन्धु—नीच क्षत्रिय, बन्धुओं—परिवार सहित। बा—174

छत्रु—छाता, रक्षक। बा—20

छन भंगु—क्षण—भंगुर। अ—190

छन मँह—क्षण भर में।बा—98

छन माँझ—तनिक देर में, तुरन्त ही। बा—171

छनहिं छन—क्षण—क्षण में, प्रति क्षण। बा—349

छमब—क्षमा कीजियेगा। अ—45

छमबि—क्षमा कीजियेगा। अ—116

छमा सी—पृथ्वी के समान। बा—31

छमिबौ—क्षमा कीजियेगा। बा—326

छमिहहिं—क्षमा करेंगे। बा—8

छमेहु—क्षमा करते रहियेगा। बा—101

छय—नाश। बा—170

छयल—छैल छबीले नवयुवक, राजकुमार। बा—298

छरभारू—बोझ। अ—260

छरस—षटरस व्यंजन। बा—173

छरे—चुने हुये। बा—298

छलग्यानी—कपट ज्ञानी, कपट मुनि। बा—170

छलसानी—छल से भरे, कपट पूर्ण। बा—89

छवि—शोभा। बा—11

छविगन—असंख्य सुन्दरतायें। बा—264

छविगृह—सुन्दरता रूपी घर। बा—230

छवि निधि—शोभा की राशि। बा—148

छवि समुद्र—शोभा सिन्धु, अतीव सुन्दरता। बा—148

छवि सिन्धु—श्रीराम। बा—50

छहूँरितु—छओं ऋतुओं में। (वसन्त—ग्रीष्म—वर्षा—शरद—हेमन्त—शिशिर) बा—42

छाई—छाये हुये। अ—47

छाके—छके हुये (स्नेहपूर्ण)। अ—225

छाछी—मट्ठा। बा—8

छाड़हु—छोड़ दो। अ—50

छाड़िय जनि—न छोड़िये। अ—66

छाड़िसि—चलाई। लं—45

छाया—पहले जैसी मोहयुक्त छाया। बा—141

छाये—आकर बस गये। अ—134

छारा—भस्म हो गया, राख। बा—87

छाला–बाघ की खाल (बाघम्बर)। बा–92
छाहीं–छाया। अ–67
छिति–पृथ्वी। बा–188
छीजहिं–घटते जाते हैं। लं–72
छीना–क्षीण, रहित। बा–67
छीर सागर सयन–क्षीरसागर में सोने वाले (विष्णु) बा–1
छीर सिन्धु–दुग्ध सागर (भगवान विष्णु का वास–स्थल) बा–188
छुअत–छूने से। अ–29
छुइ गयउ–छू गया हो। अ–27
छुद्धित–भूखे। बा–157
छुधा–भूख। बा–181
छुधावंत–भूखे। लं–40
छुभित–क्षुब्ध हो गये। लं–79
छुवत चढ़ी–डंक मारते ही विष चढ़ गया हो। अ–46
छुहे–अनेक रंगों से चित्रित। बा–346
छूछे–खाली, बेकार, रहित। अ–32
छूट जानि–बन्धन से छूटा जानकर। अ–51
छेंका आइ–घेर लिया है। लं–49
छेंकी–रोकी। अ–97
छेत्रु–प्रयाग क्षेत्र। अ–105
छेदनिहारा–नष्ट करने वाला। बा–272
छेम–कल्याण। बा–303
छेम करी कह–सफेद शिरवाली चील कह रही है। बा–303
छोनिप–राजाओं के। बा–241
छोनी–पृथ्वी। अ–232
छोभ–ग्लानि। बा–48
छोभा–छुब्ध हो गया, ललचा गया। बा–231
छोरइ–छुड़ाती है। बा–202
छोरन ग्रन्थि पाव– ग्रन्थि को खोलने पावे। उ–118
छोरी–छुड़ा सकता है, मुक्त कर सकता है। बा–200
छोरे–खोले गये। बा–360
छोहू–कृपा, दया, ममत्व, प्रेम। बा–8

–ज–

जंगम–चल, चलता–फिरता। बा–2
जंजाल–जगजाल, संसारी मोहमाया। बा–211
जंत्रित–जकड़े रहती है, मानो ताला लगा है। सुं–30
जंत्री–कील दिया। अ–303
जंतु–जीव। बा–119
जंतु–पशु पक्षी आदि जीव। बा–210
जंबु–जामुन। अ–237
जंबुक–स्यार। अर–20
जग्य उपवीत–यज्ञोपवीत (जनेऊ) बा–244
जग–संसार। बा–2
जग अभिराम–संपूर्ण जगत को आनंद देने वाला। उ–10
जग जननि–जगतमाता। बा–48
जगजाल–संसार के जंजाल। अ–93

4 B

जगजोनी–जगत को उत्पन्न करने वाली योनि। अ–297

जगत–संसार। बा–3

जगतपति–संसार के स्वामी भगवान शंकर। बा–60

जगतवंद्य–संपूर्ण संसार द्वारा पूजित। बा–50

जगतीतल–पृथ्वीतल पर। अ–46

जगदंबा–जगत माता पार्वती। बा–81

जगदंबिका–जगत माता सीताजी। बा–247

जगदीसा–ईश्वर। बा–6

जगनिवास–ईश्वर श्रीराम।बा–191

जगनृपती–(मानो)संसार भर के राजा हों। उ–40

जगमगत–जगमगा रहा है।बा–316

जगमय–संसार में व्याप्त। बा–185

जगमय–विश्वमय। लं–15

जगमूला–संसार का स्रोत, जगत कारिणि। बा–148

जगाएसि काहा–क्यों जगाया? लं–63

जगावहु–जगाओ। अ–38

जच्छपति–कुबेर। बा–179

जजातिहि–ययाति के। अ–174

जजाती–राजा ययाति। अ–148

जटिल–जटाओं वाला। बा–67

जठर–पेट (गर्भ) । बा–142

जठरागी–जठराग्नि। उ–119

जठेरी–बड़ी–बूढ़ी। अ–49

जड़–स्थाई, अचल। बा–3

जड़–मूर्ख। बा–57

जड़जाती–जाति (जन्म) से ही जड़ (मूर्ख)। उ–115

जड़ता–मूर्खता, अज्ञानता। बा–39

जड़ता–शून्यता। बा–258

जड़ताई–मूर्खता, अज्ञानता। बा–249

जतन–यत्न, कोशिश। बा–3

जतनु करहिं–साधन करते हैं। लं–7

जतन ते–यत्न पूर्वक। बा–23

जतिहि–योगी की। अ–29

जती–यती, सन्यासी। अ–172

जथा–यथा, जैसे। बा–51

जथाजोग–यथा योग्य। अ–134

जथाथिति–यथावत, पूर्ववत स्थिर। बा–86

जथाविधि–यथायोग्य। बा–308

जथाविधि–विधिपूर्वक। अ–106

जथाश्रुत–जैसा सुना है। बा–105

जदपि–यद्यपि, हालाँकि। बा–10

जदुवंस–यादव वंश में। बा–88

जन–मनुष्य, भक्तगण, सेवक। बा–2

जनक–पिता। बा–5

जनकसुता–जनकपुत्री सीता। बा–18

जनकौरा–जनकपुरवासी। अ–271

जननि–माता। बा–18

जनम जनम–जन्म जन्मांतर तक। बा–65

जनमत भै–जन्म दिया। बा–195

जनमा–पैदा हुआ। बा–60

जनमु जग जाय–संसार में जन्म व्यर्थ ही है। अ–70

जनमे–पैदा हुए। बा–12

जनमेउ—पैदा हुए। बा—103

जन्म महोत्सव—जन्म दिवस समारोह। बा—34

जनवास—बारातियों का वास स्थल। बा—96

जनहीं—दास का ही, अपना ही (भरत का) अ—234

जनाउ—सूचित कर दो। बा—332

जनाये—सूचित हुए, प्रकट हुये। अ—7

जनाव जनु—मानो जता रहे हैं। उ—1

जनावहिं—प्रकट कर रहे हैं। बा—255

जनावहु—बतला दो। अ—50

जनावा—बताई। अ—45

जनि—मत, नहीं, न। बा—3

जनि—कहीं ऐसा न हो, मानो कि। लं—13

जनिअहि—जान लीजिए। अ—66

जनि कदराहू—अधीर मत होओ। अ—70

जनि चालहीं—न चला। अ—50

जनि जल्पसि—व्यर्थ बकवास मत कर। लं—22

जनित—उत्पन्न हुए, प्रादुर्भूत। बा—2

जनि पारहि लेखे—गिनती में न लावें। बा—357

जनि होसि—मत बन। अर—46

जनु—मानो। अ—40

जनु—दास। अ—9

जनेत—बारात। बा—343

जनेषु—मनुष्यों क लिये। अ—225

जनेसु—राजा। अ—14

जपजाग—जप व यज्ञ। बा—41

जपत—जपते हैं, पूजा करते हैं। बा—10

जपामि—जपता हूँ। उ—14

जम—यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्म चर्य, अपरिग्रह)। बा—35

जम—यमराज, मृत्यु। बा—175

जमकरधार—यमराज की सेना। बा—95

जमगन—यमदूत। बा—31

जमजातना—यम—यातना,नर्क की पीड़ा। अ—65

जमन—यवन। अ—194

जमनिका—यवनिका, पर्दे। उ—73

जमपुर—नरक। अ—145

जमपुरत्रासन—यमपुरी का भय नहीं लगता। उ—40

जमहिं—यमराज से। अ—252

जमात—समूह। बा—93

जमी से—संयमी पुरूषों की भाँति। अ—215

जयऊ—जीत लिया है। अ—210

जयसील—जीत रहे हैं। लं—81

जरई—भस्म होती है। बा—39

जरठ—बूढ़े। बा—240

जरठपन—बुढ़ापा। अ—2

जरत रिस भारी—प्रचंड क्रोध से जलती हुई कैकेई। अ—31

जरत बिभीषन राखेउ—जलते हुये विभीषण को बचा लिया। सुं—49

जरनि—जलन। अ—4

जरहि—ईर्ष्या करते हैं। बा—4

जरहि—जल रहे हैं। अ—51

जरा—पुराना बुढ़ापा। बा—164
जरि—भस्म होकर। बा—87
जरि—जड़। अ—17
जरित—जड़े हुये। बा—356
जल्पक—बकवास करने वाला। लं—33
जल्पत—डींग मारते हुये। लं—72
जल्पहिं—बकते हैं। बा—115
जल कुक्कुट—जलमुर्गे। अ—40
जलचर—जल में रहने वाले प्राणी। बा—3
जलचरकेतू—कामदेव, मकरध्वज। बा—125
जलचरगन—जल जन्तुओं का समुदाय। अ—51
जलज—कमल। बा—5
जलजाता—कमल। बा—17
जलजान—जलयान, जहाज, पोत। बा—28
जलजाभ—कमल के समान वर्ण वाले। बा—233
जलजारुन—लाल कमल के समान रक्त वर्ण। लं—111
जलठाउं—जलाशय, तालाब। अ—136जल
जलद—बादल। बा—7
जलदाता—पानी देने वाला। बा—174
जलधर—बादल। बा—32
जलधि—सागर। बा—5
जलनाथ—समुद्र। लं—37
जलनिधि—समुद्र। बा—96
जलभरिता सो—अथाह जल से परिपूर्ण है। बा—39
जलमल—जल का कीचड़। बा—41
जलरासि—समुद्र। अ—257
जलरुह—कमल अ—159
जलसीकर—जल की बूँदें। उ—52
जलाश्रय—नदी, बावली, कुन्ड आदि। अ—312
जवकर कीट—जौ का कीड़ा, घुन सुं—53
जवनि—जिस। बा—137
जवास—जवासा। अ—54
जस—यश, बड़ाई। बा—2
जस काछिय—जैसा स्वांग करें। अ—127
जसि—जैसा। बा—178
जसोमति—यशोदा जी। बा—20
जहाँ जे—जगत में, जहाँ तक। अ—78
जहाना—जहान, संसार। बा—3
जहिया—जब। बा—139
जाइ न जोई—देखी नहीं जाती। अ—34
जाइहि—जायेगा। अ—36
जाई—जाकर। अ—38
जाए—पैदा किये हुये। (पुत्र) बा—216
जाएहु—जाना। अ—53
जाका—जिनका। बा—17
जाग—यज्ञ। बा—60
जागति—जगा रही हो। अ—36
जगबलिक—याज्ञवल्क्य मुनि। बा—30
जाचक—माँगने वाले भिक्षुक। बा—102
जाचकन्हि—भिखमंगो को। बा—326
जाचन—कुछ माँगने, परीक्षा लेने बा—207

जाचा—माँगी थी। बा—49
जाड़—ठंडक। बा—39
जातकरम—दस संस्कारों में से चौथा संस्कार। बा—193
जात न जानिअ—पता ही नहीं चला। बा—197
जातना—यातना, दुःख। अ—146
जातरूप—सोना, धतूरा। उ—27
जातहिं—पहुँचते ही। बा—39
जाता—पैदा हुआ। बा—180
जाती—जाति। बा—37
जातुधान—राक्षस। बा—171
जातुधानपति—राक्षसों के स्वामी रावण। बा—178
जाते—जिससे। अ—95
जान—यान, सवारी, विमान। बा—61
जान—सवारी। (सूर्यरथ) बा—299
जान—सुजान। बा—336
जानकिहि—जानकी को। अ—60
जानकी—सीता जी। बा—18
जानपनी—समझदारी। उ—102
जानब—समझिये, जान लीजिये। बा—3
जानसिरोमनि—ज्ञान शिरोमणि बा—28
जाना—सवारी, गाड़ियों में। बा—101
जानामि—जानता हूँ। उ—108
जानि न जाइ—कुछ जाना नहीं जाता। अ—59/सुं—43
जानि बड़ि माता—माता को (पिता से) बड़ी जानकर। अ—56
जानिबे—समझियेगा। बा—326
जानिहहिं—समझ लेंगे। बा—12
जानु—घुटना। बा—199
जानु पानि—घुटनों और हाथों के बल। उ—79
जानु पानि विचरनि—घुटनों या हाथों के बल चलना या दौड़ना। बा—199
जाने ते—जान लिये जाने पर। उ—122
जापर—जिसके ऊपर। बा—196
जाब—पहुँचना। बा—167
जाम जुग—दोपहर, दो घड़ी। बा—172
जामा—याम, चारों प्रहर (रातके) सुं—8
जामा—उग सका है। उ—90
जामाता—दामादों से। बा—341
जामिनि—यामिनी, रात्रि। बा—330
जामु—एक प्रहर दिन, घड़ी, याम। बा—217
जायँ—व्यर्थ। अ—263
जायहु—पैदा हुआ। लं—21
जाया—जन्मा, पैदा हुआ। बा—128
ज्याये—पालपोष कर बड़ा किया था। बा—338
जारै जोगु—जलाने के योग्य (लिये ही) अ—16
जावक—महावर। बा—327
जाहिं दिवस—दिन बीतते जाते हैं। बा—359
जाहीं—बीत जाते हैं। बा—330
जाहु—जाओ। अ—38
जाहू—जिनके। बा—331
जिअत—जीते जी। अ—21
जिअत धरहु—जीवित ही पकड़ लो। अर—18
जिअन मूरि—संजीवनी जड़ी। अ—59

जिअहु—जिये। अ—5

जिआवत जाही—जिसको जिन्दा रख रहा है। अ—21

जिआवनि—जिलाने वाली। बा—145

जिआवसि—जीवित रख रहा है, जिला रहा है, जिलावे। बा—59

जिइहहिं—जीते रहेंगे। अ—100

जिइहि—जीवित रह सकेंगे। अ—49

जिऔं—जीता रहूँ। अ—36

जिति—जीत कर। बा—175

जिन्ह—जिन पर। बा—327

जिनस—वर्ग, प्रकार। बा—93

जिनस—जाति, वर्ग, प्रकार। लं—118

जिभि—जैसे। बा—3

जियँ—हृदय, जीव। बा—9/अ—263

जी की—जीवन के लिये। अ—317

जीतहु मनहि सुनिअ अस—"जीतो" शब्द केवल मन को जीतने के लिये ही सुनाई पड़ता है। उ—22

जीन जराव—जड़ाऊ जीन। बा—316

जीव—जीवन। बा—159

जीव जत—सांसारिक प्राणी। बा—7

जीव जतन के—जीव के साधन के लिये। अ—316

जीवन—जीने की। अ—51

जीवन चाही—जीने की अपेक्षा (जीने की आकांक्षा करने से)। अ—21

जीवनदाता—जीवन देने वाला। बा—7

जीवननाथू—पति श्रीराम (प्राणनाथ)। अ—58

जीवन मुकुति—जीवन की मुक्ति, मोक्ष। बा—31

जीवनि—संजीवनी। आ—317

जीह—जीभ। बा—20

जुआरा—जुआरी। बा—184

जुग—युगल, दोनों। बा—4

जुग अंगुल कर बीच—दो ही अंगुल का बीच (दूरी)। उ—79

जुगजामिक—दो पहरेदार। अ—316

जुगल—दोनों। बा—15

जुग विधि ज्वर—दो प्रकार के ज्वर। उ—121

जुगुति—युक्ति से। बा—11

जुझाऊ—लड़ाई का। अ—192

जुझारा—युद्ध हेतु कटिबद्ध। बा—154

जुटत—भिड़ते हैं। लं—49

जुठारी—जूठा कर दिया। बा—230

जुड़ाई—जूड़ी, ठंडक। बा—39

जुड़ाने—शीतल हो गये। बा—132

जुड़ावहिं—शीतल करती है। बा—295

जुड़ावैं—ठंडा करे। उ—117

जुत—यक्त, सहित। बा—77

जुरइ—प्राप्त होवे। बा—8

जुरन—एकत्रित। बा—299

जुरहिं जुझारा—वीर जुट जायँ। अ—199

जुरिहि—जुड़ सकता। बा—278

जुरे—इकट्ठा हुए। बा—41

जुवती—युवती, नौजवान स्त्रियाँ। बा—220

जुवराज—युवराज (राजा के बाद उत्तराधिकारी)। अ—1

जुवराज—युवराज अंगद। लं—17

जुवा—युवा, जवान। बा—99

जुवान—युवक, जवान। बा—240

जुवानू—नवयुवक। अ—302

जूझा—युद्ध करना होगा । लं—8

जूझे—सभी युद्ध में मारे गये (पूर्णतः अनत हो गया)। बा—175

जूथप—यूथप, सेनापति । सुं—34

जूथा—दलों, यूथ, समूह । बा—181

जून—जीर्ण, पुराना । बा—272

जूरी—जूड़ियों को (अंटियों को) जोड़े (दोनों सहित)। अ—250

जूह—समूह । लं—66

जेंई—भोजन करती थी। बा—19

जेऊ—जो लोग। (वेषधारी धूर्त)। बा—7

जेठ—ज्येष्ठ, बड़ा। बा—153

जेतनेहि काज—जितने की आवश्यकता होती है। (केवल आवश्यकतानुसार ही) उ—23

जेता—जितना। बा—323

जेते—जितने भी। बा—55

जेवँत—भोजन करते समय। बा—99

जेवन लागे—भोजन करने लगे। बा—329

जेवनारा—भोजन करने वालों की (बारातियों की)। बा—99

जेवाँए—भोजन कराया। बा—336

जेहि—जिस (लग्न) को। अ—52

जेहि के—जिस के । अ—122

जेहि जस जोग—योग्यतानुसार, जिसके योग्य जैसा भी। बा—179

जेहि तेही—जैसे भी वैसे ही सभी देवताओं को। बा—257

जेही—जिसको। बा—52

जैहसि—नष्ट हो जायेगा। बा—174

जोइ—देखना चाहिए। अ—92

जोइ जोई—जो जो। बा—151

जोइहि—देखेगी। अ—68

जोई—भी, वही। बा—312

जोऊ—जो भी। बा—10

जोग—योग्य। बा—9

जोग—योग, तप। बा—17

जोग उपहासी—हँसी के पात्र। बा—251

जोगवत रह—जोहता रहे, ध्यान रक्खे। बा—352

जोगवत रहऊँ—रखवाली करती रही हूँ। बा—59

जोगवहिं—सार सँभाल करते थे।अ—91

जोगानल—योगाग्नि। बा—98

जोगि—योगिनी। बा—93

जोगि जन—योगी गण। बा—105

जोगी—योगी। बा—341

जोगीन्द्र—योगिराज। बा—327

जोगीस—योगीश्वर। बा—85

जोगू—योग्य। अ—60

जोजन—योजन (एक योजन चार कोस का होता है)। बा—159

जोटा—जोड़े। बा—221

जोती—ज्योति। बा—1

जोनि–योनि, उत्पन्न करने वाली। अ–24

जोरिअ–जुड़वा दिया जाय। बा–278

जोरी–जोड़कर, जोड़ी। बा–34

जोवन ज्वर–जवानी का नशा। उ–71

जोवा–देखा। बा–356

जोषिता–स्त्री (पत्नी) बा–110

जोसि सोसि–जो कुछ भी हो, जो हो, वह हो। बा–161

जोहारन–जोहार करने को, प्रणाम करने को। बा–358

जोहारि–वन्दना करके, प्रणाम करके। बा–351

जोहारू–वन्दना। अ–89

जोहारे–वन्दना की, प्रणाम किया। बा–348

जोही–देखकर। अ–67

जोहे–देखा। बा–317

जौ जनतेऊँ–यदि यह ज्ञात होता। बा–252/लं–61

जौं पै–यदि यह। बा–277

जौं पै–यदि निश्चय ही। अ–74

जौं सबके–यदि सभी जीवों को। उ–78

जौंलगि–जब तक। बा–86

जौवनु–जवानी। अ–174

–झ–

झइँ आई–चक्कर आ जाने से। अ–164

झगुलिआ–झबुला, झगुली, नन्हें बालक का वस्त्र। बा–199

झटिति–तुरन्त। लं–92

झपटेउ–आक्रमण किया हो। अ–29

झरि–झड़ी लग गई। बा–324

झरोखा–खिड़की। उ–118

झरोखन्हि लागीं–खिड़कियो से सटी खड़ी होकर। बा–220

झलका झलकत–छाले चमकते हैं। अ–204

झलकाहीं–चमक रहे हैं। बा–243

झष–मछली। सुं–50

झषकेतू–कामदेव (मछली के चिन्ह युक्त ध्वजा वाला)। बा–83

झाँई–छाया। लं–12

झाँखा–झीख रहे हैं। अ–30

झाँपेउ भानु–सूर्य को ढक लिया। बा–117

झारी–समूह। बा–184

झीनि–महीन (पतले कपड़े की) उ–77

झोठिंग कराला–भयंकर झोंटों (केशों) वाले। लं–88

–ट–

टकोर–टङ्कार। अर–19

टरइ–टलती है, मिटता है। बा–97

टरइ न टारा–हिलाने से हिल भी नहीं रहा। बा–251

टरई–टलने पावे। अ–22

टर्‌यो न टार्‌यो–टाले नहीं टला। लं–65

टहल—सेवा। उ—18
टारन—मेटने हेतु, हटाने। बा—17
टारि न सकहिं—नहीं मिटा सकते हैं। बा—239
टारी—टाल दिया। बा—357
टारेउ—भंगकर, तोड़ कर। बा—123
टिट्टिभ खग—टिटिहरी पक्षी। लं—40
टीका—राज तिलक, शिरोमणि। अ—5/175/180
टेई—टेया, धार तेज किया। अ—22
टेक जो टेकी—जो निश्चय कर दिया। अ—255
टेका—आधार। उ—45
टेकी—पकड़कर, निश्चय कर लिया। बा—45/अ—255
टेरे—बुलाये, पुकारे। बा—93
टोलू—दल। अ—192

—ठ—

ठकुरसोहाती—मुँह देखी। अ—16
ठगि रहहीं—स्तंभित हो रहते हैं। उ—9
ठट्टा—समूह। लं—41
ठटुकि—ठिठक कर, स्तब्ध होकर। सुं—45
ठयऊ—ठान लिया है, चाहा। बा—133
ठवनि—ऐंड़, खड़े होने की शान। बा—243
ठाऊँ—स्थान (ध्रुव लोक)। बा—26
ठाटु धरि ठाटा—सुव्यवस्था को नाश कर दिया। अ—47
ठाढ़ भे—खड़े रहे। बा—360
ठाटहु ठाटा—साज सजा लो। अ—190
ठाढ़े रहे—खड़े रहे। बा—145
ठाना—ठान लिया, निश्चय कर लिया। बा—259
ठानि—निश्चय करके, विचार कर। बा—86
ठाँव ठाँव राखे—जगह—जगह नियुक्त कर दिया। अ—90
ठाहर ठाटू—ठहरने की व्यवस्था। अ—133
ठोरी—पास में, स्थान पर। बा—265

—ड—

डगइ न—हिल नहीं रहा। बा—251
डगमगानि—हिल गई। बा—254
डगमगाहिं—विचलित होकर। सुं—35
डगि डोलहिं—डगमगा रहे हैं। अ—225
डमरुआ—गाँठ का रोग। उ—121
डरपसि—डरना। अ—53
डरपहिं—डर जाते हैं। अ—63
डरपहु—डरो। बा—187
डरपे—भयभीत हो गये। बा—87
डरहीं—डरते थे। बा—206
डसाई—बिछा दी। अ—89
डसाये—बिछवाये हैं। बा—356
डहकि डहकि—जल जल कर के। बा—137
डाकिनि—खा डालने वाली डाइन। अ—132

डाटेहि पइ—डाँटने पर ही। सुं—58
डाढ़ा—छौंक, तेजी। लं—72
डाबर—तलैया, छोटी गड़हिया। अ—60
डारि—फेंक कर। अ—47
डारिहउँ—डालूँगा, फेंकूँगा। बा—129
डारे—पड़े हुये। बा—270
डासि—बिछा कर। बा—106
डिंडिमी—डफली। बा—344
डीठा—देखा है। अ—98
डीठी—दृष्टि। बा—231
डेराऊँ—डरती हूँ। अ—17
डेराती—डर जाती हैं। अ—60
डेरावहिं—डराते हैं। लं—44
डेराही—डर जाते हैं। बा—125/278
डोरिआये—(विना सवार के घोड़े) बाग डोर से बँधे हुये चले जा रहे हैं। अ—203
डोल—पानी भरने वाला (चन्द्रमा मंडल रूपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों)। बा—258
डोला—चंचल हो उठा। अर—28
डोलावा—हिला दिया। उ—71
डोली—बदल गई। बा—192
डोले—काँप गये। बा—254

—ढ—

ढँढोरी—खोज डाला। बा—349
ढनमनी—लुढक पड़ी। सुं—4
ढरहीं—डुला रहे हैं। बा—350
ढहावहिं—फेंकते हैं, चलाते हैं। लं—41
ढाँकी—ढककर। अ—117
ढाबर—गँदला पानी। कि—14
ढारइ—ढरका रही हैं। अ—13
ढारी—ढाला हुआ। बा—224
ढाहत—गिराती हुई। अ—34
ढिग—पास, निकट। सुं—46
ढिठाई—धृष्टता। बा—8/150
ढेकमहोख—दोनों ही पक्षी होते हैं। अर—38
ढेरी—राशि। अ—114
ढोटा—पुत्र। बा—221
ढोलू—ढोल, ताड़ित करना (पीटा जाना ही उसकी नियति, मर्यादा है) अ—192

—त—

त—तो। अ—71
तकितकि—निशाना साध—साधकर। बा—157
तके—की ओर चल दिये। बा—182
तग्य—तत्त्वज्ञानी। लं—74
तजहिं—छोड़ते हैं। बा—39
तजा—त्याग दिये हैं। अ—60
तजि—त्यागकर। बा—7
तजे तनु—शरीरान्त पर। बा—35
तड़ागा—तालाब, सरोवर। बा—37
तड़ित—बिजली, विद्युत। बा—147
तड़ित पटल—बिजली के समूह। लं—103
तत्त्व—ब्रह्म ज्ञान। बा—44

ततकाला–तुरन्त। बा–3

तदपि–फिर भी, तथापि। बा–13

तन अरधभवानी–पार्वती जी आधे शरीर वाली, अर्धनारीश्वर। बा–247

तन खीना–दुर्बल क्षीण शरीर। बा–93

तन तायै–शरीर संतप्त है। अ–226

तनय–पुत्र। बा–88

तनया–पुत्री। बा–231

तनु–शरीर। बा–2

तनुजा–पुत्री। बा–178

तनुधारी–शरीर धारण किये हुये। बा–130

तनोरुह–रोम रोम। उ–5

तपइ–जलने लगा है। बा–58

तपत–खौलता हुआ। सुं–15

तप पुंज–तपस्या की राशि, तपस्विनी (अहल्या) बा–211

तपबल–तपस्या के बल से ही। बा–73

तपसालि–तपस्वी श्रेष्ठ। बा–330

तपोधन–तपस्वी, तप ही है धन जिसका। बा–105

तम–अन्धेरा। बा–1

तमकि–क्रोधित होकर, किटकिटाकर। बा–250

तमपारा–अन्धकार (माया) से परे। उ–94

तममोह–अज्ञान रूपी अन्धकार। उ–117

तमारि–सूर्य। अ–86

तमाला–तेजपत्ता का पेड़। बा–209

तमी–रात। सुं–47

तमीचर–निशाचर। लं–74

तमेकमदभुतं प्रभुं–उस अद्वितीय मायिक जगत से विलक्षण सर्व समर्थ प्रभु को। अर–4

तरंगिनि–नदी। बा–31

तरंगी–मौजी, लहरी, मतवाले। बा–93

तर–तल, नीचे। बा–106

तरक–तर्क,युक्ति। अ–222

तरकस–तूणीर, बाण रखने का स्थान। अ–190

तरकि–तर्क, विवाद, बहस। बा–341

तरकि–उछलकर। लं–32

तरकी–सीमा। अ–289

तरकेउ–उछले। सुं–1

तर्जन–डराने वाले। अर–11

तर्जा–धमकाया। कि–8

तरजनी–हाथ की दूसरी उँगली। बा–273

तरति कति बारा–पार करने में कितनी देर लगेगी। लं–1

तरनिउ–नाव भी। अ–100

तरनिहि –(मध्यान्ह) सूर्य को। अ–232

तरनिहु ते–सूर्य से भी बढ़कर। अ–65

तरनी–नौका, जहाज, सूर्य। बा–31

तरल–चंचल, द्रव, चमकता। लं–41

तरहीं–तर जाते हैं। बा–119

तरिअ–पार किया जाय। सुं–50

तरिहि–पार उतर जायेगी। सुं–50

तरी–उद्धार हो गया। बा–223

तरुतर—पेड़ के नीचे। बा—29

तरुतालू—ताड़ के पेड़ को। अ—29

तरुन—जवान, पूर्ण खिले हुये (कमल)। बा—1

तरुनी—युवा स्त्री। बा—11

तरुपल्लव—पेड़ों के पत्ते, पत्तों में। अ—67/सुं—9

तरुसाखा—पेड़ की डालें। बा—85

तरे—तैर गये। लं—3

तरेरी—तिरछी करके, तरेरकर। लं—22

तर्क—शंका। लं—74

तर्कि—निर्णय। लं—74

तलफत—तड़फती हुई। अ—154

तलाब तलाई—ताल—तलैया। बा—85 अ—67/सुं—9

त्वदंघ्रिमूल —आपके चरण कमलों का (सेवन करते हैं)। अर—4

तवानन—तव+आनन =तवानन = आपका मुख। लं—111

तसि—वैसी ही। बा—294

तहँइ—वहीं। अ—74

तहँवा—वहाँ (पूजा स्थल), तहां। बा—201

तहँहु—वहाँ भी (सर्वज्ञ भगवान राम के सामने)। बा—53

तहिआ—तब। बा—139

तही—तू ही। लं—21

तहूँ—तू भी। बा—282

ताकर—उनका (आपके दूसरे पुत्र का)। बा—197

ताका—चाहा है। अ—21

ताकि—ताककर, लक्ष्यकर (निशाना बनाकर) बा—87

ताकिसि—देखा, शरण ली। अर—26

ताके—देखते, उसके। अ—25

ताकेउ—लक्ष्य किया। बा—259

ताग—तागा, डोरा। बा—11

ताजी—अरबी घोड़े। अर—38

ताटंका—(मंदोदरी के) कर्णफूल। लं—13

ताड़त—मारता हुआ। अर—34

तात—हे पुत्र । बा—47

तात—गरम। अ—67

तात बाउ—गरम हवा। अ—200

तातप्यमानं—जलते हुये। उ—108

ताते—इस कारण से। बा—222

ताते—तपाने वाले। अ—65

ताने—खींचा, तान लिया है। बा—87

तापस—तपस्वी (गौतम)। बा—24

तामरसु—कमल। अ—71

तामस—तमोगुणी, क्रोधी । बा—122

तारक—तारकासुर नामक एक राक्षस। बा—103

तारी—उद्धार किया। बा—24

तारे—पुतलियाँ। बा—244

ताल—तालाब। बा—38

ताल—ताड़ । अर—38

ताल—झील (पंपा सरोवर)। अर—40

ताल—ताल के वृक्ष, करताल। कि—7

तावत—तब तक। उ—108

तासु—उन्हीं के। बा—105

ताहि न बोला—उसको नहीं बुलाया। उ—17

ताहि पहिं—उसके पास। बा—159
ताही—उसको (राम कथा को)। बा—10
ताहू—उसने भी। बा—194
तिजारी—तीन प्रकार की प्रबल इच्छायें (पुत्र, धन और मान की) उ—121
तिन्ह—वे। बा—5
तिन्ह मँह—उनके। बा—12
तिन्हहिं—उनको (जनकपुर वालों को) बा—313
तिन तूरी—तृण तोड़कर (प्रतिज्ञा करके) अ—324
तिन तोरही—तिनके तोड़ रही हैं। (बलैया ले रही हैं) बा—327
तिपुरारि—त्रिपुरारि, शिवजी। अ—273
तिभुवन—त्रिभुवन, तीनों भुवनों में (पृथ्वी, आकाश, पाताल)। अ—2
तिमि—उसी प्रकार से। बा—125
तिमि तिमि—त्यों—त्यों, उसी प्रकार से। बा—162
तिमिर—अँधेरा । बा—116
तिमुहानी—(सरयू—सोनभद्र—गंगाजी) का संगम। बा—40
तिय—स्त्री। बा—19
तियहिं—स्त्री को। अ—65
तिय माया ठानी—त्रिया चरित्र फैलाया। अ—21
तिरा—तैर गया। अ—251
तिरीछे—तिरछा करके। अ—117
तिलक तेहि सारा—राज तिलक कर दिया। सुं—49
तिलु भरि—तनिक भी। बा—252
तिष्ठइ नहि—ठहर नहीं सकता। सुं—38
तिहु पगहु ते—तीन पग से भी। अ—101
तिहु पुर—तीनों लोकों को। बा—292
तिहु लोका—तीनों लोक (आकाश, पताल, मृत्यु लोक) बा—27
ती को—पार्वती जी को। बा—19
तीजे—तीसरे । बा—169
तीछे—तीक्ष्ण । अ—143
तीनि काल—भूत—भविष्यत्—वर्तमान। बा—27
तीर तरु—नदी किनारे के वृक्ष । लं—87
तीर तीर—आस—पास के । बा—40
तीरथपतिहि—प्रयाग को । बा—44
तीरथराजू—तीर्थों का राजा। बा—2
तुअ—तेरे । बा—165
तुंग तमाल ही—ऊँचे तमाल वृक्ष के लिये। लं—101
तुम्यं—आप को, आपके लिये । उ—108
तुम्हरे—तुम्हारे कारण। अ—75
तुरग—घोड़ा। बा—158
तुराई—तोषक, अत्यन्त सुन्दर गद्दे तकिये। अ—66/91
तुरीयं—तीनों गुणों से अतीत (वाणी, ज्ञान और इन्द्रियों से परे)। उ—108
तुरीयमेव—तीनों गुणों से सर्वथा परे, जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति से परे । अर—4
तुलसी—तुलसी की भाँति पवित्र। बा—26

तुलसीक—तुलसी दास का भी। बा—29

तुलसीस—हे तुलसी के स्वामी। बा—336

तुला—तराजू। सुं—4

तुषाराद्रि—हिमालय के। उ—108

तुसारू—तुषार, पाला। बा—16

तुहिन—पाला। अ—71

तुहिनाचल—हिमांचल। बा—94

तुहूँ—तू स्वयँ भी। अ—32

तून—तूणीर, तरकस। बा—268

तूनीर—तरकस। बा—244

तूल—रुई। अ—12

तृन—तृण, तिनका, घास। बा—16

तृनु—नाता, रिश्ता, संबन्ध। अ—70

तृप्ति—संतुष्टि। बा—148

तृपितिहित—तृप्ति के लिये। उ—119

तृषित—प्यासा। बा—43

तेइ तृन हरित—उन्ही (धर्माचार रूपी) हरे तृणों को (घास को)। उ—117

तेई—वे ही। अ—231

तेऊ—वे भी। बा—7/अ—228

तेतिदीन—(ते+अति+दीन)। वे अत्यन्त दुःखी होकर। लं—85

तेते—उतने ही। ब—55

तेपि—वे भी। बा—85

तेरहुतराजू—जनक जी। अ—278

तेरहुति—तिरहुति को (जनक जी का राज्य)। बा—289

तेहि कारन—इसी कारण से। बा—65

तेहि काला—उसी समय। बा—60

तेहि केरी—उस (माया) की। बा—129

तेहि जड़—उस मूर्ख (ब्रह्मा) ने। बा—96

तेही—उसको। बा—4

तेषां—उन पर। उ—108

तैं—तूने तो। बा—174

तैसिअ—उसी प्रकार से। अ—65

तैसी—वैसी, उस प्रकार से। बा—11

तैसेहि—उसी प्रकार से। बा—11

तोतरि बाता—तोतली बोली। बा—8

तोतरे बोला—तुतलाकर बोलते थे। बा—199

तोप्यो—ढक दिया। लं—93

तोमर—एक अस्त्र, एक छंद, राजपूतों का एक वंश। लं—40

तोय—जल। अ—309

तोयनिधि—समुद्र। लं—5

तोरन—बंदनवार। बा—94

तोरव—तोड़ेंगे। बा—245

तोरा—आपका। बा—132

तोरा—तोड़ दिया। बा—357

तोराइ—तुड़ाकर। अ—75/कि—14

तोरावति—तेज। अ—276

तोरिबे लायक—तोड़ने में समर्थ हूँ। लं—34

तोरे—तोड़े। अ—70

तोरेहु—तोड़ने पर भी। बा—245

तोष—तृप्ति, संतोष। बा—20

तोषक—संतुष्ट करने वाले के भी। बा—43

तोषनिहारा—संतुष्ट करने वाला। अ—41

तोषेउ—प्रसन्न हुए। बा—77

तोहारा—आपका। बा—282
तोही—तुम्हें, तेरे लिये। बा—149
त्याग सकि नारिहि—(वही) स्त्री को त्याग सकते हैं। उ0—115
त्रय ताप—तीनों ताप (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक। बा—39
त्रय रेखा—तीन रेखायें (त्रिवली) पेट पर पड़ने वाले तीन बल। बा—199
त्रयःशूल—तीनों प्रकार के दुःख। उ—108
त्रसित—भयभीत होकर। बा—174
त्राता—रक्षक। बा—20
त्रातु—रक्षा करें। अर—11
त्रास—भय। बा—63
त्रासइ—दुःख देता था। बा—183
त्रासक—डराने वाली, कष्टदायक। बा—40
त्राहि त्राहि—रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये,। अर—2
त्रिकालज्ञ—तीनों काल की बात जानने वाले। बा—66
त्रिकालदरसी—तीनो काल के ज्ञाता। अ—125
त्रिकूट—पर्वत, टीला। बा—178
त्रिजग—पशु—पक्षी आदि (तिर्यक) उ—87
त्रिजग जोनि—तिर्यक योनियाँ (पशु—पक्षी आदि में। उ—107
त्रिपुंड—तिलक। बा—268
त्रिपुर—एक दैत्य हुआ है, जिसे शिवजी ने मारा था। बा—57
त्रिपुर आराती—त्रिपुर के शत्रु शिवजी। बा—57
त्रिपुरारि—त्रिपुर+अरि=शिवजी। बा—46
त्रिभुवन—तीनों लोक। बा—111
त्रिभुवन पति कर जान—विष्णु भगवान के वाहन (गरुड़ जी)। उ—62
त्रिय—स्त्रियाँ। बा—67
त्रिविक्रम—वामन रूप (भगवान विष्णु) कि—29
त्रिविध—तीन प्रकार के। बा—35
त्रिविध—तीन प्रकार की सृष्टि। बा—186
त्रिविध ताप—तीन प्रकार के ताप (दैहिक—दैविक—भौतिक)। बा—40
त्रिविध बयारी—शीतल—मंद—सुगन्ध। (तीन प्रकार की सुखद वायु) बा—303
त्रिवेनी—संगम (गंगा—यमुना—सरस्वती)। बा—44
त्रिसिरारि—श्री राम जी। (त्रिसिरा+अरि) त्रिसिारा के शत्रु (मारने वाले)। कि—30
त्रैलोका—तीनों लोक (आकाश+पाताल+मृत्यु लोक) बा—87
त्रोन—त्रोण, तरकस, तूणीर। लं—71
त्वदंघ्रिमूल—आपके चरण कमलों का (सेवन करते हैं)। अ—4

—थ—

थकि लोचन—नेत्र थकित (स्तंभित) हो रहे, स्थिर दृष्टि। बा—269

थपित प्रधाना—प्रधान थवई (विश्वकर्मा)। अ—133

थल—स्थान पर, पृथ्वी। बा—240

थलचर—पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी। बा—3

थल तीरथ सकल—सभी तीर्थ स्थान। अ—312

थलहिं—डेरे पर। अ—284

थलहिं की नाईं—जमीन की तरह ही। बा—299

थाका—थक गया था। लं—92

थाकेउ—रोक दिया। बा—195

थाती—धरोहर हैं। अ—22

थापना—स्थापना। लं—2

थापहिं—स्थापित (मर्यादित) करते हैं, रक्षा करते हैं। बा—121

थापि—स्थापना करके। लं—2

थापिय—प्रतिष्ठा बढ़ाइये। अ—88

थापेउँ—स्थापना की। लं—119

थार—थाल। बा—96

थाह—गहराई, गन्तव्य। बा—263

थिति—ठहराने के लिये। अ—227

थिर—स्थिर, एकाग्र। बा—82

थिराना—स्थिर हो गया। बा—36

थीरा—स्थिर। उ—90

थोरिउ—तनिक भी। अ—12

थोरिहि—थोड़ी सी। अ—42

थोरी—थोड़ी, कम। बा—325

थोरे मँह—थोड़े में ही। बा—12

थोरेहि मँह—थोड़े में ही। अर—15

—द—

दंड—घड़ी, लाठी। बा—85

दंडकवन—दण्डकारण्य। बा—24

दंड चारि—चार घड़ी। अ—202

दंड जतिन्हकर- केवल सन्यासियों के हाथ में। उ—22

दंडवत—प्रणाम। बा—145

दंतकथा—कोरी कल्पना। लं—111

दंपतिहि—पति—पत्नी दोनों (हिमांचल और मैना)। बा—68

दंभ—अभिमान, झूठा, आडम्बर। बा—32

द्वन्द्वघनं—द्वन्द्व समहों को (जन्म—मरण,राग—द्वेषादि,सुख—दुःख)। उ—14

दंस—डाँस। कि—17

दच्छ—चतुर, दक्ष। उ—49

दच्छ—दक्ष प्रजापति (सती के पिता)। बा—62

दच्छ कुमारी—सती। बा—48

दच्छसुता—दक्ष प्रजापति की पुत्री सती। बा—52

दच्छिन आसा—दक्षिण (यमपुरी) की दिशा को। लं—12

दधि—दही। बा—203

दधिकुंड—दही के कूँड़े। लं—44

दधिमुख—एक वानर का नाम। सुं—54

दनुज—राक्षस, दुष्ट। बा—82

दनुजारी—भगवान विष्णु। बा—136

दम—इन्द्रिय निग्रह। बा—37
दमंका—चमक रही हैं। लं—13
दमकहि—चमक रही हो। बा—347
दमकेउ—चमका। बा—261
दमसीला—इन्द्रियों का दमन करने वाले। उ—22
दयानिधि—भगवान राम। बा—28
दर्पा—गर्वित हुआ। लं—67
दर्भ—कुशा। कि—26
दरस—दर्शन। बा—35
दल—समूह, परिवार, सेवा। बा—178
दल—पत्ते। अ—23
दलइ—नष्ट करता है। बा—24/अ—230
दलकि उठेउ—फटने लगा। अ—27
दलन—नष्ट करने वाला। बा—1
दलमलि—कुचल कर और मसल कर। लं—45
दलि—रौंद कर। बा—4
दलित दसन—दाँत टूट गये। अ—163
दव—दावानल, जंगल में आग। अ—73
दवन—विषाद का दमन करने वाला। सुं—51
दव लाइअ—दावाग्नि लगा दी जाय। उ—78
दवारि—दावानल, बन में आग लगी। बा—32
दसकंठ—रावण। सुं—23
दसकंध—रावण। लं—16
दसगात विधाना—दसवाँ संस्कार (मृत्यु के दसवें दिन किया जाने वाला संस्कार)। अ—170
दसन—दाँत। बा—156
दसनन्हि मँह—दाँतों के बीच। सुं—7
दसमुख—रावण। बा—179
दसमौलि—रावण। लं—23
दससीसा—रावण। बा—49
दसानन—रावण। बा—179
दसि—काटकर। लं—31
दहइ—जली जाती है। बा—280
दहन—नष्ट करने वाला। बा—1
दहन—भस्म हो जाने का। बा—91
दहहीं—भस्म हो जाते हैं। बा—179
दहे—भस्म कर दिया। उ—13
दहेऊ—जल गया। बा—63
दाइज—दहेज। बा—326
दागे—जले हुये। अ—184
दाड़िम—अनार। अर—30
दाढ़े—जल रहे हैं। अ—80
दातार—देने वाले। बा—303
दादु—दाद। उ—121
दादुर—मेढक। बा—9
दानव—राक्षस। बा—9
दानि—देने वाला। बा—113
दापा—घमंड। बा—256
दाम—झालर माला। बा—288
दामिनि—बिजली। बा—235
दामिनी विलासा—बिजली चमक रही है। लं—13
दायक—देने वालों को भी। बा—25
दार—दारा, स्त्री। उ—39
दारन—विदीर्ण करने के लिये। लं—111
दारय—नष्ट कीजिये। उ—35
दारिका—लड़कियाँ। बा—326

दारु–लकड़ी। बा–10
दारुगत्त–लकड़ी के अन्दर। बा–23
दारुन–कठिन। बा–5
दारुनारि–कठपुतली। बा–105
दारिद–दरिद्रता के, गरीबी के। बा–32
दावन–नष्ट करने वाला। बा–35
दावनी–नष्ट करने वाली। उ–15
दास–सेवक। बा–101
दासन्ह–भक्तों को। बा–203
दासी–सेविकायें। बा–101
दाहक–जलाने वाली। अ–64
दाहा–जलन। बा–54
दाहिन–दायें, अनुकुल। अ–280
दाहु–भस्म कर दिया, जलना। बा–161
दिआ–दीपक। आ–116
दिगंचल–पलकें। बा–230
दिगंबर–दिशायें ही है वस्त्र जिसका, नग्न। बा–79
दिग्गज–दिगपाल, दिशाओं के हाथी। सुं–35/बा–254
दिगपालन्ह–दिशाओं के स्वामी। बा–182
दिगसिंधुर–दिशाओं के हाथी। लं–79
दिच्छा देउँ–दीक्षा दूँ। लं–57
दितिसुत–दिति के पुत्रों (हिरण्याक्ष और हिरण कश्यप) को। लं–6
दिनकर–सूर्य। बा–187
दिनकर कर से–सूर्य किरणों के समान। बा–32
दिनकर ढरके–सूर्यास्त होने तक। अ–226
दिन दानी–सदा दान देने वाले। बा–15
दिन प्रति–नित्य ही। बा–155
दिनमनि–सूर्य। बा–196
दिनराऊ–सूर्य। बा–321
दिनेसा–सूर्य। बा–116
दिव्य–सुन्दर। बा–100
दिव्य दृष्टि–अनोखी छवि। बा–1
द्विजराजू–चन्द्रमा (श्री रामचन्द्रजी)। अ–294
द्विजश्रापा–ब्राह्मण के शाप द्वारा बा–166
द्विजामिष भोगी–ब्राह्मणों का मांस खाने वाले। लं–45
द्विविद–एक वानर का नाम (सुग्रीव की सेना में) सुं–54
दिसि–दिशा, ओर। बा–5
दिसि अरु विदिसि–दिशायें और उनके कोण आदि। अर–10
दिसिकुंजरहु–दिग्गजों। बा–260
दिसिनाथा–दिग्पाल। अ–173
दिसिप–दिग्पाल। लं–104
दिसिपति–दिग्पाल। बा–321
दिसिपाला–दिक्याला। अ–134
दिसित्राता–दिग्पाल। उ–81
दिसिभ्रम–दिशाभ्रम। उ–73
दिसिराज–दिग्पाल। बा–92
दीख–देखा। बा–136
दीखि–दिखाई पड़ी। अ–31
दीन्हि कुदाउ–बुरी तरह घात लगाया। अ–73
दीनता–निर्धनता। बा–43

दीन दयाल—श्री राम। बा–16

दीप दीप—देश विदेश, अनेक प्रदेशों से। बा–251

दीपसिखा—दीपक की बत्ती। बा–230

दीसा—देखा। बा–242

दुंदुभि—दुंदुभि नामक राक्षस। कि–7

दुंदुभी—नगाड़े। बा–89

दुआरा— द्वार पर। बा–194

दुइ दुइ दसन—दो दो दँतुलियाँ। उ–77

दुइ माथ केहि—दो सिर वाला। बा–84

दुऔ—दोनों। कि–4

दुकाल—दुर्भिक्ष। लं–70

दुकूल—वस्त्र। अ–65

दुखप्रद—कष्ट देने वाले। बा–5

दुख माना—असंतुष्ट हो गये। बा–62

दुखारे—दुखी। बा–82

दुःखौघ—दुःखों के समूह। उ–108

दुघरी—दुघड़िया मुहूर्त। अ–272

दुचित—दुतरफा चित्त वाले। अ–302

दुति—ज्योति। बा–106

दुतिकारी—प्रकाशमय। बा–147

दुनी—दुनिया में। उ–101

दुभाषी—दुभाषिया (दोनों ओर की बात समझाने वाला)। बा–21

दुरे—छिप गये, भाग गये। बा–239

दुर्वाद—दुर्वचन, गाली। सुं–20

दुर्ग—किला। सुं–3

दुर्ग दुरंत—दुर्गम और दुरंत। उ–91

दुर्गम—कठिन। बा–38

दुर्गा कोटि अमित—अनन्त कोटि दुर्गाओं के समान। उ–91

दुर्घट गढ़—दुर्गम किला। लं–49

दुर्मद—मद से चूर। लं–64

दुर्लभ—कठिन, अप्राप्य। बा–67

दुर्वचन—अपशब्द। बा–138

दुर्वा—दूब, घास। उ–3

दुरत—छिपते हैं। बा–325/157/अर–27

दुरतिक्रम—प्रबल, अनिवार्य। उ–94

दुरहिं—छिप जाती है। बा–347

दुराइ—छिपाकर। अ–85

दुराउ—छिपा हुआ (छिपाना)। बा–149

दुराधरष—जिन्हें पराजित करना अत्यन्त कठिन है। बा–86

दुराराध्य—कठिनता से प्राप्त होने वाले। बा–70

दुरावा—छिपा लिया। बा–2

दुरासा—कुचेष्ठा। बा–24

दुरित—पाप। बा–43

दुरे—छिप गए, भाग गए। बा–239

दुलहिनिन्ह—दुलहिनों (बहुओं) को। बा–348

दुलारइ—प्यार करती थी। बा–198

दुलारी—लाड़ प्यार किया, दुलार किया। बा–354

दुविध—द्विविधामयी स्थिति। अ–302

दुष्टतर्क—कुतर्क। उ–46

दुस्तर—कठिन। सुं–50

दुसह—कठिन। बा–42

दुहूँ—दोनों। बा–39

दुहूँ ते–दोनों से। बा–23

दूखा–दुःख। उ–2

दूजा–दूसरा, अन्य। बा–102

दूजे–दूसरे युग (त्रेता में)। बा–27

दूतिन्ह–दूतियों (महिला गुप्त चरियों या सेविकाओं से)। सुं–36

दूध कइ माखी–दूध की मक्खी (जैसे दूध की मक्खी को निकाल कर फेंक दिया जाता है वैसे ही दशा तुम्हारी होगी)। अ–19

दूध मुख–दुधमुँहे। बा–277

दूबरि–दुबला। अ–325

दूषणापहं–दोषों को नष्ट करने वाले हैं। अर–4

दूषन–दोष। बा–8

दूषन–राक्षस का नाम (दूषण)। बा–14

दूषन हा–दूषण राक्षस को मारने वाले तथा समस्त दोषों को हरने वाले। लं–111

दूषहिं–निन्दा करते हैं। उ–100

दृग–नेत्र। बा–1

दृढ़ाइ–पक्की करा के। अ–28

देइअ–देना चाहिये। अ–93

देइहि–देंगे। अ–63

देई–दे रहा है। बा–327

देउ–दे। अ–18

देखत बालक–देखने में बालक से लगते हैं। उ–32

देखब–देखूंगा। बा–206

देखनिहारे–देखने वाले। बा–256

देखरावा–दिखलाया। बा–201

देखावा–दिखाना चाहता है। अ–48

देखिअ–दिखाई देते हैं। अ–93

देत रहब–देते रहियेगा। बा–360

देब–देगी। अ–19

देव–देवता। बा–6

देवक–देवता। अर–10

देवधुनि–गंगाजी। बा–40

देवरिषि–नारज जी। बा–68

देवाइ–दिलवाकर। बा–294

देह–शरीर। बा–54

देहउँ काहा–क्या दूँगी। बा–54

देहरी–चौखट। बा–21

देहि अब पूरा–अब बस कर। लं–29

देही–देते हैं। अ–49

दैअ–देव, ईश्वर। अ–69

दैउ–ईश्वर, इष्ट। अ–18

दैवहिं–ब्रह्मा को, विधाता को। बा–175

दैविक–दैवी, ईश्वरीय। उ–21

दैहिक–शारीरिक। उ–21

दोष–विकार, खराबी। बा–2

दोषमय–दोष पूर्ण। बा–6

दोसक–दोष का। अ–261

दोहाई–आदेश (राजाज्ञा)। बा–153

दोहाई–सौगंध। अ–230

द्रवउ–पिघल जाय, प्रसन्न होना। बा–1

द्रुम–छोटे छोटे पेंड़–पौधे। बा–65

द्रोह–शत्रुता। सुं–39

द्रोही–शत्रु। बा–272

द्वादस अच्छर मंत्र–बारह अक्षरों का मंत्र (ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय) बा–143

द्वारपाल–दरबान, चौकीदार, द्वार रक्षक। बा–122

—ध—

धंधक धोरी–कपट का धंधा करने वाले। बा–12

धन्वी–धनुर्धारी। लं–26

धनद–कुबेर। बा–213

धनही–छोट छोटे धनुषों पर। अ–191

धनधारी–कुबेर। बा–182

धनिक–धनवान। बा–213

धनु पानी–हाथ में धनुष धारण करने वाले श्री राम। उ–97

धनेसा–धनेश, कुबेर। बा–4

धर्मजनयत्री–धर्मों को उत्पन्न करने वाली है। उ–38

धर्मधुरंधर–धर्म की धुरी धारण करने वाला। बा–143

धर्मनिरत–धर्म परायण। उ–124

धर्मसील–धर्माचरण करने वाले। बा–155

धर–धड़। अर–20

धरइ–धारण कर सकता है। बा–355

धर–धावत–पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। अर–26

धरन जब धावहिं–जब पकड़ने दौडते। उ–77

धरनि–पृथ्वी. । बा–18

धरनि तल–पृथ्वी पर। अ–110

धरनिसुता–सीताजी(पृथ्वी की कन्या)। अ–286

धरमक–धर्मों का। अ–55

धरम कै नेगी–धर्माचरण के सहायक। लं–109

धरमध्वज–धर्मकी झूठी ध्वजा फहराने वाले, दंभी। बा–12

धरम धुरीन–धर्म की धुरी को धारण करने वाले। अ–50

धरषि–मर्दन कर। लं–35

धरहु सिर–शिराधार्य करो। अ–40

धरहू–धरलो, धारण करके। बा–335

धरा–पृथ्वी। बा–184

धराई–निश्चय करा लिया। अ–18

धरासुर–ब्राह्मण (भृगुजी)। लं–86

धरि–धारण करके। बा–13

धरि–रखकर, टेककर। बा–18

धरि मारहु–पकड़कर मार डालो। अर–18

धरिहउँ–धारण करूँगा। बा–187

धरी–धारण किया। बा–85

धरे–रक्खे। बा–320

धरेउ–रक्खा–बा–35

धरे सरीरू–शरीर धारण करके। अ–41

धरै–पकड़ने के लिये। बा–203

धवल–उज्जवल। बा–213

धाई–दौडकर। बा–11

धाता–ब्रह्मा, विधाता। उ–106

धाम–निवास, घर–बा–1

धामदा–परमधाम को देने वाली। उ–4

धायल–दौड़ा। लं–97

धारा–गये, प्रवेश किया। बा–25

धारा–सेना की टुकड़ियाँ। लं–77

धारि–सेना। अ–317

धारिअ पाऊ–पधारिये। बा–313

धारी–धारण किया, धारण करके। बा–24

धावन–हरकारा। लं–23

धावहि खान–खाने दौड़ती है। लं–101

धींग–धींगा धींगी, अनिश्चित व्यवहार करने वाले। बा–12

धीर–धैर्य, धीरज। बा–85/184

धुनइ सिरु–शिर पीटने लगता है। अ–46

धुनि माथा–शिर पीटकर। अ–34

धुरधीर–धीर धुरंधर। अ–317

धुँवा देखि–विध्वंस देखकर। अर–21

धूति–बिगाड़ गई थी। अ–206

धूम–धुवाँ। बा–7

धूमउ–धुवाँ भी। बा–10

धूमकेतु–पुच्छलतारा। उ–91

धूरी–धूल,रज। बा–34

धूसर–लपेटे हुये। बा–203

धेनु–गाय। बा–101

धेनुधूरि–गोधूलि। बा–312

धेनुमति–गोमती जी। बा–143

धेनु लवाई–नई,ब्याई, गाय। उ–6

धौं–न जाने तो,संशस,जिज्ञासा सूचक आश्चर्य। सुं–21

ध्यान रस–ध्यानावस्थित। बा–111

ध्यावहिं–ध्यान करते हैं। बा–186

ध्यावहीं–ध्यान करते है। बा–51

ध्रुव–निश्चय ही। बा–84

–न–

नंचहीं–नाच रहे हैं। अर–20

नंदीमुख–नान्दी मुख श्राद्ध। बा–193

न अन्यथा वचांसि मे–मेरे व्चन मिथ्या नहीं हैं। उ–122

नक्र–नाक, घड़ियाल। लं–4

नकुल–नेवला। बा–303

न कोपि गुनी–गुणी कोई नहीं हैं। उ–101

नख–नाखून। बा–1

नख अरु सीसा–नख से शिखा तक (ऊपर से नीचे तक)। बा–333

नखत–नक्षत्र, तारागण। बा–239

नख निर्गता–जिन चरणों के नखों से निकली। उ–13

नख सिख–सारे शरीर में। बा–277

नगन–नंगा, वस्त्र हीन। बा–67

नघुषु–राजा नहुष। (ययाति के पिता) अ–228

नचाव–नचा रही हो। बा–316

नट–तमाशा दिखाने वाले। बा–214

नटत–नाच रहे हैं। बा–227

न त–अन्यथा, नहीं तो। बा–71/275

नतरु–नहीं तो। अ–70

नति–नमस्कार। अ–95

नति–नम्रता। अ–303

नति गति–विनय और चाल को। बा–28

न तु कामी बिषयावस–न कि वे कामी पुरुष जो विषयों के वश में हैं। उ–115

नतोऽहं—नतः+अहं—मैं नमस्कार करता हूँ। उ—108

नमोऽहमुर्विजापतिं—मैं जानकीनाथ को प्रणाम करता हूँ। अर—4

नतः—नमस्कार करता हूँ। श्लोक बा—5

नद—बड़े भयंकर नाले (नदी सरीखे)। अ—138

नदीस—नदी+ईश—समुद्र। लं—5

न देखा आई—लौटकर नहीं आई। बा—79

ननिअउरे—ननिहाल। अ—18

न निज पर सूझ मोंहि—मुझे अपना पराया नहीं सूझता। लं—64

नफीरि—नफीर, तुरही। लं—41

न बाधा—बाधा नहीं देते हैं। बा—137

नभ—आकाश। बा—8

न भ्रमहिं गृहादी—घर आदि नहीं घूमते हैं। उ—73

नभगनाथ—गरुड़। उ—70

नभगामी—काकभुशुन्डि जी। उ—94

नभगेस—गरुड़ जी। उ—21

नभचर—आकाश में रहने वाले प्राणी। बा—3

नभवानी—आकाशवाणी। उ—107

नभिन्न—अलग नहीं हैं। बा—18

नमत—झुकते हैं। बा—113

नमामहे—नमस्कार करता हूँ। उ—13

नमामी—प्रणाम करता हूँ। बा—17

नमामीशमीशान—नमामि+ईशम्+ईशान ईशान दिशा के ईश्वर मैं आपको नमस्कार करता हूँ। उ—108

नमि—झुककर। अर—40

नमित मुख—नीचा मुख किये। अ—58

नय—नीति। अ—70

नयऊ—नवीन नवीन प्रकार से। बा—103

नयन—नेत्र। बा—2

नयन के भोरे—नवीन (नये)के धोखे से। बा—272

नयन तरेरे—तिरछी नजर से देखा। बा—278

नयन निमेष निवारि—टकटकी लगाये। लं—118

नयन भरि—नेत्र भर कर (भली प्रकार से)। बा—335

नयनानंद दान के दाता—नेत्रों को आनन्द का दान देने वाले। सुं—45

नयसाली—नीतियुक्त। अ—297

नर—मनुष्य। बा—7

नरकेसरी—श्री नृसिंह भगवान। बा—27

नरतनु—मनुष्य शरीर—बा—51

नारनाथ—हे नरेश, राजा जनक। बा—286

नरनाथ—राजा दशरथ। बा—351

नरनाहू—राजा जनक। बा—217

नरपति—नृपति, राजा दशरथ। अ—39

नरपालहि—राजा। (जनक जी) अ—271

नरभूप—भगवान राम। बा—52

नरभूषन—मनुष्यों में भूषणरूप सर्व श्रेष्ठ। बा—241

नरराज—राजा। अ—126

नरवर—श्रेष्ठ पुरुष। अ—72

नरसृष्टि—मनुष्यों की सृष्टि। बा—142

नरहरि—नृसिंह भगवान। बा—122

नरहरी—भगवान श्री राम। सुं—4

नराणां—मनुष्यों को। उ—108

नरादरेण—मनुष्य आदर पूर्वक। अर—4

नरेसू—नरेश, राजा। बा—153

नर्तकी—नाचने वाली, नटिनी, माया। उ—116

नर्मद—आनन्ददायक। अर—11

न लाइअ बारा—देर न लगाइये। अ—5

नलिन—कमल। बा—106

नलिनी—कमलिनी। सुं—9

नव—नया। बा—59

नवगुन—नवगुण (शम—दम—तप—शौच, क्षमा, सरलता —ज्ञान —विज्ञान — आस्तिकता)। बा—282

नवनिधि—नवों निधियाँ। हअ—135

नवनीता—मक्खन। उ—117

नवल—नये। बा—248

नवसप्त—सोलहों श्रृंगार। बा—297

नवहिं—झुकने लगी। बा—85

नवहिं विरोधे—नौ, (शस्त्रधारी,भेद जानने वाला, समर्थ, स्वामी, मूर्ख, धनवान, वैद्य, भाट, कवि, रसोइया) को विरोध करने से। अर—26

नवीन—नव युक्त (नया)। बा—298

नसजारा—नसों का जाल। लं—15

नसाइहि—बिगड़ जायगा। लं—60

नसाई—नष्ट होता हैं। अ—24

नसाऊ—नष्ट हो जाय। अ—45

नसाये—नष्ट कर दिये। बा—16

नसावनि—नष्ट करने वाली। बा—16

नसाही—नष्ट हो जाती हैं। बा—315

नहाइ—स्नान करके। बा—354

नहारू लागी—ताँत के लिये गाय का चमड़ा। अ—36

नहाहू—स्नान करलो। अ—53

नहि डोला—हिले तक नहीं। उ—17

नहुष—एक राजा (ययाति के पिता तथा अंबरीष के पुत्र)। अ—61

नाइ—प्रणाम कर, सिर झुकाकर। बा—13

नाइअ माथा—माथा नवाइये,प्रणाम कीजिये। सुं—39

नाइहि—झुकायेगा। बा—165

नाई—नवाकर, झुकाकर। बा—355

नाईं—तरह। बा—56

नाऊँ—नाम। बा—26

नाक—स्वर्ग। बा—265

नाक—प्रतिष्ठा। बा—266

नाकनटी—अप्सरायें। बा—309

नाकपति—स्वर्ग का स्वामी इन्द्र। अ—92

नाग—शेष नाग, सर्प, हाथी। बा—7

नागअरि—सिंह (हाथी का शत्रु)। बा—267

नागमहा—रावण रूपी महासर्प को। लं—111

नागर—चतुर, नगर निवासी। बा—28

नागरिपु—सिंह। बा—106

नाघइ—लाँघ सकेगा। कि—29

नाघि—लाँघकर। सुं—28

नाठी—नष्ट हो गई थी। बा—135

नात—नाता, संबन्ध। अ—24

नाते—रिश्ते। बा—222

नादू—नाद, गर्जना। अ—54

नाना—अनेकों, बहुत से। बा—3

नानाकारा—अनेकों आकार।(सूरतें)। अर—18

नानापुराण—अनेक पुराण। श्लो—बा—7

नानायुध—अनेकों प्रकार के हथियार। अर—18

नानाविधि—तरह तरह के। बा—196

नाभि गभीर—नाभी की गम्भीरता। बा—199

नामानी—नाम भी। उ—52

नामी—नाम रटने वाला भक्त। बा—21

नायउ माथा—सिर नवाया, प्रणाम किया। अ—52

नायक—स्वामी, नेता। बा—120

नारकी—नर्क में रहने वाला, नर्क के योग्य। बा—335

नारद कहा—नारद की बताई हुई। बा—78

नारा—नाला। अ—133

नाराच—वाण। अर—20

नारि—स्त्री। बा—16

नारि खटाहि—स्त्रियाँ रूक सकती हैं। बा—79

नारि वृन्द—नारियों की मंडलियों ने। बा—99

नारिमय—स्त्री रूप में ही। बा—85

नारि मुई—स्त्री के मर जाने पर। उ—100

नारि विष्णु माया प्रगट—साक्षात विष्णु भगवान की माया ही स्त्री रूप से प्रगट हैं। उ—115

नारे—नाले। अ—62

नाल—डन्डी। बा—253

नावत—झुकाते हैं। बा—50

नावरि—नौका कीड़ा। लं—88

नावा—नवाया, प्रणाम किया। बा—341

नासा—नाक। बा—147

नासिका—नाक। सुं—54

नासी—नष्ट हो गई। बा—255

नाहिन—नहीं। बा—157 / 222

नाहिन आन अधार—दूसरा कोई आधार नहीं हैं। लं—121

नाहू—स्वामी, पति। बा—97

निअराया—पास आ गये। बा—212

निकट—समीप, पास। बा—90

निकंद—नाश करने में। लं—111

निकंदन—नष्ट करने वाला। बा—24

निकंदय—नाश कीजिये। उ—14

निकर—समूह। बा—1

निकसहिं—निकलते हैं। अ—109

निकाई—अच्छाई, सुन्दरता। बा—29

निकासि—निकलकर। अ—80

निकाम—अत्यन्त। अर—20

निकामा—अत्यन्त। अ—202

निकाय—समस्त,समूह। बा—51

निकारहिं—निकाल देते हैं। उ—101

निकासइ—निकाल देता था। बा—183

निकासौ–निकाल दूँ। अ–26
निकेत–घर। बा–152
निगम–वेद–शास्त्र। बा–12
निगमहूँ–वेदों के लिये भी। अ–304
निगूढ़ा–अत्यन्त रहस्य मयी। बा–133
निग्रह–बाँधना, रोकना। उ–67
निघटत–घटने पर। अ–147
निचोरि–छानकर, निकालकर। बा–109
निचोरि–सार, निचोड़। अ–258
निज–अपनी। बा–3
निजं–निज स्वरूप में स्थित। उ–108
निजतंत्र–स्वेच्छा से। बा–51
निज पद नयन दिये–श्री जानकी जी नीचे की ओर देख रही हैं। सुं–8
निज स्वास–आपनी (बिभीषण) की श्वास (वचन)रूपी। सुं–49
निज सुख–आत्मानन्द। उ–90
निजात्मक घाती–अपनी आत्मा का हनन करने वाले। उ–53
निजाश्रम–अपने आश्रम। उ–89
निजु–स्वयं। अ–72
निठुर–निष्ठुर, क्रूर। बा–113
निठुराई–निष्ठुरता, निर्दयता। सुं–14
नित्य निबाहि–प्रातः कालीन नित्य क्रिया करके। बा–227
निति–लिये,नीती। बा–209
निंदक–निन्दा करने वाले, नीचा दिखाने वाले। बा–243
निंदक–मात करने वाले। बा–301
निंदरहि–निरादर कर रही हैं। बा–345
निंदरि–निरादर करके। बा–283
निंदरी–निरादर करके। सुं–4
निंदहिं–निन्दा करते हैं। अ–86
निदान–अंत, नाश, परिणाम। बा–1
निदेसा–आदेश। उ–59
निधन–मृत्यु। बा–82
निधान–घर, खजाना। बा–1
निधि–संपत्ति, धन। अ–118
निनारी–न्यारी। उ–81
निपट–विल्कुल, पूरी तरह से। बा–274
निपटहिं–निरा, बिल्कुल, साधारण। बा–283
निपात किये–गिरा दिया हैं। उ–14
निपाता–बधकिया, नष्ट किया। बा–122
निपुन–निपुण,चतुर। बा–99
निपुनाई–निपुणता, चतुरता, सृष्टि। बा–94
निबाहनिहारा–निवाहने वाला। अ–24
निबाहू–निर्वाह होता हैं। बा–7
निबाहै–निबाह दे, सफल कर दे। अ–10
निबिड़ घोर, घना। अर–44
निबुकि–बधन से निकलकर। सुं–25
निबेरी–पूरा किया, दूर करके। बा–325
निबेही–अछूता। उ–71
निमज्जत–स्नान करने पर। अ–310
निमिराज–जनक जी। अ–277
निमिष–पल। बा–330
निमेष–पलक मारना और खोलना। अ/158/लं–15

नियम–शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय प्रणिधान। बा–37

नियराई–पास आयेगी। बा–138

नियोगा–आज्ञा। अ–233

निरंकुस–उद्दण्ड। बा–274

निरंजन–माया रहित। बा–198

निरंतर–सदैव, हमेशा । बा–12

निरंबु–विना जल के । अ–247

निर्गमहिं–बाहर निकालता हैं । अ–23

निर्गुन–गुणरहित । बा–79

निर्दंभ–अभिमान रहित । उ–21

निर्नय–निर्णय, सिद्धान्त। उ–41

निर्बहई–निबाह ले जाता हैं । उ–119

निर्बहे–छूट गये। उ–13

निर्भय–निडर। बा–187

निर्भर हरष–अपार हर्ष । बा–300

निर्मल मन अहीर निजदासा–निष्पाप मन

जो स्वयं अपना दास हैं (अपने वश में हैं) दुहने वाला अहीर हैं। उ–177

निर्मूलनं–निर्मूल करने वाले। उ–018

निर्मूला–विनाश । बा–183

निर्वाणरूपं–मोक्ष स्वरूप । उ–108

निर्वान–मोक्ष । उ–78

निर्वानप्रद–मोक्ष देने वाला । उ–130

निर्विकल्पं–भेद रहित । उ–108

निरखंति–देख रहे हैं । लं–111

निरखत–देखने से । बा–37

निरखि–देखकर । अ–39

निरखिहउँ–देखूँगी । अ–68

निरगुन–त्रिगुणातीत ईश्वर । बा–23

निरच्छर–अनपढ़। उ–100

निरजोसु–निचोड़, निश्चित सिद्धान्त । अ–201

निरझर–झरना । अ–136

निरत–आसक्त, तत्पर । बा–12

निरनउ–निर्णय । अ–185

निरबाहा–निभाया । बा–76

निरमयउ–रचना की है । बा–14

निरमल–स्वच्छ । बा–18

निरवधि गुन–असीम गुण समपन्न । अ–288

निरस्य–निग्रह काके । अर–4

निरस–शुष्क, सूखा । बा–2

निराकारमोंकारमूलं–निराकारं+ ओंकारमूल=निराकार के मूल। उ–108

निराचार–आचारहीन । उ–98

निरामयं–निर्विकार । लं–104

निरामिष–शाकाहारी, मांस न खाने वाला। बा–5

निरावहिं–घास फूस साफ कर रहे हैं । कि–15

निरासा–आशाहीन–बा–135

निरीस–अनीश्वरवादी(नास्तिक) । अर–299

निरीहं–इच्छारहित । उ–108

निरीहमीश्वरं–इच्छारहित ईश्वर । अर–4

निरुअरई–ग्रंथि छूट पाती है । उ–117

निरुआरा–खोलती है । उ–118

निरुआरे–सुलझाया । उ–11

निरुपाधि–निष्कपट । बा–15

निरुपाधि—उपाधिरहित । बा—144

निरुपम पुरुष—उपमारहित पुरुष । अ—288

निरूपन—विश्लेषण। बा—23

निरूपहिं—विश्लेषण करते हैं । अ—93

निरूपा—निरूपण किया । उ—111

निलज—लाजरहित, नंगा । बा—79

निवारन—दुख दूर हो । अ—40

निवारा—रोका था। अ—297

निवारे—अलग कर दिया । लं—51

निवासिनि—रहने वाली । बा—98

निशेशं—चन्द्रमा । अर—11

निषंग—तरकस। बा—147

निषेधमय—रोकने योग्य । बा—2

निष्पापा—पापरहित । लं—58

निसंकी—निडर । अ—299

निसठ—एक वानर का नाम । सुं—54

निसरत—निकलने से । सुं—31

निसरि—निकले । लं—69

निसरी—निकली । कि—6

निसागम—रात्रि के आगमन से। अ—301

निसाचर—राक्षस । बा—42

निसाचरपति—राक्षसराज रावण । लं—44

निसाचरराजा—विभीषण । बा—18

निसान—नगाड़ा। बा—102

निसि—निशि, रात्रि । बा—24

निसित—निशित, तीक्ष्ण । अर—20

निसील—शील रहित । अ—299

निसेनी—सीढ़ी । लं—120

निसोच—सोचरहित । अ—242

निसोते—विशुद्ध। बा—28

निस्तरइ—भवबन्धन से छुटकारा पा जाता है । कि—3

निस्तार—छुटकारा । उ—1

निस्तारा—उद्धार किया। लं—77

निहकाम—निष्काम, स्थिर । अर—11

निहार—नीहार, कुहासा। लं—93

निहारई—देख रही हो । अ—25

निहारा—देखते हैं । बा—4

निहारि—देख कर । बा—325

निहोरा—प्रार्थना, अनरोध, कृतज्ञता । बा—5

नीके—भली प्रकार से,अच्छा । बा—4

नीड़—घोंसला। बा—346

नीतिरत जेई—जो नीतिपरायण हैं । उ—128

नीतिविभूषन—नीतिवान । सुं—40

नींद—आलस्य, नींदरूपी । बा—39

नींदउँ—नींद में भी । बा—358

नीर—जल । बा—34

नीरज—कमल । बा—243

नीरधर—मेघ, बादल । बा—146

नीरनिधि—समुद्र। लं—5

नीलकंठ—शिव जी। बा—106

नीलोत्पल—नीले कमल के समान। कि—30

नूतन—नवीन । बा—94

नूपुर—घुंघुरू, पैंजनी । बा—199

नृप—सम्राट, राजा । बा—11

नृपअजिरबिहारी—राजा दशरथ के आँगन में नाचने खेलने वाले । उ—77

नृपकन्या—राजकुमारी । बा—134
नृपकिशोर—राजकुमार । बा—232
नृपघाती—राजाओं का घातक । बा—280
नृपढोटा—राजपुत्र। बा—280
नृपतनु—राजा का वेष। बा—135
नृपति—राजा, नरेश । बा—108
नृपद्वारा—राजा दशरथ के द्वार पर । बा—193
नृपनय—राजनीति । अ—258
नृपबाला—राजकुमारी । बा—130
नृपभूषन—महाराजा जनकजी । बा—324
नृपमन्दिर—राजभवन । अ—76
नृपराउर—राजा के रनिवास में । अ—153
नृपरिषि—राजर्षि । बा—143
नृपलीला—राजाओं की लीलायें । बा—204
नृपसुतहिं—राजा के पुत्र को । बा—50
नृपाला—राजा । बा—28
नेई—नींव । अ—29
नेति—न+इति=जिसका कभी अन्त न हो, ऐसा नहीं । बा—12
नेब—नायब, सहयोगी । अ—19
नेम—नियम, तपस्या । बा—17
नेरी—निकट । सुं—53
नैवछावरि—निछावर । बा—194
नेवत—निमंत्रण । बा—62
नेवते—आमंत्रित । बा—60
नेवाजा—कृपा की है। अ—250
नेवाजे—रक्षा की, उद्धार किया। बा—25
नेवारई—हटा देता है। अ—25
नेवारे—मना किया। अ—254
नेह—प्रेम। बा—1
नेहरुआ—नसों का रोग(नहरुआ) । उ—121
नै—नवीन। बा—76
नैनी—नेत्रौं वाली। बा—232
नैवेद्य—देवता के निवेदन हित भोज्य पदार्थ, प्रसाद। बा—201
नैहर—मायके,मातृगृह। अ—21
नो—हमारी। अर—11
नोइ निवृत्ति—निवृत्ति नोइ है, सांसारिक विषयों—प्रपंच से हटना ही—गाय के पैरों में बाँधने वाली रस्सी है। उ—117
नौकारूढ़—नौका पर चढ़ा हुआ। उ—73

—प—

पंक्—दलदल, कीचड़,जल। बा—337
पंकज़—कमल। बा—17
पंकरुह—कमल। बा—43
पंगु—लँगड़ा (दोनों पैरों से बेकार)। बा—1
पंच कवल करि—पाँच कौर लेकर।(प्राणाय स्वाहा—अपानाय स्वाहा—व्यानाय स्वाहा—उदानाय स्वाहा—समानाय स्वाहा)। इन मंत्रों का उच्चारण करते हुये पाँच ग्रास लेकर।
पंचकहे—पहले पंचों के कहने से। बा—79

पंचदस—पंद्रह(शिव के पंद्रह नेत्र)। बा—317
पंचधुनि़—पाँच ध्वनि। (वेद ध्वनि—बंदिध्वनि—जयध्वनि—शंखध्वनि—हुलध्वनि) बा—319
पंचबीस़—पाच्चीस शाखायें। उ—13
पंचसबद—पंच शब्द। (तंत्री— ताल—झाँझ—नगाड़ा—तुरही) बा—319
पंचानन—सिंह। अर—33 / लं—19
पंचानन—शिव जी
पंजर—पिंजर। लं—73
पंथ कथा—मार्ग की कहानी। बा—42
पंथहिलागा—पीछे पड़ गया, रास्ता रोकता था। बा—182
पंथाना—मार्ग। उ—129
पइसार—प्रवेश करूँ। सुं—3
पखवारा—पंद्रह दिन। कि—6
पखाउज—पखावज, मृदंग। लं—10
पखारि—धोकर। बा—66
पखारू—धोले। अ—101
पखारे—धोये। बा—45
पगलागी—प्रणाम करके। अ—46
पगुधारे—पधारे हैं। अ—44
पचवै—पचा डालती है।उ—119
पचारी—ललकार कर। बा—182
पचासक—कोई पचास(शिष्य)। अ—109
पचि—पच्चीकारी करके। बा—288
पचि पचि मरिअ—अनेकों प्रयत्न करो। उ—89
पच्छजुत—पंखवाले। सुं—35
पच्छी चंडाला—चंडाल पक्षी—कौआ। उ—112
पछितानि—पछतावा। अ—10
पछितैहसि—पछतायेगी। अ—36
पट—वस्त्र, पर्दा। बा—7
पटतर—समानता। अ—90
पटतरिअ—तुलना करें। बा—220
पटल—पर्दा। बा—117
पटली—समूह। अर—40
पटु—गूढ़ विचारपूर्ण, निपुण। बा—41
पटोरे—सुन्दर रेशम। बा—14
पठइअ—बुला भेजते। अ—9
पठई—भेजी। बा—333
पठए—भेज दिया। अ—18
पठन्ति—पढ़ते हैं। उ—108
पठवउँ—भेजता हूँ। उ—61
पठवन चले—पहुँचाने चले। उ—19
पठवा जनक बोलाइ—जनकजी ने बुला भेजा है। बा—239
पठाई—भेजकर। अ—109
पठाए—भेजा। बा—82
पठै दीन्हि—भेज दिया। बा—312
पतंगा—सूर्य। बा—98
पतंगा—गेंद। बा—126
पताका—ध्वजा। बा—17
पति—रक्षक, स्वामी। बा—198
पति—प्रतिष्ठा। अ—305
पतिआनि—विश्वास कर लिया। अ—16
पतिआहु—विश्वास करो। अ—22
पतिन्ह—पतियों को। बा—336
पति पहिचानि—अपने स्वामी श्रीराम को पहचान कर। अर—7
पति लागी—पतिरूप में पाने हेतु। बा—83

पत्र—पत्ते। बा—287
पत्री—चिट्ठी, लग्नपत्रिका। बा—91
पथि—पथिकरूप। अ—122
पथिक—राही, रास्ता चलने वालों का। बा—41
पद—चरण।बा—2
पदचर—पैदल। बा—298
पदचारी—पैदल। अ—201
पदज—पैरों की अँगुलियाँ। उ—76
पदत्राना—जूते। अ—62
पदप्रहार—लातों की मार। उ—106
पदाति—पैदल। लं—86
पदादपि—पद को पाकर भी। उ—13
पदाब्ज—चरण कमल। अर—4
पदिक—रत्नों से युक्त। बा—199
पदिकहार—रत्नजटिल हार। बा—147
पदुम—कमल। बा—1
पदुमराग—पद्मराग, मणियों (मणिक)। बा—287
पन—प्रण, प्रतिज्ञा। बा—57
पनच—प्रत्यंचा, डोरी। अ—133
पनरोपी—प्रतिज्ञा करके। सुं—23
पनव—भेरी, ढोल। बा—299
पनवारे—पत्तलें। बा—328
पनसफल—कटहल का फल। अर—10
पनही—जूतियाँ। अ—191
पनु ठाना—प्रण किया हैं। बा—251
पन्नग—सर्प। बा—31
पन्नगारि—गरुड़ जी। उ—95
पय—दूध, पानी। बा—6
पय—पयस्विनी नदी। अ—133
पयद—स्तन। अ—52
पयनिधि—क्षीरसागर। बा—185
पयपयोधि—क्षीरसागर। अ—139
पयमुख—दुधमुँहा। बा—277
पयादेहि—पैदल ही। अ—62
पयान—प्रस्थान, निकल जाते। अ—79
पयोधि—क्षीरसागर, दूध का सागर। बा—31
पयोनिधि—समुद्र। बा—27
पर—दूसरा। बा—4
परइ न पाऊ—पैर नहीं पड़ता, बढा नहीं जाता। अ—39
परउँ—पड़ती हूँ , छूती हूँ, गिर सकती हूँ। बा—81
परचारे—ललकारने पर। लं—35
परछिद्र—दूसरे के अवगुण। बा—2
परजरा—अधिक जल उठा। लं—27
परत—गिरते। उ—13
परति—पड़ती हैं, छूती हैं। बा—102
परतिहुँ—गिरते समय भी। सुं—20
परतीति—प्रीतति, विश्वास। बा—138
परत्र—परलोक। उ—43
परत्रियगामी—परस्त्रीगामी। उ—112
परत्रिय लंपट—परायी स्त्री में आसक्त। उ—100
परदखिना—परिक्रमा, प्रदक्षिणा। अ—202
परदारा—दूसरे की स्त्री को। बा—184
परद्रोही—दूसरों से शत्रुता मानने वाला, अनिष्ट करने वाला । बा—184
परधन—दूसरे के धन को। बा—184
परधनहारी—दूसरे का धन अपहरण करने वाला। उ—98

परधामा—परम धाम। बा—13
परन—पड़ने लगीं। बा—328
परनकुटी—पत्तों की कुटियाँ(पर्णकुटी)। अ—104
परननिकेत—पर्णकुटी। अ—320
परन पुटी—दोना। अ—250
परनसाल—पर्णकुटी। अ—65
परनामा—प्रणाम। बा—14
परब—त्योहार। बा—41
परब—पूर्णिमा। अ—115
परबविनु—विना पर्व (योग) के। लं—102
परम—अत्यन्त बड़ा। बा—13
परमंदर—परम भय को दूर कीजिये। लं—115
परम धर्ममय—अति धर्मपूर्ण (अत्यन्त श्रेष्ठ)। उ—117
परम सक्ति—भगवान की महामाया (सीताजी)। बा—187
परमातुर—बड़ी उतावली से। उ—60
परमानंद—स्वयं परमानन्द स्वरूप शिवजी ने भी। बा—111
परमानंदा—परम आनन्द स्वरूप। बा—186
परमानु—अत्यन्त सूक्ष्म अणु। लं—1
परमायतनं—परम स्थान(महान भंडार)। उ—14
परमारथ—परलोक। बा—44
परमारथवादी—परमार्थ तत्त्व(ब्रह्मज्ञान) के विवेचक। बा—108
परमिति—परम सीमा। बा—31
परमिति—मर्यादा। अ4—48
परमीसा—परमेश्वर। उ—58
परलोक—स्वर्ग। बा—20
परवंचनताति—दूसरों को ठगना। उ—102
परवस—परवश, परतन्त्र। उ—78
परस—स्पर्श से, छू जाने से। बा—3
परसत—छूने से ही। बा—211
परसपर—आपस में। बा—21
परसमणि—पारस मणि, जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है। उ—44
परसि—स्पर्श पाकर। बा—324
परसु—फरसा, कुल्हाडी। बा—272
परसुधरहि—परशुराम जी का। बा—271
परसे—स्पर्श किया। बा—148
परसेउ—स्पर्श किया। कि—10
परहीं—पड़ जाते हैं, गिरते हैं। बा—3
परहेले—परवाह न करके। बा—159
परा—पड़ गया,बरस गया। बा—263
पराई—दूर भाग जाय। बा—64
परागा—पराग, धूल, पुष्प रस। बा—1
पराधीन—दूसरे के अधीन। बा—102
परानंद संदोह—परमानन्द राशि। उ—46
परान—भागने लगे। लं—101
पराने—भाग गये। बा—95
पराभव—पराजय, नाश। बा—235
पराय पाप—दूसरे के पाप को। अ—168
परावन—भगदड़। बा—180
परावर—सभी रूपों वाले। बा—116

परावा—दूसरों से। उ—40
परास—ढाक। अर—40
पराहीं—भागने लगते हैं। अर—37
परिकर—पीले दुपटटे से कमर में फेंटा बाँधे। बा—219
परिखिअहिं—परीक्षा होती हैं। अर—5
परिखेसु—बाट देखता। कि—6
परिघ—भाला, लोहा जड़ी लाठी। अर—19
परिच्छा—परीक्षा। बा—77
परिचरजा—परिचर्या, सेवा। उ—24
परिचारक—नौकर सेवक। बा—287
परिचारिका—नौकरानी, सेविका, टहलनी। बा—326
परिचेहु—जलाते हो, परक गये हो। बा—137
परिछन—नवागन्तुक वर या वधू का स्वागत। बा—96
परिछि—परछन करके। बा—349
परिछिन्न—ढका हुआ, आवृत्त। उ—111
परिजन—परिवार। बा—17
परिजनहिं—कुटुम्बियों को। अ—58
परिताप—ताप, दुख। बा—43
परितापी—दुखदायी। बा—176 ।जलाने वाले। उ—122
परितोष—सन्तोष। बा—281
परितोषत—सन्तुष्ट होते हैं, प्रसन्न होते हैं। बा—27
परितोषी—समझाकर, सन्तुष्ट करके। बा—171
परित्याग—त्याग देना, छोड़ देना। बा—61
परित्राता—पालन करता हैं। बा—163
परिधन—वल्कल वस्त्र। बा—106
परिपाका—परिणाम में। अ—21
परिपाटी—परम्परा। बा—239
परिपूरन—भरे हुये, पूरित। बा—101
परिपोषे—परिपुष्ट हुये, संतुष्ट किया। अ—137
परिहरहीं—त्याग देते हैं। बा—4
परिहरहु—त्याग दो। बा—71
परिहरि—छोड़कर, अलगकर। बा—6
परिहरि बानी बाम—विपरीत बोलना छोड़कर। बा—278
परिहरिहि—छोड़ देगी। अ—49
परिहरु—छोड़ दे। अ—32
परिहरे—छोड़ दिये। बा—74
परिहरेऊ—छोड़कर पडा हो। अ—38
परिहरे—छोड़े। बा—342
परिहास—हँसी, मजाक उड़ना। बा—9
परुष कहंता—कठोर बचन कहता हुआ। अर—34
परुषाच्छर—कड़ुवे वचन। उ—102
परुसहु—भोजन परसो। बा—168
परुसि गे—परस गये। बा—328
परेउ—मृत्यु हो गये, गिर पड़े। बा—175
परे पकवाने—पकवान परसे गये। बा—329
परेस पुराना—पुराण पुरुष, परमेश्वर। बा—116
परौं—गिरूँ। अ—45
पर्वताकारा—पर्वत के आकार के, विशालकाय। कि—30

पल्लव–पत्तों में। बा–87

पल्लवित–छा गये, व्याप्त हो गये। बा–346

पलकन्हिहू–पलकों ने भी। बा–232

पलना–झूला। बा–198

पलरोकी–पलक मारना रोककर। सुं–45

पलुहइ–हरा भरा हो जाता हैं। अर–44

पलोटत–दबाने लगे। अ–89

पलोटत प्रीते–प्रेम पूर्वक दबा रहे हैं। बा–226

पलोटिहि–दबावेगी। अ–67

पवन–वायु। बा–7

पवन कुमार–हनुमान जी। बा–17

पवनसुत–हनुमान जी। बा–26

पवारे–फेंकने से, फेंक दिये। बा–30 1/लं–32

पवि–बज्र, बिजली। बा–357/अर–29

पषान–पत्थर। बा–80

पसाऊ–प्रसाद, आशीर्वाद, प्रेम। बा–15

पसारा–फैलाया। सुं–2

पसारि–फैलाकर। बा–311

पसु–बलिपशु। बा–283

पसेउ–पसीना आ गया। अ–20

पहार–पहाड़। अ–34

पहिं–पास। बा–53

पहिरे–पहने 5हुये हैं। बा–92

पहुँचावहि–पहुँचाती हैं। बा–337

पहुनई–आतिथ्य, मेहमानदारी। बा–306

पा–पैर। बा–81

पाइअ–मिलती हैं। बा–35

पाइक–पैदल। बा–302

पाउब–पाओगी। अ–62

पाउ रोपि–प्रण करके। अ–267

पाक–पका हुआ। अ–27

पाक–पकवान, रसोई। बा–201

पाकरिपुचाप–इन्द्र। अ–302

पाकरिपुचाप–इन्द्र धनुष। बा–347

पाके–पके हुये। अ–161

पाखंड–आडम्बर धोखा। बा–32

पाख–पक्ष,पखवारा। बा–7

पाखदिनु–पखवारा, पंद्रह दिन। अ–19

पागे–पकाये हुए, पूर्ण। बा–146

पाँचहि–पंचां को (आप सभी को)। अ–5

पाछिल–पहले का। बा–170

पाछे घाली–पीछे कर लिया। लं–70

पाछे पछिताऊ–पीछे पछतावा। अ–4

पाटंबर–रेशमी कपड़े। उ–95

पाट–रेशमी। अ–6

पाटमय–रेशम की। बा–288

पाटमहिषी–पटरानी। बा–324

पाटल–पन्नाग वृक्ष,गुलाब। बा–40

पाटल–गुलाब (सफेद)। लं–90

पाठीन–पाठीन मछली (जो तड़प रही हो)। अ–35

पात–पत्ता। अ–45

पातक–पाप। अ–95

पातकमई–पापमयी। बा–324

पातकिनि–पापिनी (मंथरा)। अ–22

पाँती–पंक्ति। उ–2

पाती–पत्री(लग्न पत्रिका)। बा–91
पात्र विस्वासा–दूध दुहने वाला बर्तन विश्वास हैं। उ–117
पाथ–जल, मार्ग, सूर्य, अग्नि, अन्न, आकाश, वायु। अ–275
पाथोज–कमल। बा–101
पाथोद–मेघ,समुद्र। अर–32
पाथोधि–समुद्र। सुं–60
पादप–वृक्ष। अर–29
पादपधारी–वृक्षों को धारण किये हैं। सु–35
पादारविंद–चरण कमनों को। उ–108
पादुकन्हि–खड़ाउओं में। सुं–42
पादोदक–चरणोदक। उ–48
पान–पीते हैं, प्राप्त करते हैं। बा–10
पान–भोजन, मदिरा। बा–180
पान–पत्ते। बा–328
पान किये ते–पीने से। बा–43
पाना–पत्र, पत्ते। अ–6
पानि–पाणि, हाथ। बा–4
पानिग्रहण–विवाह। बा–101
पानी–पाणि, हाथ। बा–8
पा परिअ–पैर पडूँगा, झुकूँगा। बा–273
पापिनिहि–पापिनि कैकेई को। अ–47
पापी–रोग। उ–122
पापौघमय–पाप+ओघ+मय+पाप समूह युक्त। लं–104
पाय–चरण, पैर। बा–350
पायक–सेवक। लं–63
पायन्ह–चरणों में। अ–94
पाय लै–पैरों को पकड़कर। अ–11
पारथिव–शिवजी की। अ–103
पारमन–मन से परे। लं–115
पारस–एक प्रकार का पत्थर जिसके स्पर्श से निकृष्ट धातुयें सुन्दर बन जाती हैं। बा–3
पारा–डाल दिया, उत्पन्न कर दिया। अ–261
पारावत–कबूतर, बन्दर, पर्वत। अर–38
पारी–गिरा दी। लं–70
पालउ–पत्ते को। अ–161
पालक–पालन करने वाले। बा–20
पालकिन्ह–पालकियों पर। बा–338
पालव–पत्ते पर। अ–47
पालहीं–रक्षा कर। अ–50
पालिबी–पालन कीजियेगा। बा–326
पाँवड़े–पैरों तले बिछाने वाले भिन्न प्रकार के वस्त्र। बा–319
पावँर–नीच, पामर। बा–111
पावँरन्हि–नीच लोग। बा–85
पाँवरी–खड़ाऊँ। अ–316
पाव–पा जाय। बा–335
पावक–अग्नि। बा–17
पावन–पवित्र। बा–10
पावनकारी–पवित्र करने वाले। सुं–42
पावन चाहा–पाना चाह रही हो। अर–1
पावनताई–पवित्र करना। उ–66
पावनिहार–पानेवाला। बा–251
पावनी–पवित्र करने वाली। उ–15
पावहिं–पावेंगे। अ–42
पाषंड–माया।अर–20
पाँस–फाँसी। कि–21

पासा—ओर से। बा—287
पासू—पास, सामीप्य। बा—17
पाहन—पत्थर। अ—22
पाहरू—पहरेदार। अ—90
पाहि—रक्षा कीजिये। बा—138
पाँही—पर, को, से। बा—8
पाही—पाहि, रक्षा करो। अ—295
पाहुने—मेहमान, अतिथि। बा—335
पिअत—पीते ही। अ—87
पिअर—पीला। बा—327
पिआरी—प्यारी। बा—334
पिआसे—प्यासे। बा—326
पिऊषा—अमृत। बा—335
पिक—कोयल। बा—3
पिकबयनी—कोयल सी बोली वाली सीताजी। अ—117
पिंजरन्हि—पिंजड़ों में। बा—338
पितर—पुरखे, पूर्वज। बा—7
पितहिं—पिता को। अ—46
पिनाक—धनुष। बा—253
पिपासा—प्यास। बा—209
पिपीलिकउ—चींटी भी। बा—13
पियहिं—पति की। बा—334
पियूष—अमृत। बा—22
पिराने—दुखने लगे। बा—278
पिरीते—तित्र, प्यारे। अ—17
पिरीते—प्रीति से। अ—248
पिरोजा—फिरोजा (रत्न)। बा—288
पिसाच—प्रेत, राक्षस, अनाचारी। बा—85
पिसाचिनी—राक्षसियाँ। सुं—10
पिसुन—चुगुलखोर। अ—168
पिसुनता—चुगुलखोरी। उ—112
पी—पति (दशरथ)। अ—18
पीठा—चौकी। अ—98
पीठि—पीठ। बा—357
पीढ़न्ह—पीढ़ों पर, पटुलियों पर, (लकड़ी से निर्मित बैठने का आसन)। बा—328
पीत—पीला। बा—199
पीतपट—पीताम्बर। बा—147
पीतवरन—पीले रंग का। उ—73
पीन—मोटा। बा—93
पीरा—पीड़ा, कष्ट। बा—97
पीवर—मोटा। बा—156
पुंगव—श्रेष्ठ पुरुष। बा—14
पुंज—ढेर। बा—1
पुट—दोना। उ—128
पुटी—दोनिया। अ—250
पुतरि—पुतली। अ—59
पुत्रकाम—पुत्र प्राप्ति हेतु। बा—189
पुनि—फिर, पुनः। बा—4
पुनी—पुण्यात्मा। उ—21
पुनीत—पवित्र। बा—13
पुन्यथल—पुण्य स्थल। अ—310
पुन्यसिलोक—पुण्यात्मा पुरुष। अ—263
पुरंदर—इन्द्र। बा—302
पुर—नगर।(अयोध्या)। बा—16
पुर—जनकपुर। बा—306
पुर—नगर, गाँव। बा—93
पुरइनि—कमलिनी। बा—37
पुरउब—पुर्ण करूँगा। बा—152
पुरउबि—पूरा कीजियेगा। अ—103

पुरट—स्वर्ण। बा—346
पुरट पट—सोने की जरी के पर्दे। बा—213
पुरपारा—सारे नगर पर (वज्र) गिरा दिया। अ—49
पुरब—पूरा कर दे। अ—23
पुरवहु—पूर्ण करें। बा—14
पुरवासिन्ह—नगरवालों से। बा—130
पुरवासी—अयोध्या के रहने वाले। बा—193
पुराकृत—पूर्व जन्म का किया हुआ। बा—222
पुरातन—पुरानी, पौराणिक। बा—163
पुराना—पुराण, प्राचीन। बा—6
पुरारी—महादेव जी। बा—10
पुरुषमय—पुरुष रूप ही। बा—85
पुरुष समेता—पुरखों सहित। अ—184
पुरुषारथ—पौरुष, बल। बा—103
पुरोडास—यज्ञ के अन्न को। अर—29
पुरोधा—पुरोहित। अ—278
पुलक—रोमांच। बा—37
पुष्पकहि—पुष्पक विमान को। उ—4
पुहुमि—पृथ्वी। अ—315
पूग—पुंज, समूह। उ—92
पूगफल—सुपारी। बा—344
पूँछेहु आई—आकर पूँछना। अ—39
पूजिहि—पूरी होगी। बा—144
पूजी—पूरी हो गई। अ—16
पूजेउ—पूजा की। बा—100
पूत—पुत्र। अ—30
पूप—पुआ। उ—77
पूय—पीब। लं—552
पूर—पूर्णिमा। बा—8
पूर—पूर्ति, समाप्ति। लं—37
पूरनकाजा—पूर्णकाम(सफल)। बा—330
पूरनकाम—सभी कामनाओं से पूर्ण, कृतकृत्य। बा—101
पूरन ससि—पूर्णमासी का चन्द्रमा। बा—207
पूरब—पूर्व, पहले का। बा—98
पूरब कल्प एक—एक कल्प पहले। उ—96
पूरहि न त भरि कुधर बिसाला—नहीं तो बड़े बड़े पर्वतों से भरकर उसे पाट देंगे। सुं—55
पूरि तन—पूर्ण रूप से। बा—255
पूरे—भरे। बा—324
पूषन—सूर्य। बा—20
पेखन—दृश्य। अ—127
पेखिअ—देख लें। बा—3
पेखु—देखो। बा—161
पेखे—दर्शन करते हुए। अ—67
पेन्हाई—पेन्हावे (दूध उतारे)। उ—117
पेलिहहिं—टालेंगे। अ—289
पेली—उल्लंघन कर। अ—298
पैठ—घुस गया। बा—157
पैठिहउँ—घुस जाऊँगा। सुं—2
पैरत—तैरते हुए। बा—263
पैरिपार चाहहिं—तैर कर पार जाना चाहते हैं। उ—115
पैहहिं—पायेंगे। बा—8
पोच—नीच, बुरे। बा—6
पोची—ओछी, निकृष्ट अ—12

पोत–बच्चा, जहाज, नाव। लं–21
पोतक–शिशु। अ–132
पोषक–पालन करने वाला। बा–7
पोषनिहारा–पालन करने वाला। अ–17
पोषि–पुष्ट करके। बा–340
पोसे–पोषे, पालन, पोषण। कि–3
पोसो–पालन किया। बा–28
पोहिअहिं–पिरांकर। बा–11
पौढ़ाए–लिटाया। बा–201
प्रकृति पार–प्रकृति से परे। उ–72
प्रकृष्टं–श्रेष्ठ। उ–108
प्रकारा–प्रकार, तरह। बा–9
प्रकास्य–मायिक, प्रकाशमान। बा–117
प्रकासरूप–ज्योति स्वरूप। बा–116
प्रगटउँ–स्पष्ट करता हूँ। बा–46
प्रगट प्रभाऊ–प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। बा–46
प्रगल्भं–तेजस्वी। उ–108
प्रघोर–अत्यंत भयंकर। लं–83
प्रचंड–भीषण। बा–32
प्रचंडं–प्रचंड (रुद्ररूप)। उ–108
प्रचारा–प्रचार, विस्तार। बा–2
प्रचारा–प्रेरणा। अ–34
प्रचारू–बहने लगा। अ–163
प्रजंत–पर्यन्त, तक। लं–71
प्रजहि–प्रजा की। अ–55
प्रजापाल–प्रजा का पालन करते थे। बा–153
प्रजारी–आग लगा दी। सुं–25
प्रजेस–प्रजापति। बा–60
प्रजेस कुमारी–सती (दक्ष प्रजापति की पुत्री)। बा–60
प्रत्यूह–विघ्न। उ–45/118
प्रतापपुंज–अत्यंत तेजवान, प्रतापी। बा–154
प्रतापरवि–प्रतापभानु नामक राजा। बा–153
प्रतापी–तेजस्वी। बा–178
प्रतापु–वीरता। बा–174
प्रतापू–कृपा से, ऐश्वर्य से। बा–15
प्रति–लिये, एक। बा–30
प्रति उत्तर सड़सिन्ह–प्रत्युत्तर रूपी सड़सियों से। लं–23
प्रति उपकार–बदले में उपकार। सुं–32
प्रतिकूला–विरोध में। बा–183
प्रतिछाँही–परछाँही, प्रतिबिंब। बा–325
प्रतिपच्छिन्ह–(पापरूपी) शत्रु। अ–105
प्रतिपाद्य–बोधनीय, कमनीय, उपासनीय। उ–61
प्रतिपाला–पालन किया। बा–142
प्रतिपाली–पाला हैं, पाली हुई। अ–59
प्रतिबिंब–परछाँही। अ–47
प्रतिभट–वीरता में समान, जोड़ का योद्धा। अ–180
प्रतिमा–मूर्ति। बा–288
प्रतिलाभ–प्रत्येक लाभ पर। बा–108
प्रतीति–विश्वास। बा–23
प्रतोषी–संतुष्ट किया। बा–357
प्रथम–पहले। बा–2
प्रथम गति जाकी–जिसकी पहली गति होता है(जो दान देने में व्यय होता है)। उ–127

प्रथम जुग—पहले युग में(सतयुग में)। बा—27

प्रथम तेहि भरई—सबसे पहले वह (रज) उसी पवन को भर देता है। उ—106

प्रथमहि—पहले ही। बा—170

प्रदोषबल—सायंकाल का बल। लं—46

प्रनत—शरणागत, भक्तों। बा—13

प्रनतपाल—भक्तों का पालन करने वाले।

प्रनतारति—शरणागत भक्तों के दुःख को, शरणागत के रक्षक। बा—70/138

प्रनय—नम्रता। अर—21

प्रनवउँ—प्रणाम करूँ। बा—4

प्रपंच—संसार, दृश्य जगत। बा—22

प्रपंचु—सृष्टि, सांसारिक मायाजाल। बा—6

प्रबंध—रचना। बा—14

प्रबल—घोर, शक्तिशाली। बा—25

प्रबलता—प्रकोप। बा—137

प्रबोध—संतोष, ज्ञान। बा—31

प्रबोधक—बताने वाले। बा—21

प्रबोधन—समझाने वाले। अ—60

प्रबोधा—समझाया। बा—63

प्रबोधि—समझा बुझाकर। उ—10

प्रभंजन जाया—वायु पुत्र हनुमान जी। सुं—19

प्रभंजनसुत—वायुपुत्र हनुमान जी। लं।—56

प्रभु—ईश्वर। बा—13

प्रभु—शिवजी। बा—63

प्रभु—आप (परशुराम जी को सम्बोधन)। बा—277

प्रभुता—महत्त्व, महिमा, ऐश्वर्य। बा—13

प्रभुताई—बड़ाई, महिमा को। बा—12

प्रभुन्ह कर—स्वामी या बड़ों का। बा—89

प्रभु पद पीठ—प्रभु की चरण पादुकओं की। अ—324

प्रभुहि—प्रभु (लक्ष्मण जी) को। अ—75

प्रमथ—शिवगण। लं—88

प्रमदा—युवती, रमणी। अर—44

प्रमादू—आलसय(कर्त्तव्य कर्म में त्रुटि)। अ—77

प्रमान—सत्यता। बा—75

प्रमोद—आनन्द। बा—39

प्रयान्ति—जाते हैं(प्राप्त करते हैं)। अर—4

प्रयोजन—मतलब, आवश्यकता। बा—162

प्रलंब—लम्बी। बा—106

प्रलय—विनाश। बा—163

प्रलापी—बकवास करने वाले। लं—25

प्रबरषन—वर्षा। कि—12

प्रवाना—प्रमाणित, सत्य, प्रमाणित है। बा—123

प्रवाहू—धारा। बा—39

प्रविसहिं—भीतर जाता है। अ—23

प्रवीनू—प्रवीण, चतुर। बा—9

प्रवेस—घुसे, आये। बा—154

प्रस्थिति—प्रस्थान, यात्रा। सुं—35

प्रस्न—प्रश्न, सवाल। बा—41

प्रसंग—कथा। बा—35

प्रसंगा–साथ से। बा–7
प्रसंसा–बड़ाई, स्तुति। बा–88
प्रसन्नाननं–प्रसननमुख। उ–108
प्रसव–सन्तान उत्पत्ति, जनन। बा–97
प्रहरषे–हर्षित हुआ। उ–12
प्रह्लादपति–नृसिंह भगवान। लं–81
प्रसाद–प्रताप, आशीर्वाद। बा–25
प्रसादू–कृपा की। बा–26
प्रसिद्ध–विख्यात, मशहूर। बा–103
प्रसीदति–प्रसन्न होते हैं। उ–108
प्रसूती–पैदा करने वाली। बा–1
प्रसून–फूल, पुष्प। बा–227
प्राकृत–संसारी। बा–11
प्राकृत–ईश्वर, बुद्धि प्रदत्त। बा–14
प्राकृत नर अनुरूप–साधारण मनुष्यों के से। उ–72
प्राकृत सिसु–साधारण बच्चों की तरह। बा–77
प्राकृतहु–अनायास, अपने आप। अ–311
प्राची–पूर्व दिशा। बा–16
प्रात–सवेरे। बा–44
प्रात क्रिया–सवेरे की क्रिया(शौच स्नानादि)। बा–330
प्रात प्रगट–सवेरा हो गया। लं–16
प्रान प्रान के–प्राणों के प्राण। अ–56
प्रान पति–अपने स्वामी शिवजी। बा–74
प्रानी–मनुष्य। बा–113
प्राविट–वर्षा। लं–46
प्रिय–प्यारा। बा–16
प्रिय केरे–प्यारे विष्णु (इष्टदेव के)। बा–93
प्रिय वचन–प्यारे वचन। बा–93
प्रिय वादिनि–प्रिय वचन बोलने वाली मंथरा। अ–15
प्रिय संत अनंत सदा–संत और भगवान सदा प्रिय। उ–14
प्रियानुजं –प्रिय छोटे भाई (वामनजी) अर–4
प्रीति–प्रेम। बा–9
प्रेत–मृतात्मा। बा–7
प्रेम विवस–प्रेम के विशेष वश होकर। बा–336
प्रेम रस–दूध। अ–52
प्रेरक–प्रेरणा देने वाले। अ–44
प्रेरित काल–काल की प्रेरणा से। उ–109
प्रेरे–प्रेरित किये हुये, मुड़े, झुके, निर्देशित। बा–31
प्रेरे–फेंके हुये। लं–32
प्रोक्तं–कहा गया। उ–108
प्रौढ़–सयाना। अर–43
प्रौढ़ि–प्रौढ़, युवा। बा–23
पृथु राज–ऐक राजा हुये हैं जो दूसरों की बुराई हजार कानों की श्रवण शक्ति से सुन लेते थे। बा–4
पृथक पृथक–अलग अलग। बा–88
पृष्ठ–पीठ, पीछे, पेज (पन्ना)। सुं–35

—फ—

फंद—फंदा, जाल (तैयार कर रही हों) अ—26

फनि—साँप। बा—3

फनिकन्ह—सर्पों ने। बा—358

फनीस—शेषनाग जी उ—22

फर—फल, नोक। बा—210

फरइ —फलता है। लं—16

फरकत—फड़कने लगे। बा—136

फरकहिं—फड़कने लगे। अ—7

फरत—फलते हुये। अ—29

फरहार—फलाहार। अ—279

फराक—अलग चौड़ा स्थान। उ—29

फलित—फली हुई। अ—1

फिरत—स्वच्छन्द घूमते हैं।बा—25

फिरब—लौटूँगा। अ—62

फिरहु—घूम रहे हो। बा—159

फिराये—घुमाये। सुं—52

फिरि—बायीं ओर से घूम कर, उलटकर। बा—303

फिरिअ—लौटिये। बा—340

फिरि आव—घेरे हुये हैं । बा—178

फिरि गये—लौट गये। सुं—53

फिरि फिरि—बारंबार। बा—303

फिरि फिरि—पीछे फिर फिर कर। उ—77

फिरि बैठी—मुँह फेर कर बैठ गई। सुं—13

फिरिहहिं—घूमते फिरते रहेंगे। बा—43

फिरे—वापस लौटे। बा—309

फिरै—लौटना। बा—340

फुर—सत्य। बा—15

फुरि—वास्तव में। अ—34

फुलाउब गाला—गाल फुलाना (अप्रसन्न होना)। अ—35

फूलत फलत—फूलने फलने के समय। अ—59

फूला—फूल, पुष्प। बा—3

फूली—गदगद (रूप के गर्व में) बा—135

फेरा—ओर।अ—6

फेरिअ—लौटा दीजियें। अ—82

फेरी—बदल दी। बा—177

फेरू—परिक्रमा। बा—292

फेरे—लौटाया। बा—340

फोरि—फोड़कर। लं—41

फोरै जोग—फोड़ने योग्य। अ—16

—ब—

बंका—बाँका, श्रेष्ठ, वीर। बा—178

बंगा—उद्दंड। लं—26

बंध—बाँधने की रस्सी। बा—288

बंधब—बन्धन। बा—279

बंधु—भाई (लक्ष्मण)। बा—49

बकउ—बगुला भी। बा—3

बकसीस—बख्शीशें, इनाम। बा—306

बकिहि—बगुली। अ—20

बकुल—मौलसिरी। बा—344

बगध्यानी—बगुलाभक्त (कपटी)। बा—162

बगमेल—बाग (लगाम) छोड़कर (सरपट)। बा—305

बगरे—फैले। उ—102
बचावन—पढ़वाने लगा। सुं—56
बच्छ—वत्स। अ—68
बच्छल—वत्सल, पुत्रवत् प्यार करने वाले। सुं—43
बछल—वत्सल, प्यारे। बा—146
बछलता—वत्सलता, प्यार। बा—218
बजनिआ—बाजे वाले। ब—351
बजाई—युद्ध का डंका बजा कर। ब—154
बजारू—बाजार। अ—6
बटाऊ—पथिक। अ—126
बटु—ब्रह्मचारी। अ—108
बटोरा—इकट्ठा किया। बा—25
बटोही—पथिक। अ—123
बड़भागी—बड़ा भाग्यवान। अ—56
बड़वानलहि—समुद्र की अग्नि। सुं—33
बड़ाइ कै—बड़ाई करके। बा—326
बड़ेहि—बड़े का ही। अ—10
बतकही—वार्तालाप, वाणी को। बा—9
बतासा—वायु। बा—74
बदर—बेर। अ—125
बदरीवन—बदरिकाश्रम। कि—25
बनइ न बरनत—वर्णन नहीं की जा सकती। बा—213
बन निधि—समुद्र। लं—5
बनाई बहु बजन्हि खचे—बहुत से खरादे हुये हीरे से जड़े। उ—27
बनाई—सजी हुई (गहने कपड़ों से)। बा—330
बनाऊ—सजावट। बा—302
बनाव—साज—प्रबन्ध। बा—95
बनावन—सजाने के लिये। अ—6
बनिक—बनिया। बा—3
बने बहु बाना—बहुत प्रकार की वेशभूषा। अर—38
बयऊ—बो दिया। अ—19
बयर—शत्रुता। बा—14
बयारी—हवा। अ—62
बये न जामहिं धान—बोया हुआ धान उगता नहीं। उ—101
बरई—जल रही हो। बा—230
बर करि—बल पूर्वक जबरदस्ती। उ—5
बरजोर—जबरदस्ती। अ—299
बरतोरू—बालतोड़ (फोड़ा)। अ—27
बरन—(श्री राम का) श्याम रंग। अ—220
बरननि—अक्षरों। बा—20
बरनव—वर्णन करना ही। बा—42
बरनिसि—वर्णन किया। उ—67
बरनी—वर्णन किया। बा—2
बरबस—जबरदस्ती। बा—96
बरषासन—वर्ष+अशन – (वर्षाशन) वर्ष भर का भोजन। अ—80
बराये—बचाते हुए। अ—123
बरिआई—जबरदस्ती, बरबस, मजबूर करके। बा—7
बरिआता—बारात। बा—95
बरिआरा—जबरदस्त, बड़ा। बा—165
बरिडोरी—डोरी बटकर। सुं—48
बरिबंड—प्रचंड, बलवान। अर—25
बरिसा—बरसाते है। सुं—15
बरु—चाहे, भले ही। बा—71
बरु—दूल्हा। बा—71/95

बरुक—भले ही, चाहे। अ—47
बरोरू—सुन्दरी। अ—26
बर्बर—असभ्य। लं—25
बलकावा—आपे से बाहर होना। उ—71
बलरासि—अत्यंत वीर। सुं—54
बलहीन—कमजोर। बा—181
बलाक—बगुला। बा—38
बलि—बलैया लेती है। बा—357
बलिभागा—बलि, मनौती। अ—8
बलिहि जितन—बलि को जीतने। लं—24
बलुभाषी—बल पूर्वक कहती हूँ। अ—19
बवा—बोया। अ—16
बसहँ—बैल। बा—95
बससोइ—वही रहता है। बा—178
बसहिं—रहने लगी। बा—58
बसाई—फैलती है, महकती है। बा—10
बसाई—वश चले। बा—64
बसाये—बसा दिया। बा—333
बसिहि—रह सकेगी। अ—60
बसीठी—दूत। अर—38
बसे—ठहरे थे। बा—333
बसेउ किसु गेह—किस का घर बसा है। बा—78
बसेरा—वास स्थान, निवास। अ—38
बह—बहती थी । बा—125
बहइ—चलता। बा—280
बहु—बहुत अधिक । बा—8
बहुकालीना—बहुत समय के हैं। उ—32
बहुजाती—अनेक जातियों के, अनेक प्रकार के । बा—300
बहुताई—विस्तार। बा—321
बहुतेरे—अनेकों। बा—55
बहुबरन—रंग बिरंगे। बा—37
बहुबाहू—बहुत भुजाओं वाले (रावण)। अर—29
बहुमाना—अधिक आदर पूर्वक। बा—103
बहुरंग—अनेक रंगों वाले। बा—37
बहुरि—पुनः, फिर। बा—4
बहुरे—लौटे। बा—361
बहूटिन्ह—बधुओं। बा—354
बहूता—बहुत बड़ा। सुं—4
बहोरि बहोरी—वारंवार। बा—325
बहोरी—फिर। बा—16
बाँकी—टेढी। अ—117
बाँकुरा—कुशल। लं—18
बाँकुरे—बाँके वीर। बा—245
बाँचा—बचा, शेष रहा। बा—175
बाँची—बाँच कर, पढ़कर। लं—29
बाँझ—सन्तान रहित। बा—97
बाँची—बाँच कर, पढ़कर। लं—29
बाँझ—सन्तान रहित। बा—97
बाँझा—वन्ध्या, निपूती। अ—164
बाँधे विरद वीर—शूरता का बाना धारण किये हुये। बा—299
बाँहबल—भुजाओं के बल पर। अ—25
बाउ—वायु। बा—280
बाउर—पागल। बा—96
बाऊ—वायु। बा—191
बाग—वाणी। अ—41

बागन्ह–बगीचों में। अ–83
बागविलासा–डींग हाँकता है। सुं–57
बागहीं–वाणी से कहते है। लं–90
बागीसा–आकाश वाणी। बा–75
बागुर विषम–कठिन फंदा। अ–75
बाघ–शेर बबर। बा–38
बाच–बाँचों, पढ़ो। सुं–52
बाचत–पढ़कर, पढ़ते हुये। बा–91
बाज–बजने लगे। अ–7
बाजबधावा–बाजे बजने लगे। बा–172
बाजा–लड़ने लगे। सुं–19
वाजि–बाजी, घोड़ा। बा–156
बाट–रास्ता। बा–287
बाटपरइ–रास्ता ही रूक जाएगा। अ–100
बाटिका–फुलवाड़ी। बा–37
बाति–बत्ती। अ–59
बातुल–पागल, मदहोश। बा–115
बादि–व्यर्थ। बा–14
बाधी–विघ्न, अड़चन। बा–181
बाधी–रुक गई। बा–125
बान–वर्ण (रंग)। लं–79
बान चढ़इ–चमक आ जाती है। अ–205
बानी–वर्णन की हुई, भाषा। बा–3
बानी–बान, आदत। बा–186
बानीसमा–इस वाणी (समाचार) के समान। लं–107
बानैत–तीरंदाज। अर–38
बापुरो–बेचारा। बा–237
बायन–निमंत्रण। बा–137
बायें–प्रतिकूल (न मान कर)। अर–300
बारक–एकबार भी। अ–217
बारहबाटा–छिन्न–भिन्न। अ–212
बारे–बच्चे। बा–291
बारेहि–लड़कपन से ही । बा–198
बाल कवि–निम्न कवि। बा–14
बालकेलि–बाल लीला, लड़कपन के खेल। बा–198
बाल केहरि–सिंह के बच्चे। उ–77
बाल पतंग–बालसूर्य, उदित होता हुआ सूर्य बा–254
बाल बच्छ–जल्दी ब्यायी गाय का बछड़ा। बा–337
बालविधु–बाल चन्द्र, द्वितीया का चन्द्रमा, छोटा चाँद। बा–106
बाल विनय–बालक की प्रार्थना। बा–3
बाला–लड़की। बा–131
बास–गन्धस्थल, नाक। बा–118
बासन–बर्तन । अ–324
बासा–घर, स्थान। बा–24
बाहिज–बाह्य बाहरी। अर–30
बिंग्य–हँसी, उपहास। बा–93
बिंजन–भोजन, विभिन्न भोज्य पदार्थ। बा–173
बिंधि–विन्ध्याचल। अ–297
बिआनी–पशु की भाँति पुत्र जन्मा। अ–75
बिगोई–नष्ट हो गई। अ–23
बिगोए–डूबे हुये, ठगे हुये। बा–43
बिगोवा–दुर्दशा की। उ–96
बिचरत–घूमते थे, भ्रमणकर रहे थे। बा–48

बिछुरत—अलग (विछोह) होते ही। बा—16

बिडरि चले—तितर—वितर हो गए। बा—95

बिडारी—तितर—बितर कर दिया। लं—67

बिढ़इ—कमाकर। अ—161

बिनु—बिना। बा—4

बिनु गथ लये—बिना मूल्य ही। बा—326

बिनु फर सायक—बिना फल का एक बाण। लं—58

बिनु रागा—अनासक्त होकर। अ—324

बिनु सेएँ—सेवन (भजन) किये बिना। उ—124

बिरँव—पौधा, पेड़। अ—5

बिरव—विशेष शब्द करने वाला। बा—344

बिलाई—बिल्ली। अर—24

बिलाहिं—विलीन हो जाते हैं, खो जाते है, नष्ट हो जाते है। कि—15

बिलोएँ—मथने से। उ—49

बिवर—गुफा। कि—24

बिवरन भयउ—रंग उड़ गया। अ—29

बिवस—मजबूर। बा—115—वशीभूत। बा—133

बिबसहुँ—मजबूरी में, बिना इच्छा के भी। बा—119

बिस्तर सहित—बृहत् रूप से। बा—76

बिसरी—भूल गई। बा—233

बिसराइ—भुलाकर। बा—14

बिसराते—खच्चर। अर—38

बिसरावहीं—भूल जायें। अ—75

बिसरी—भूल गई। बा—74

बिसारी—भूल कर, भूल गये। बा—85

बिहरावा—बात टाल दी। सुं—22

बिहाई—छोड़कर। बा—11

बिहान—दूर नहीं होती। अ—96

बिहाना—प्रातः काल। बा—116

बीच पाइ—अवसर पाकर। अ—18

बीछी—बिच्छू। अ—57

बीता—पूरा हो गया। अ—57

बीती—समाप्त हो गई। बा—119

बुझाइ—समाझाकर, बताकर। बा—82

बुझावा—समझा दिया। बा—39

बुढ़ाई—बुढ़ापा। कि—16

बुताई—बुझेगी, शन्ति होगी। बा—246

बुद्धि पर—बुद्धि से परे। अ—126

बुध—बुद्धिमान, विद्वान। बा—10

बुध—चन्द्रमा का पुत्र। अ—123

बूझत—पूछँने लगे। बा—333

बूझा—पूछा। लं—8

बूझिका परेऊ—क्या सूझ पड़ा। अ—47

बूड़—डूब गया। बा—261

बूड़त—डूबते हुये। अ—149

बूड़हिं—स्वंय डूबते हैं। लं—3

बूड़ि—डूबकर। लं—22

बूते—बल द्वारा। बा—23

बेगारी—विगाड़ दी। अ—47

बेताला—भाट। बा—85

बेनि—त्रिवेणी। अ—205

बेनी—सरस्वती जी। बा—2

बेनी—वेणी (चोटी)। सु—8

बेनु–बाँस (बाँसुरी)। बा–288
बेनुमूल–बाँस की जड़ में। लं–10
बेरागा–विरक्त भाव से। उ–56
बेरिआँ–समय। बा–234
बेरे–बेड़ा, जहाज। उ–8
बेली–बेल। अ–1
बेसर–खच्चर। बा–300
बेसाहिं–खरीदकर। अ–30
बेहू–छेद। अ–262
बैठे करि थाना –अड्डा जमाकर बैठ गए। उ–118
बैना–वाणी, भाषा। बा–71
बैरी–शत्रु। बस–150
बोध–ज्ञान, सूझ। बा–109
बोधमयं–ज्ञानस्वरूप। लं–111
बोरति–डुबाती जाती है। लं–3
बोरहिं–डुबो देते हैं। लं–3
बोरहु–डुबो दो। अ–189
बोरि–सहित, डुबोकर। बा–160
बोलनि–बोलने से। बा–42
बोलाई–आमन्त्रित करके। बा–174
बोलाउब–बुलावेंगे। बा–310
बोलि–बुलाकर। अ–39
बोलि पठाये–बुला भेजा। बा–326
बोले–बुलावा निमन्त्रण। बा–62
बोहित–जहाज। बा–14
बौंड–बेल। अ–5
बौर–आम के फूल। बा–288
बौराए–पागलपन। बा–79
बौरानी–बावली, पागल । बा–141
बौरायहु–पागल कर दिया। बा–136
बौराह–पागल। बा–95
बौरे–पागल। बा–97
ब्रह्मआगार–ब्रह्मलोक। उ–13
ब्रह्मगिरा–आकाशवाणी। बा–74
ब्रह्मचर्ज–ब्रह्मचर्य। बा–84
ब्रह्मन्य देव–ब्राह्मणों के भक्त। बा–209
ब्रह्ममय–ईश्वर रूप। बा–85
ब्रह्मवर–परब्रह्म दूल्हा (श्री राम) ।बा–318
ब्रह्मवानी–आकशवाणी। बा–187
ब्रह्म विचार–ब्रह्मज्ञान। बा–2
ब्रह्म विवेक–ब्रह्मज्ञान। बा–23
ब्रह्मसर–ब्रह्मबाण। अर–2
ब्रह्मसुखहि–ब्रह्मानन्द, परमामन्द। बा–22
ब्रह्मसृष्टि–ब्रह्मा की रचना में। बा–22
ब्राता–समूह। सुं–39

–भ–

भंगा–टूटना। बा–268
भंजन–नष्ट करने वाले। बा–18
भंननिहारा–तोड़ने वाले। बा–271
भंजिहि–नष्ट करेंगे। बा–184
भंजी–नाश किया। उ–66
भंजउ–तोड़ दिया। बा–24
भँवर–लहर। बा–147
भइउँ–हुई। अ–12
भइसि–हुई है। अ–23
भएँ–होने पर, हो गये। बा–341
भक्त्या–भक्ति पूर्वक। उ–108

भगतकृत चेता—भक्त की करनी याद करके। उ—19

भगत मन कै—भक्तों के मन की। अ—10

भगान—भागना। अ—230

भगिनी—बहनें। बा—63

भच्छन करऊँ—खाऊँगा। कि—27

भच्छाभच्छ—भक्ष्य+अभक्ष्य खाने योग्य व न खाने योग्य। उ—99

भजहिं—सेंवन करती है। उ—98

भजे—भजता हूँ, शरण ग्रहण करता हूँ। उ—14

भजेऽहं—भजे+अहं— मैं आपकों भजता हूँ। उ—108

भट—वीर, पराक्रमी। बा—4

भटभारे—अत्यन्त बलवान। बा—179

भटभेरे—ठुकरा देते है। उ—120

भटमानी—वीरता के अभिमानी। बा—250

भड़िहाई—चोरी के लिये। अर—28

भदेस—भद्दी, अनुचित। बा—10

भनंता—वर्णन करते हैं, बतलाते हैं। बा—192

भनिति—रचित, कथन । बा—8

भनी—कहते हुए। बा—327

भनु—कहते हो। लं—9

भने—कहा है। उ—13

भभरि—घबड़ाकर। अ—230

भयंकर—डरावने। बा—38

भय—डर। बा—17

भय—जन्म मरण रूपी भय। बा—31

भयउ—हो गई। बा—81

भयभीता—डरकर। बा—182

भय मारुत ग्रसे—भय रूपी पवन से ग्रस्त हो कर । लं—32

भयाकुल पाहि जनं—आवागमन के भय से व्याकुल इस सेवक की रक्षा कीजिए। उ—14

भयातुर—भयभीत। बा—186

भयातुरे—भय से व्याकुल होकर। लं—96

भयावन—भयानक। अ—38

भये जे—जो हो चुके हैं। बा—14

भर्ता—स्वामी, पति। लं—7

भरतहिं—भरत को। अ—55

भरतागवन—भारत जी का ननिहाल से वापस आना उ—65

भरतानुज—शत्रुघ्न। उ—6

भरतारा—पति। बा—78

भरनी—मोरनी। बा—31

भरब—बिता दूँगी। अ—21

भरि—तक। बा—342

भरि नयना—अच्छी तरह। बा—206

भरोस—भरोसा, विश्वास। बास—187

भ्रू—भ्रकुटी, भौह। उ—108

भल—अच्छी। बा—7

भलि—शुभ। अ—11

भलेहि—बहुत अच्छा। बा—332

भव—संसार, उत्पन्न होना। बा—1

भवकूपा—संसार रूपी कुएँ में। बा—192

भवचापा—शिवजी का धनुष। बा—254

भवतव्यता—होनहार, होनी। बा—159

भवदंघ्रि—आपके चरणों में। उ—14

भवन—घर। बा—10
भव प्रवाह—जन्म मृत्युके चक्र में। लं—110
भवपासा—संसार के बन्धन। उ—126
भवभामा—शिवजी की पत्नी, पार्वती जी। बा—100
भव भूल परे—सांसारिक विषयों में भूले पड़े हैं। लं—111
भव रोग—जन्म मरण रूपी रोग। उ—14
भववारी—भ्रम पूर्ण जल (संसार रूपी)। बा—43
भवसिंधु—भवसागर। बा—25
भवहिं—शंकर जी को। बा—101
भवाँई—घुमाकर। लं—18
भवानी—पार्वती जी। बा—15
भवानीपतिं—भवानी के पति श्री शंकरजी। उ—108
भवाम्बुनाथ—संसार सागर मंथन हेतु। अर—4
भवार्णवे—संसार रूपी समुद्र में। अर—4
भाँग—भाँग जैसे निकृष्ट। बा—26
भाँड़े—सने हुये। बा—12
भाँति—प्रकार। बा—13
भा—पैदा हो गया। बा—134
भाइहि भाइहि—दोनों भाइयों में। बा—153
भाई—अच्छा लगा। बा—13
भा उर दाहू—हृदय जल उठा। अ—13
भाऊ—भक्ति, लगन, प्रेम। बा—39
भाएँ—समझ से। बा—62
भाग्य भाजन—भाग्य के पात्र, बड़भागी। बा—324
भाग—भाग्य। बा—8
भाग—भाग निकला हो। अ—75
भाग भाजन—भाग्यवान। अ—88
भागबस—सौभाग्यवश। अ—75
भागी—पाने वाले। बा—15
भागू—भाग, हिस्सा। बा—267
भाजत—भाग जाने पर। उ—77
भाजन—पात्र। बा—240
भाजनु भयहु—पात्र हुये। अ—14
भाजहीं—भाग जाते हैं। बा—324
भाजि चले—भाग जाते हैं। बा—203
भाजी—भागने लगा। बा—157
भाटा—चारण, काव्य पाठ करने वाले। बा—214
भाथा—तरकस, बाण रखने वाला। बा—209
भाथी—भाथ, तरकस। अ—90
भानस—रसोइया। अर—26
भानी—तोड़ दी। बा—292
भानु—सूर्य। बा—19
भानुकुलकेतू—दशरथजी। बा—304
भानुकुलनाथा—श्री रामचन्द्रजी। अ—68
भानुकुलभूषनहिं—श्री राम को। बा—233
भानु कोटि प्रकाशं—करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाले। उ—108
भामिनी—पत्नी। लं—119
भायँ—अच्छे भाव, प्रेम से। बा—28
भायप—भाईपन। बा—42

भार—बोझ। अ—170
भारती—सरस्वती, वाणी। बा—345
भार बहहिं—बोझ लादकर चलते हैं। लं—29
भारभर—बोझ उठाने में। बा—31
भारू—भार, बोझ। अ—71
भाल—मस्तक, ललाट। बा—32
भाल बालेन्दु—ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा। उ—108
भालु—भाल, रीछ। उ—62
भावती—भली लगती। बा—147
भावगम्यं—भाव द्वारा प्राप्त होने वाले। उ—108
भावत—अच्छा लगने वाला। अ—29
भावनी—अच्छी लगने वाली। बा—10
भाव बच्छ सिसु पाइ—आस्तिक भाव रूपी छोटे बछड़े को पाकर। उ—117
भावा—अच्छी लगी। बा—62
भाविउँ—भावी (भविष्य) को भी। बा—70
भावी—होनहार। बा—56
भाषा—वर्णन किया। बा—13
भाषाबद्ध—छन्द बद्ध रचना। बा—31
भाषि—कहकर, बोलकर। लं—118
भास—प्रतीत होता हैं। बा—117
भिंडिपाल—छोटा डंडा। लं—40
भिन्न—अलग। बा—15
भिनुसारा—सवेरा। अ—37
भिन्न—अलग। बा—18
भिन्नमभिन्न—भिन्नम्+अभिन्न=अलग भी और अलग नहीं भी। लं—111
भिन्न सेतु—भिन्न भिन्न मार्ग, मर्यादा से च्युत। उ—100
भीति—दीवार। बा—78
भीती—दीवार। बा—235
भीम—बड़ा, भयंकर। बा—32
भीम रूप—विशाल शरीर वाले। बा—183
भीर—भीरु, डरपोक। अ—183
भीरा—डर, दुःख। बा—97
भीरा—भीरु, प्रेम वश दुर्बल हृदय के राजा। अ—79
भीरु—डरी हुई, डरपोक। बा—270
भुअंगिनि—साँपिनि। बा—31
भुआल—राजा। बा—16
भुइँ भइ—पृथ्वी हो गई। अ—23
भुजंगा—सर्प। बा—92
भुज—बाहु, हाथ। बा—82
भुजगराज—शेषनाग। बा—109
भुज गहन अपारा—भुजाओं रूपी अपार वन को। लं—26
भुजदंडा—भुजायें, बाहुयें। बा—147
भुजबल—बाहुबल, शक्ति शाली। बा—153
भुजबल्ली—बाहुरूपी लता को। बा—327
भुजबीहा—बीस भुजा वाले। लं—34
भुलाहु—भूलो। बा—314
भुवन—लोक, ब्रह्माण्ड। बा—51
भुवन दस चारी—चौदह भुवन। बा—289
भुवि—पृथ्वी। बा—139
भुसुंडि—काकभुसुंडि जी ने। बा—120

भूँजब—भोग सकेंगें। अ—49
भूत—प्राणी। बा—115
भूतल—पृथ्वी। बा—1
भूति—विभूति, एश्वर्य, राख। बा—3
भूतिमय—ऐश्वर्यमयी। अ—306
भूधर—पहाड़। बा—65
भूधर—पृथ्वी को धारण करने वाले श्री राम। उ—34
भूधराकार—पर्वत के समान विशाल देह वाला। लं—65
भूपगृह—राजा शीलनिधि के घर को। बा—130
भूपति—राजा। बा—32
भूपति मनि—दशरथ जी। बा—330
भूपतिहि—राजा दशरथ को। अ—55
भूपरूप—राजा दशरथ रूपी। अ—34
भूपरूप—राज रूप। अर—10
भूपा—राजा, सम्राट। बा—141
भूमिधर—पर्वत। अ—62
भूमिनागु—केचुआ। बा—355
भूमिसुरजान—ब्राह्मणों की पालकी पर। अ—228
भूर्जतरू सम—भोज के वृक्ष के समान। उ—121
भूरि—अनेकों, बहुत। बा—1
भूरिभाग—बड़े ही सौभाग्य वाला। अ—2
भूष—भूषित कर रहा है। बा—325
भूषनधारी—भूषणों के समान धारण करने वाले। बा—8
भूषित—सजी हुई। बा—9
सुर—ब्राह्मणों का। बा—173

भृकुटि—टेढ़ी दृष्टि, निगाह, भौंह। बा—147
भृकुटि विलास—भौंहों का चलना। लं—15
भृंग—भृंगी नामक कीड़ा। अर—25
भृंगा—भौंरे। बा—126
भृंगिहि—भृंगी (सेवक) को। बा—93
भृगुकुलकेतू—परशुराम जी। बा—271
भृगुनाथ—परशुराम जी। बा—41
भृगुपति—परशुराम जी। बा—260
भृगुवर—परशुराम जी। बा—276
भेई—तर कर दिया। अ—244
भेउ—भेद। बा—133
भेक—मेढक। बा—31
भेंट—मिलन, मुलाकात। बा—57
भेंटहिं—भेंटने लगी, मिलने लगी। बा—337
भेंटहु आई—आ मिलो। अ—57
भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज—भेद नाचने वाले के नृत्य समाज में हैं। उ—22
भेरि—भेरी (बाजा)। बा—263
भेषज—दवा, औषधि। बा—7
भै—उत्पन्न हुई। बा—41
भै जग विदित—संसार को ज्ञात हो गया। बा—65
भोग—संसारी भोगों में। बा—17
भोगावति—भोगावती पुरी, पाताललोक, जो नाग कुल का वास स्थल। बा—178
भोगी—प्राप्त करने वाले। बा—26
भोगी—विलासी। बा—87

भोगू—संसारी विषय विलास। बा—74
भोर—सवेरा। बा—330
भोरा—भूलकर भी। बा—5
भोरि—भोली, भूलने वाली। बा—9
भोरे—भूलकर, धोखे से। बा—283
भौतिक—सांसारिक। उ—21
भौमवार—मंगलवार। बा—34
भ्रम—भुलावा, सांसारिक जाल। बा—31
भ्रमति—भटक रही है। बा—108
भ्रष्ट—नष्ट, विनाश। बा—183
भ्राजहीं—सुशोभित हो रहे। लं—103
भ्राजा—सुशोभित था। बा—147
भ्रूसुनेत्रं विशालं—सुन्दर भृकुटी और विशाल नेत्र हैं। उ—108

—म—

मंगन—माँगने वाले, फकीर। बा—231
मंगल—कल्याण। बा—1
मंगल कलश—मंगल घट। बा—91
मंगल द्रव्य—कल्याणकारी पदार्थ। बा—288
मंगलायतन—मंगल का धाम (घर)। बा—361
मंच—सिंहासन। बा—244
मंजरि—मंजरी, लता, नया कोमल तुलसी। बा—346
मंजीर—पायजेब। बा—322
मंजु—सुन्दर। बा—1
मंजुल—सुन्दर। बा—1
मंडन—भूषण। अर—4
मंडलिहि—मंडली को। बा—341
मंडलीक मनि—राजाओं का शिरोमणि। बा—182
मंजु दृढ़ाई—विचार दृढ़ करके। आ—84
मंत्र महामनि—मंत्र और महामणि है (विषय रूपी सर्पदंश उतारने के लिये)। बा—32
मंत्रु—सलाह, राय। आ—184
मंद—मूर्ख, नीच। बा—28
मंद मंदतर—नीच से भी नीच। उ—121
मंदर—मथानी। बा—186
मंदरं—मंदराचल पर्वत। अर—4
मंदरु—मंदराचल पर्वत। बा—247
मंदाकिनी—मंदाकिनी नदी (चित्रकूट में बहने वाली)। बा—31
मंदिर—अपने घर। बा—304
मकरंद—पुष्प रस। बा—37
मकरंद—मकरंद रस (गंगाजी)। बा—324
मकर—मछली, मगर, दशवीं राशि। बा—147
मकरी—मगर (मादा)। लं—57
मकु—चाहे। अ—28
मखसाला—यज्ञभूमि। बा—325
मखविधि—यज्ञ का तरीका। बा—27
मग—मगहर (जहाँ मरने से मोक्ष नहीं मिलता है) मार्ग। बा—6
मंगना—भीख माँगने वाले। उ—102
मगन—प्रसन्नचित्त। बा—25
मगन—समाकर। अ—232

मग माही–मार्ग में ही। बा–55
मगँह–मगध देश में। अ–43
मघवा–इन्द्र। आ–301
मघवान–इन्द्र। आ–302
मघामेघ–मघा नक्षत्र के बादलों ने। लं–73
मज्जन–स्नान। बा–3
मज्जहि–स्नान करें। बा–2
मजूरी–मजदूरी। अ–102
मझारी–बीच में। अ–178
मत्त–मतवाला। बा–182
मत्सर–डाह। अर–44
मत–विचार, निर्णय। बा–23
मतवारे–मतवाले, नशेबाज। बा–86
मति–बुद्धि। बा–3
मतिअकुंठ–निर्वाण बुद्धि। उ–63
मतिधीरा–स्थिर बुद्धि वाले। बा–53
मतिभ्रम–बुद्धि भ्रमित। बा–201
मति सोई पाकी–वही बुद्धि धन्य और परिपक्व है। उ–127
मते–अनुसार। बा–172
मते–मत में। अ–233
मथत सिंधु–सागर मंथन में। बा–136
मथन–मंथन करने वाली। लं–28
मद–नशा, गर्व। बा–35
मद उतरि गये–नशा दूर होने पर। बा–86
मदन–कामदेव। बा–85
मदन अंध–कामान्ध। बा–85
मदनारी–शिवजी। उ–55
मदा–मद, अहंकार। उ–14
मध्य–बीच में। बा–100
मध्य दिवस–दोपहरी। बा–191
मध्यम–बीच के। बा–240
मधु–मकरंद रस। उ–23
मधु–शहद। अ–13
मधु–बसन्त ऋतु। अ–123
मधुकर–भौंरा। बा–10
मधुप–भौंरा। बा–17
मधुपर्क–दही+घी+जल+शहद+चीनी (पाँचों वस्तुओं का मिश्रण)। बा–323
मधुमासा–चैत्र महीना। बा–34
मधुर–मीठी। बा–9
मधुरता–मिठास। बा–36
मनजात–कामदेव। बा–337
मन्मथ–कामदेव। बा–90
मन्मथारी–कामदेव के शत्रु भगवान शंकर। उ–108
मन क्रम बानी– मनसा– वाचा– कर्मणा। बा–47
मनतेउ ओहू–उसे भी (न) मानता। लं–61
मनपर–मन से परे। उ–13
मनभावतो–मनचाहा। उ–23
मनभावा–मनचीता। अ–27
मनसम्भव–मन से उत्पन्न होने वाले। लं–111
मनसहिं–इच्छा में। बा–316
मनसा–हृदय से। बा–230
मनसिज–कामदेव। बा–85
मनाग–थोड़ा भी। बा–145
मनाव–मनाते हैं। अ–44

मनि—मणि (सर्प के होते है)। बा—11
मनि—मोती। बा—37
मनि—शिरोमणि। अ—58
मनिआकर—मणियों की खानें। बा—65
मनिआरा—मणियों से जगमगा रहे थे। बा—191
मनिगन—मणियों का समूह। बा—1
मनिजाला—असंख्य मणियों की झालरें। बा—21
मनिदीप—मणि का दीया। बा—21
मनिभवन—मणिजटित घर। बा—178
मनिमानिक—मणि मोती आदि । बा—1
मनि सोपान—मणियों की सीढ़ियाँ। उ—56
मनिहार—मणियों का हार। बा—199
मनुज—मनुष्य। बा—49
मनुज अहारी—नरान्तक (मनुष्य भक्षक)। लं—62
मनुज रूप—मनुष्य का रूप धारण किये हुये। बा—196
मनुजा—मनुष्यों को। उ—102
मनुजादा—राक्षस। लं—33
मनुमारे—मनमारे, उदास। अ—39
मनुसाई—पुरुषत्व, बहादुरी। लं—31
मनोज—कामदेव। बा—50
मनोभव—कामदेव। बा—86
मनोभूत—कामदेव। उ—108
मनोमल—मन का मैल। बा—43
मनोमल हरनी—मन के मैल दूर करने वाली। उ—129
मनोरथ—कामना, इच्दा। बा—108
मनोरम—सुन्दर। बा—37
मनोहर—सुन्दर। बा—15
मनोहरायत—सुन्दर चौड़ी छाती। लं—86
मनोहरताई—सुन्दरता। बा—40
मम—मेरी। बा—10
मम—ममता। अ—225
ममता—अपनापन। बा—13
ममताजहि—ममता का नाश करने वाले। उ—30
ममता ताग बटोरी—ममत्वरूपी तागों को बट कर। सुं—48
ममताहन—ममता को मारने वाला। उ—51
मयंक—चन्द्रमा। बा—147
मयंद—एक वानर का नाम। बा—54
मय—एक राक्षस का नाम। बा—178
मयतनया—मन्दोदरी। अर—46
मयत्री—मित्रता। अर—46
मयन—कामदेव। बा—1
मयसुता—मन्दोदरी। लं—8
मयूखन्हि—अमृतमयी किरणें। उ—23
मर्कट—बन्दर। बा—134
मर्दन—नष्ट करने वाले। बा—1
मर्दि—मर्दि—मसल—मसलकर। सुं—18
मरकत—पन्ना (मणि)। बा—288
मरजादा—समाजिक नियम। बा—64
मरनसील—मरने वाला। बा—335
मरनिहार—मृत्यु के निकट। बा—275
मरम—रहस्य। बा—48
मरमठाहरु—मर्मस्थान। अ—25
मरम पोंछि—मर्मस्थल (घाव) पोंछकर। अ—160

मराएन्हि—मरवा डाला। बा—79
मरायल—मार खाने वाले। लं—97
मराल—हंस। बा—3
मराली—राजहंसिनियाँ। अ—246
मरिहँउ जाई—प्राण दे दूंगा। बा—136
मरु—मारवाड़ राजस्थान। बा—6
मरुगर काटि—गला काटकर मरना, आत्म हत्या कर लें। लं—33
मरुत उड़ाव—जब पवन उसे (रज को) उड़ाता है।(ऊँचा उठाता है)। उ—106
मरुत उनचास—उन्चासों पवन। सुं—25
मरुत थकित—हवा रुक गई। बा—79
मरुधरनि—मरुभूमि में। अ—250
मलकोस—पापों का खजाना। अर—6
मलमूल—पाप की जड़। बा—27
मलय—चन्दन। बा—10
मलहरनी—पाप हरने वाली। बा—1
मलाकर—मल+आकर=पाप की खान। लं—71
मलान—म्लान, दुःखी। बा—53
मलायतन—पापों का घर। लं—121
मलायन—पाप के घर। लं—39
मलीन—बदनाम, धीमी, मैला। बा—28
मलीन अपी—नीच जाति के होने पर भी। उ—101
मलीना—उदास हो गये, दुःखी हो गये। अ—321
मलेछ—म्लेच्छ, अनार्य, दुष्ट। अर—29
मष्ट—संस्कारशून्य, उदासी। सुं—37
मसक—मच्छर। अ—232
मसकहिं—मच्छर को। उ—122
मसखरी—हँसी, दिल्लगी। उ—98
मसान—श्मशान। बा—10
मसि—स्याही। बा—7
महतारी—माता। बा—102
महा—अत्यन्त। बा—39
महाकाल कालं—महाकाल के भी काल। उ—108
महागद—महान औषध। उ—14
महाजन—प्रतिष्ठित जनों को। बा—340
महाछवि—अतीव सुन्दर (सीता जी)। बा—264
महादानि अनुमानि—बहुत बड़ा दानी समझकर। बा—148
महाद्रुमायुध—बड़े—बड़े वृक्ष ही उनके हथियार। लं—79
महादोउ राज—दोनों महाराजा जनक और दशरथ। बा—320
महान—विष्णु के लिये। लं—15
महानद सोन—विशाल नदी सोनभद्र। बा—40
महानल—प्रचण्ड अग्नि। लं—27
महानिधि—बहुत बड़ी सम्पत्ति। बा—209
महामंत्र—राम मंत्र। बा—19
महामत्त—अत्यन्त मतवाला। बा—256
महामनि—मूल्यावान मणियाँ (रत्न)। बा—305
महारिषि—महर्षि लोमष। उ—114
महावन—घनघोर जंगल। बा—157
महाविटप कोटर महँ—बड़े भारी पेड़ के खोखले में। उ—107

महावीर—हनुमान जी। बा—17
महि—पृथ्वी। बा—202
महिगत—पृथ्वी पर गिरा। बा—36
महिदेव—ब्राह्मण। बा—6
महिघर—पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग जी (लक्ष्मण जी)। अ—126
महिनख लिखन लगी—पैरों के नखों से पृथ्वी कुरेदना। अ—281
महिप—राजा (दशरथ)। बा—331
महिपाल—राजा। बा—28
महिभार विभंजन—पृथ्वी का भार उतारने वाला। लं—111
महिभारा—पृथ्वी का दुःख, पृथ्वी का भार। बा—48
महिमा—बड़ाई। बा—3
महिरज—पृथ्वी के रजकण। उ—52
महिष—भैंसा। सुं—3
महिषी—भैंस। बा—333 रानी।
महिषेसु—महिषासुर दैत्य। बा—47
महिषेसा—यमराज। बा—4
महीधर—पर्वत। बा—156
महीप—राजा। बा—134
महीप कुमारा—राजकुमार लक्ष्मण। बा—272
महीपति—राजा। अ—272
महीपति मुकुटमनि—राजाओं के मुकुट मणि दशरथ। बा—291
महीस—राजा (प्रतापभानु)। बा—157
महीस किसोर—राजपुत्र (लक्ष्मण)। बा—272
महीसुर—ब्राह्मण। बा—2
महेस—शिवजी। बा—12
महेसहि—महादेव जी को। बा—44
महोदर—एक राक्षस। लं—62
माँजा—पहली वर्षा का फेन। अ—153
माखा—विचार करके। बा—87
माखी—मक्खी, मधुमक्खी। बा—4
माखे—तमतमाये। बा—250
माँगउँ—माँगता हूँ। बा—342
मागध—भाट, बन्दी। बा—194
मागने—मंगनों को, फकीरों को। बा—340
माघमकर गति रवि—माघ में सूर्य मकर राशि पर जाते हैं। बा—44
माची—फैली है। बा—16
माजहि—पहली वर्षा के फेन को। अ—54
मातलि—इन्द्र का सारथी। लं—89
मातहि—मतवाले हो जाते हैं। अ—231
माती—मतवाली। अ—275
माथा—मस्तक। बा—13
माथे पर—शिर पर। अ—315
माधव—वेणी माधव जी। बा—44
माधुरी—मीठी। बा—42
मान्डवी—भरत जी की पत्नी। बा—325
मान—अभिमान। उ—14
मानद—दूसरों को मान देने वाले। अर—45
मानस—मानसरोवर। बा—14
मानस—हृदय। बा—35
मानस चख—अन्तर्चक्षु, हृदय के नेत्र। बा—39

मानिअहिं—मानने योग्य हैं। अ—74
मानिक—हीरे, जवाहर आदि कीमती पत्थर। बा—11
मानिमराली—हंसिनी मानकर। अ—20
मानिबी—मानियेगा। बा—336
मापी—वदहवास हो गई असंतुलित हो गई। बा—54
मामभिरक्षय—माम्+अभिरक्षय=मेरी रक्षा कीजिए। लं—115
माय—माता। अ—69
माया—सांसारिक प्रपंच। बा—117
मायाछन्न—माया से ढका हुआ। अर—39
मायाधीस—मायापति। बा—117
मायामय—माया द्वारा रचित झूठे। बा—173
माया मोह पार—माया मोह से परे। उ—58
मायारहित—सांसारिक माया से अलग। बा—186
माया सम्भव भ्रम—माया से उत्पन्न भ्रम। उ—85
मायिक—माया का। अ—247
मार—कामदेव। बा—83
मारगन—बाण। लं—91
मारतहू—मारने पर भी। बा—273
मारब—मालवा क्षेत्र। बा—6
मारमुठभेरी—सामने से मारता है। अ—133
मारसि—मार। अ—34
मारसि गाइ—गाय को मार रही है। अ—36
मारसिगाला—गाल मारना, डींग हॉकना। लं—27
मारीचाहिं—मारीच नामक राक्षस को। बा—49
मारुत—हवा, वायु। बा—12
मारु—कामदेव। बा—247
माला—मालायें। बा—262
मालिका—मुंडों की मालायें। लं—93
मास—महीना। बा—19
माही—में। बा—5
माहुर—विष। बा—6
माहुर मीचू—विष और मृत्यु। अ—298
मिटिहि—मिटेगा। अ—36
मित प्रद—एक सीमा तक (सुख) देने वाले हैं। अर—5
मितभोगी—मिताहारी, कम भोजन करने वाला। अर—45
मिताई—मित्रता। उ—66
मिति—सीमा। बा—33
मिथ्यारंभ—आडम्बर रचता है। उ—98
मिथ्याबादी—झूठा। उ—73
मिथिलापति—जनक जी। बा—214
मिथिलेस किसोरी—सीताजी। अ—82
मिलनि—मिलने से। बा—42
मिलहि—मिलती हैं। बा—337
मिलति—मिलते हैं। अ—98
मिलेहि माझ—सब संयोग ठीक होने के बीच में ही। अ—47
मिस—बहाने। बा—61
मीचु—मृत्यु। बा—5
मीजहिं—मल रहे हैं। अ—76
मीत—मित्र। बा—4

मीन—मछली। बा—22
मीनगन—मछलियाँ। बा—334
मीनजुग—दो मछलियाँ। बा—258
मीला—मिलकर। लं—66
मुंडमालं—मुंडमाल पहने हुये। उ—108
मुंडित—मुंडे हुए। सुं—11
मुएँ—मर जाने पर। बा—261
मुएहि—मरे हुये को। लं—31
मुएहुँ—मृत, मरने पर भी। बा—86
मुकुटमनि—मुकुट में लगे मणि के समान। बा—20
मुकुटांगदादि—बाजूबंद आदि। बा—12
मुकुंदा—मोक्षदाता विष्णु। बा—186
मुकुत—मुक्त, मोक्ष। बा—123
मुकुता—मोती, गजमुक्ता हाथी के होता है। बा—11
मुकुताहल—मोतियों के समान। लं—12
मुकुर—शीशा। बा—11
मुखभंजन—मुख तोड़कर। लं—30
मुखर—बहुत बोलने वाली। बा—247
मुखर—गुंजार, स्वर, शब्द। अर—38
मुखहीन—बिना मुख वाला। बा—93
मुखागर—जुबानी (मुँह से)। सुं—52
मुखिया—प्रधान, सेनापतियों को। लं—45
मुठिका—घूँसा। सुं—4
मुद—मोद, सुख। बा—2
मुदरी—अँगूठी। अ—102
मुदा—हर्ष के साथ। लं—111
मुदित—आनन्दित होकर। बा—2
मुदिता—प्रसन्नता। अर—46
मुदिताँ—प्रसन्नता रूपी (मटकी में)। उ—117
मुदितायन—प्रसन्नता के घर। उ—38
मुद्रिका—अँगूठी। बा—327
मुधा—असत्य व्यर्थ। अ—285
मुनिंदा—मुनियों। बा—64
मुनि—वाल्मीकि मुनि। बा—14
मुनिचीरा—मुनियों के चीर सरीखी, वल्कल। बा—106
मुनिझारी—मुनि समूह। बा—210
मुनितिय—अहल्या (गौतम पत्नी)। बा—357
मुनिद्रोही—मुनियों का शत्रु। बा—210
मुनिनाथा—नारद। बा—127
मुनिनायकहिं—विश्वामित्र को। बा—214
मुनिपटधारी—मुनियों के वल्कल वस्त्र धारण कर। अ—324
मुनिराया—मुनिराज परशुरामजी। बा—278
मुनिवृन्दा—मुनियों के समूह। बा—45
मुनिवर्यकर—मुनियों का। बा—43
मुनिवरन्ह—श्रेष्ठ मुनियों ने। बा—324
मुनिवरहिं—मुनि श्रेष्ठ को। बा—30
मुनीस—मुनीश्वर। बा—64
मुनीस—नारद। बा—68
मुनीसा—मुनि वृन्द। बा—18
मुयेमारि—मरे हुये को मारकर। अ—301
मुरछित—बेहोश। बा—87
मुरा—झिझका, हिचका। लं—19
मुरिचले—पीठ दिखाकर भाग चले। अर—20
मुरे—पीछे भाग गये। बा—84
मुर्‌यो—मुड़ा, विचलित हुआ। लं—65

मुसुकाहीं—उपहासयुक्त मुस्करा रहे हैं। बा—135
मुँहमोरी—मुँह मोड़कर। अ—27
मूक—गूँगा। बा—1
मूढ़ा—मूर्ख। बा—47
मूर—मूलधन (पूँजी)। बा—27
मूरति—मूर्ति, प्रतिमा। बा—77
मूरतिमंत—मूर्तिमान, मूर्तिरूप। बा—78
मूरतिमंत भाग्य—मूर्तिमान भाग्य। अ—206
मूरिमय—मूल, जड़ी। बा—1
मूरी—जड़ी। उ—122
मूलक—मूली। बा—253
मूला—मूल, जड़। बा—3
मृग—हिरण, बाघ। बा—18
मृग—पशु (सुअर)। बा—157
मृगछाला—बाघम्बर। बा—268
मृगजल—मृग की भाँति झूठे जल का आभास। बा—246
मृगजाये—साधारण हिरणों से पैदा हुये हों। अर—37

मृगनायक—सिंह। लं—69
मृगपति—सिंह। लं—11
मृगमद—कस्तूरी। बा—194
मृगमाला—हिरनों की टोली। बा—303
मृगया—शिकार। बा—156
मृगराऊ—सिंह। अ—106
मृगराज—सिंह। बा—125
मृग लोग हिये—मनुष्य रूपी हिरणों के हृदय में। उ—14
मृगलोचनि—युवा स्त्री (हिरणो के समान नेत्रों वाली)। उ—70
मृगवृन्द—पशुओं के समूह। बा—138
मृगसाबक—हिरण के बच्चे के से। अ—8
मृगाधीस चर्माम्बरं—सिंह चर्म का वस्त्र धारण किये। उ—108
मृगी—हिरनी। बा—229
मृतक—मुर्दा,मरा हुआ। बा—145
मृतकधूम—मृतक की राख। लं—53
मृदंग—एक वाद्य (ढोलक आकार का आतोद्य वाद्य)। बा—263
मृदु—कोमल, मीठी। बा—2
मृदुगात—कोमल अंगो वाले। बा—223
मृदुचित—कोमल हृदय। लं—45
मृनाल—कमल की डंडी। बा—255
मृषा—झूठ। बा—51
मेकलसुता—नर्मदा। अ—138
मेकल सैलसुता—नर्मदा जी। बा—31
मेखला—कर्धनी। उ—22
मेघडंबर—बादलों के जैसा आकार। लं—13
मेचक—काले। बा—219
मेचकताई—कालापन। लं—12
मेटनिहार—नष्ट करने वाला। बा—68
मेटब—मेटूंगा। अ—68
मेदिनि—मेदिनी, पृथ्वी, धरती। अ—192
मेधा—बुद्धि। बा—36
मेरु—सुमेर पर्वत। बा—12
मेरुसम—मेरु पर्वत के समान विशाल। बा—175
मेलही—पहन लेते हैं। लं—81

मेला—डाल दिया। अ—302
मेलिहि—डालेगी। बा—245
मेली—झुकाया। बा—66
मेले—डाल दिये। बा—207
मेष—भेड़। लं—70
मैथिली—जानकी जी। लं—109
मैन—मयन, कामदेव। बा—106
मैना—पार्वती जी की माता का नाम। बा—68
मैनाक—एक पर्वत। अर—29
मोई—मोहित हो गई। अ—85
मोच्छू—पाँच प्रकार के मोच्छ (सालोक्य, सापीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि, सायुज्य)। कि0—26
मोचति—बहा रही है। अ—58
मोचन—नष्ट करने वाला। बा—2
मोचनि—छुड़ाने वाली है। बा—318
मोद—आनन्द। बा—1
मोदकन्हि—लड्डुओं से। बा—246
मोर—मेरे, मेरा। बा—342
मोरपंख—मोर क पंखो में दीखने वाली, नकली। बा—113
मोर मूढ़ता—ममता रूपी मेरी मूढ़ता। लं—56
मोरेहुँ—मुझे भी। बा—62
मोल—मूल्य देकर। बा—30
मोसन—मुझसे। बा—3
मोसो—मेरे समान। बा—28
मोहदल—मोहरूपी सेना। बा—25
मोहधरहिं—मोह का आरोप करते हैं। उ—73
मोह पर—मोह से परे। बा—199
मोहाप हारी—मोह को दूर करने वाले। उ—108
मोहि—मुझको। अ—67
मोही—मुझको। अ—3
मोहू—मुझको। बा—8
मौन—चुप। बा—16
मौलि—शिर पर। बा—167

—र—

रंक—दरिद्र, फकीर, भिक्षुक। बा—6
रंगन रोषू—न आसक्ति थी न द्वेष। अ—166
रंगभूमि—यज्ञ मंडप। बा—240
रंच—थोड़ा। अ—229
रंजनि—आनन्ददायक। बा—31
रंध्र—छिद्र। बा—113
रंभादिक—रंभा इत्यादि देवांगनायें। बा—126
रंग गये—रंग में रंग गये हैं। अर—46
रउरे—आप। अ—18
रखवार को—कौन रक्षा करने वाला। बा—84
रखवारा—बचाने वाला। बा—165
रगर—तपस्या, घर्षण। बा—81
रघुकुलतिलक—राम। बा—187
रघुकुल भानु—राम। बा—276
रघुकुमनी—भगवान राम। बा—51
रघुनन्दन—श्री राम। बा—24
रघुनाथ—श्री राम। बा—24
रघुनायक—श्री राम। बा—18
रघुपति—श्री राम चन्द्र जी। बा—18

रघुराई—श्री राम। बा—49
रघुवर—श्री राम चन्द्रजी। बा—9
रघुसिंघ—रघुकुल में सिंह समान राम लक्ष्मण। बा—234
रच्छक—रखवाले, पहरेदार,। बा—179
रच्छा—रक्षा। सुं—30
रचइ—सृजन करता है।। बा—73
रचहि—अच्छी तरह गढ़कर। लं—1
रचहु—सजाओ। अ—6
रचि—बनाकर। बा—188
रचित—एकत्रित, निर्मित किये हुए। बा—119
रचि—पचि—गढ़ छोलकर। अ—18
रज—धूलि। बा—2
रजत—चाँदी। बा—117
रजनिचर—राक्षस, रात में घूमने वाले। बा—7
रजनी—रात्री। बा—1
रजनीस—चन्द्रमा। उ—80
रजाई—आज्ञा। अ—39
रजायसु—आज्ञा। बा—355
रजु—रस्सी। बा—112
रत—तत्पर, लगा हुआ। अ—43
रतनदीप—रत्नों के दीपक। बा—356
रतनारे—लाल। बा—233
रतमल भार—पाप समूह में रत है। लं—56
रति—प्रेम, कामदेव की स्त्री। बा—3
रतिकाम—कामासक्त। ल—78
रतिनाथ—कामदेव। बा—84
रथांग—चकवे। अ—83
रद—दाँत। बा—147
रदपट फरकत—दाँत पीसने लगे। बा—252
रन—रण, युद्ध। बा—25
रनधीरा—युद्ध में कुशल। बा—153
रनरंगा—रण के उत्साह से पूर्ण लं—64
रम्य—सुन्दर। बा—44
रम्यता—सुन्दरता। बा—211
रम—रमण करे, मिल जाय। बा—80
रमानिकेता—विष्णु भगवान। बा—127
रमापति—विष्णु भगवान। बा—124
रमारमन—विष्णु भगवान। अ—273
रमाविलास—भौगैश्वर्य को। अ—324
रमासम—लक्ष्मी के समान। बा—247
रमा सी—लक्ष्मी जी के समान। बा—31
रमेउ—लग गया। अ—133
रमेस—लक्ष्मी पति विष्णु। उ—14
रव—शोर, ध्वनि। बा—86
रवनी—स्त्रियों के। बा—182
रव बाजी—घोड़े की टॉप। बा—157
रविउपरागा—सूर्य ग्रहण। लं—102
रविकर—सूर्य किरणें। बा—1
रविकुलनन्दन—दशरथ जी। बा—331
रवितनुजा—सूर्य पुत्री यमुना जी। अ—112
रविनन्दनि—सूर्य पुत्री यमुना जी। बा—2
रविमनि—सूर्य कान्त मणि। अर—17
रस—प्रेम, आनन्द, द्रव। बा—57
रसना—जीभ। बा—325
रसभंग—रंग में भंग। लं—13

रस–रस–धीरे। कि–16

रसलीन–रसास्वादन करते हुए। बा–22

रसा–पृथ्वी। अ–179

रसातल–पाताल। अ–179

रसाल–आम। बा–87

रसाला–मीठी, सुन्दर। बा–60

रसिक–आनन्द लेने वाला। बा–9

रसिक–चाहने वाली। अ–59

रँहसि–हर्षित होकर। अ–4

रँहसेउ–हर्षित हो उठा। अ–7

रहई–रहते हैं। बा–341

रहउ कि जाउ–रहे या चला जाय। अ–4

रहउ चढ़ाउब तोरब–शिव धनुष को चढ़ाना, फिर तोड़ना तो बाद की बात थी। बा–252

रहत–रहते हैं। बा–327

रहत–रहेंगे। अ–66

रहनि–रहने की रीति, ढंग। सुं–4

रहस्य–मर्म, भेद। बा–111

रहसि–एकान्त। सुं–36

रहसी–हर्षित हो गई। अ–43

रहित–हीन, भिन्न। बा–9

रहिहहिं–रह सकेंगे। अ–49

रहुअरगानी–चुप रह। अ–14

रहेउँ एहि घायें–इस घाव से भी जीता रह गया। अ–262

राउतिहि–निषाद राज को। अ–191

राउर–आपकी। बा–218

राउर बदि–आपके लिए। अ–314

राउर माँही–राजमहल में। अ–38

राऊ–राजा। बा–8

राका–पूर्णिमा। अ–325

राकेस–चन्द्रमा। बा–4

राखइ–रक्षा करता है। बा–166

राखउँ–रख लेती हूँ। अ–55

राखन–रखने के लिये। अ–78

राखहुँ–रक्षा करें। अ–57

राखा–निबाहा। अ–30

राखि–रखकर। बा–338

राखिअ–रखते हैं। अ–66

राखेहु–रखना, सुख पहुँचाना। बा–355

राखै–रख ले। अ–51

राग–आसक्ति। अ–14

राचा–लगा हुआ है। बा–236

राचेउ–लगा हुआ है। बा–236

राजत–शोभायमान है। बा–242

राजदुआर–राजद्वार। बा–348

राजधनी–राज्य का उत्तराधिकारी। बा–153

राजमराल–राजहंस। बा–134

राजरस–राजतिलक का आनन्द। अ–222

राजलखन–राजचिन्ह। अ–112

राजसमाज–राजसी सामान। बा–301

राजसुख–राज्य का आनन्द। बा–160

राजहिं–आनन्दित रहती थी। बा–190

राजिव दल–कमल की पंखुड़ी के समान। लं–61

राजिवनैन–कमलनेत्र श्रीराम। बा–18

राजी–समूह। बा–300

राजीव–कमल। बा–148

राजु–राज्य, राजतिलक। अ–51
राजु–राजा दशरथ। अ–247
राजे–प्रसन्न हो गये। बा–265
राता–लगे, प्रेम किया। बा–7
राती–रात्रि। बा–195
राँधा–पकाया। बा–173
रामचरित–राम का चरित, रामकथा। बा–25
राममनामयं–निर्विकार श्रीराम। लं–107
राममय–राम के समान ही। बा–7
राम मायहिं–भगवान श्री राम की माया को। बा–56
राम सन राम–श्री राम चन्द्र जी ने परशुराम जी को। बा–282
रामानुज–लक्ष्मणजी। सुं–56
रामायुध अंकित–श्री राम के अस्त्र धनुष–बाण से अंकित। सुं–5
रायमुनी–ललमुनिया चिड़िया। बा–103
राया–राजा, स्वामी। बा–127
रारी–लड़ाई। बा–42
रावनारि–श्री राम चन्द्रजी। अर–46
रावरी–आपकी। बा–29
रासभ–गदहा, गर्दभ। अर–29
रासी–राशि, ढेर। बा–310
राहु–अनिष्टकारी एक ग्रह। बा–4
रिच्छेस–जाम्बवान। लं–39
रिछेसा–जाम्बवान। बा–29
रितुराजू–बसन्त। बा–42
रिनु–ऋण, कर्ज। बा–176
रिपु–शत्रु। बा–14
रिपुसूदन–शत्रुधन जी। बा–17
रिपुहन–शत्रुधन जी। बा–163
रिपुहीन–शत्रु रहित। बा–164
रिष्ट–पुष्ट–बलवान, भारी शरीर वाला। बा–93
रिषय–मुनियों का। बा–44
रिषय–सप्त ऋषि। बा–78
रिषि नारी–ऋषिपत्नी अहल्या। सुं–42
रिषिराई–नारद जी। बा–133
रिषिहित–ऋषि विश्वामित्र के हित के लिये। बा–24
रिस–क्रोधित, क्रोध। बा–87
रिसाते–क्रोधित हो रहे है। बा–268
रिसानी–क्रोध। बा–41
रिसोहें–क्रोध से आँखें लाल हो गईं। बा–252
रीछ–जाम्बवान जी। बा–18
रीछपति–जाम्बवान जी। बा–30
रीझत–प्रसन्न होते हैं। बा–28
रीझैं–प्रसन्न हो, संतुष्ट हो जाये। बा–131
रीति–ढंग, आदत। बा–4
रीती–नियम। बा–28
रीती–प्रकार। बा–185
रीते–रहित, खाली। बा–82
रुंडमुंडमय–शिरों और धड़ों से। अ–192
रुख–संकेत, दिशा। बा–58
रुख राखे–अनुकूल होकर। अ–2
रुचि–चाह, इच्छा। बा–8
रुचिर–सुन्दर। बा–86

रुचिराकर—सुन्दर खानें, खनिजगृह। उ—120

रुज—रोग। बा—1

रुदन—रोना, विलाप। बा—193

रुद्रगन—शिव जी के सेवक। बा—133

रुद्रहिं—शिव जी को। बा—86

रुद्राष्टकमिदं—भगवान रुद्र की स्तुति का यह अष्टक। बा—108

रुधिरोपल—खून और पत्थर। लं—46

रुँधहु—रूँध दो, सुरक्षित कर दो। अ—17

रूख—पेड़। अ—119

रूखी—शुष्क (बेमुरव्वत) ।अ—51

रूचइ—अच्छा लगता है। बा—191

रूप—वेष—भेष, शक्ल। बा—52

रूप स्वामि भगवंत—मेरे स्वामी भगवान का रूप हैं। कि—3

रूरी—सुन्दर। बा—42

रूरे—खाली, रिक्त। अ—127

रेख—गिनती, गणना। बा—12

रेख—रेखा, लकीर। बा—67

रेख खँचाइ—लकीर खींचकर, पुष्टता से। अ—19

रेखात्रय—तीन रेखा (त्रिवली)। उ—76

रेंगाई—चलाई। लं—79

रेता—बालू। अ—102

रेनु—रज, धुल। बा—14

रोचन—गोरोचन। उ—3

रोदति—वदति—रोती—चिल्लाती। बा—87

रोदन ठाना—रोना शुरू कर दिया। बा—192

रोपहु—रोप दो, लगा दो। अ—6

रोपा—पसारा, फैलाया। लं—6

रोपी—रोककर। लं—82

रोपे—लगाये। बा—344

रोम—ऊनी। अ—6

रोमप्रति—एक—एक रोम में। उ—22

रोम राजि अष्टादस मारा—अठारह प्रकार की असंख्य वनस्पतियाँ जिनकी रोमावली हैं। लं—15

रोम—रोम—रोएँ रोएँ में।

रोमावलि ठाढ़ी—रोमांचित हो गये। बा—104

रोष—क्रोध। बा—4

रोष तरवारि—क्रोध रूपी तलवार। अ—31

रोहिनि—रोहिणी (चन्द्रमा की पत्नी)। अ—123

रौताई—रजपूती, बहादुरी। अ—35

रौरिहि—आप ही की। अ—3

—ल—

लंकपति—रावण। लं—16

लंकेस—रावण। सुं—19

लंगूर—पूँछ। लं—87

लंपट—आवारा। बा—115

लकुट—दंड, लाठी। अ—240

लखनहिं—लक्ष्मण जी को। बा—325

लखहिं—देखें। बा—4

लखाऊँ—पहचान। बा—169

8F

लखि—देखकर। बा—7

लखि बिरलेन्ह पाये—कोई विरले ही जान पाते हैं। बा—122

लखी—देखा, समझ लिया। अ—34

लगन—मुहूर्त। अ—11

लगन धराई—विवाह की लगन को लिखवाया। बा—91

लागे—तक। अ—66

लगिहहु—चलोगी। अ—50

लघु—छोटा, थोड़ा। बा—8

लघुता—छोटापन। बा—43

लघु वयस — छोटी अवस्था का। अ—110

लच्छ—लक्ष्य, निशाना। अ—41

लच्छ—लाख। बा—331

लच्छन—लक्षण। बा—67

लच्छन हीना—शुभलक्षण से हीन। उ—21

लच्छा—एक लाख। लं—68

लच्छि—लक्ष्मी, सम्पत्ति। बा—6

लच्छि निवासा—भगवान विष्णु। बा—135

लजावन—लजाने वाली। बा—327

लजावनिहारे—लजाने वाले। अ—117

लटत—हिम्मत हारते हैं। लं—49

लड़ाइ कै—लड़ा करके (लाड़ करके) प्रेमपूर्वक। बा—326

लता—बेल पत्तियाँ। बा—85

लता भवन ते—लताओं के बीच में। बा—232

लपटानी—चिपट गई। बा—102

लबारा—झूठा, गप्पी। लं—34

लय—संहार। बा—98

लयकारी—नाश करने वाला। उ—94

लय लाये—लव लगाकर। बा—22

लयलीना—लीन रहता है, लौ लगाये रहता है। अ—172

लराई—लड़ाई, युद्ध। बा—82

लरिकन्ह पर—लड़कों पर। बा—360

लरिकनी—बच्ची, लड़की। बा—355

लरिका—लड़के। बा—355

लरिकाई—लड़कपन में, बचपन में। बा—271

ललकि—ललचाकर। बा—248

ललना—स्त्री। बा—322

ललाट—मस्तक। बा—92

ललामा—ललाम, सुन्दर। बा—178

ललित—सुन्दर। बा—43

लव—तनिक, क्षण। बा—258

लवन पयोधि—खारा समुद्र। अ—63

लवलेसा—थोड़ा, तनिक। बा—116

लवा—लावा, बटेर। बा—268

लवाई गई—ले गई। बा—267

लवाई—अलग कर दे। बा—337

लसई—शोभा पा रही हो। अ—123

लसत—शोभित हो। अ—115

लसद्—सुशोभित है। उ—108

लहकौरि—वर—वधू को परस्पर ग्रास देना (खिलाना) एक रस्म। बा—327

लहत—प्राप्त करके हैं। बा—5

लहब—पावेंगे। अ—175

लहहिं—प्राप्त करें। बा—2

लहिअ—पाती हूँ। अ—16

लही–पा गई हो। अ–5

लही न–नहीं मिली। बा–320

लहेऊ–प्राप्त किया। बा–244

लाई–लगाया। बा–343

लाउब–लायेंगे। बा–5

लाग–लगे। बा–36

लागहि–लगते हैं। बा–49

लागहि पाएँ–पाँव लगती है। बा–116

लागि–लिये, कारण। बा–186

लागिअ–आक्रमण किया जाय। लं–39

लागिहि–लगेगा। बा–50

लागै नीका–अच्छा लगे। अ–5

लाघवँ–फुर्ती से, सहज ही। बा–261

लाजा–लावा (धान के)। बा–346

लाटी–होंठ सूखने पर मुख की स्थिति। बा–145

लाधे–पाये। बा–310

लायक–योग्य, अनुरूप। बा–18

लालन–प्यार। अ–200

लालसा–इच्छा। बा–218

लाली–लाड़, चाव के साथ। अ–59

लावन्यनिधि–सुन्दरता के भण्डार। बा–106

लावहिं–समर्पण करते हैं। बा–349

लावा–बटेर पर (वन में)। अ–29

लावा–लगा लिया। अ–111

लाहू–लाभ। अ–7

लिंग–शिव लिंग। लं–2

लिलार–मस्तक, भाग्य पटल। बा–68

लीका–मर्यादा, साख, ख्याति। बा–142

लीन्ह–लिया। बा–342

लीन्हेसि–लिया। बा–179

लीनी–लगी हुई। बा–172

लीलहिं–खेल में ही। कि–30

लीला–क्रियाकलाप, रचना। बा–80

लुकाई–छिप गया। सुं–9

लुकाने–छिप गये। बा–255

लुठत–लोटते हुये। अ–243

लुनिअ–काटती हूँ। अ–16

लुबुध–लोभी। बा–17

लूक परन–उल्कापात होने लगा, तारे टूटने लगे। लं–32

लेइहि–ले चलेंगे। अ–70

लेखति धरनी–धरनी कुरेद रही है। अ–58

लेखहिं–जान रहे हैं। बा–319

लेखा–गणना, गिनती, समान। बा–113

लेखी–मानकर। बा–349

लेखे–गिनती। बा–12

लेब–लेंगे। बा–310

लेस–थोड़ा। बा–153

लेहू–लेते हो। अ–2

लै सहाय–सहायकों के साथ। बा–210

लोई–लोग। बा–194

लोक–लोग, भुवन, देश। बा–16

लोकप–लोक पाल गण। अ–2

लोकपति–भुवनों के स्वामी। बा–82

लोकमान्यता–सांसारिकता, जगत–भ्रमजाल। बा–161

लोकहुँ–लोक में, संसार में। बा–3

लोगाई–स्त्रियाँ। बा–194

लोचन–नेत्र, गोरोचन। बा–37

लोन–नमक। अ–30

लोना–सलोना, सुन्दर। बा–233

लोनाई–सुन्दरता। बा–237

लोपेउ काल–कालक्रम से लोप हो गया। बा–310

लोभ–लालच। बा–180

लोभाई–मोहित हो जाता है। बा–213

लोभामरष–लोभ और क्रोध। उ–38

लोभाये–लालच दिलाया। बा–145

लोयन–लोचन, नेत्र। अ–89

लोला–झूमते हुये, चंचल। बा–243

लोलुप–लालची, लोभी। बा–125

लोलुपचारा–लोभियों का आचरण करने वाले। अ–167

लोवा–लोमड़ी। बा–303

लोह–युद्ध में मोर्चा। अ–190

लौका–नौका। अ–251

लौकिक रीति–लोकाचार। बा–327

लौकिक व्यवहार–लोकरीति, नरलीला। अ–87

–व–

वंचक–ठग, झूठे। बा–7

वंचित–हीन (भाग्यहीन)। बा–204

वंचेहु–रोका, ठगा। बा–137

वंदउ–प्रार्थना करूँ। बा–2

वंदत–बंदना करते हैं। बा–54

वंदन–प्रणाम। बा–60

वंदनिवारे–वंदन। बा–289

वंदनीय–पूजनीय, वंदना करने योग्य। बा–2

वंदि–प्रणाम करता हूँ, प्रणाम करके। बा–4

वंदिगन–भाट, चारण आदि। बा–194

वंदिगृह–जेल, कारागार। अ–19

वंदिता–वंदित। उ–13

वंदी–चारण, भाट। उ–12

वंध्यासुत–बाँझ का पुत्र। उ–122

वकता–बोलने वाले, वक्ता। बा–30

वक्र–टेढ़ा। बा–281

वक्र उक्ति धनु–टेढ़ी वचनावली (वक्रोक्ति) रूपी धनुष से। लं–23

वच–वचन, शब्द। बा–186

वचन रहि गयऊ–वाणी रुक गई। अ–153

वच विकलाई–व्याकुलता पूर्ण वचन। लं–61

वज्र–कठोर, इन्द्र का अस्त्र। बा–4

वज्र बैठारि–बज्र रखकर। अ–145

वट छाँही–बरगद के नीचे। बा–52

वटु–अक्षय वट। बा–2

वद–बता, कह। लं–23

वदन–मुख। बा–4

वदहिं–उच्चारण कर रहे हैं। बा–262

वदि–कहकर। बा–283

वध–मारने से। बा–207

वध जोगू–मार डालने योग्य। बा–275

वधब–मार डालेगा। अर–26

वधि–मारकर। बा–49

वधु–वध, मार डालना। बा–279

वधुन्ह–पत्नियों। बा–61

वधूटी–बहुएँ, स्त्रियाँ।

वनचर–बन्दर, वनवासी, वन में हरने वाले जन्तु। बा–188

वनज—वन कमल, जंगल में पैदा होने वाले वनस्पति। बा—40

वनज वनचारी—कमल वन में विचरण करने वाली। अ—60

वनजाता—कमल, जंगली (फूल पत्ते)। बा—212

वनदेव—वन के देवता। अ—56

वनदेवी—वन की देवियाँ। अ—56

वनमाला—। (तुलसी— कुंद — मंदार —पारिजात—कमल) इन पाँच से बनी वनमाला जिसे भगवान धारण करते हैं। बा—147

वनसी—कटिया (मछली फँसाने वाली बंसी)। अर—44

वनिता—स्त्री। बा—94

वपु—शरीर। बा—87

वपुष—शरीर। लं—104

वमत—उल्टी करती हुई। सुं—4

वय—अवस्था। बा—291

वयन—वचन। बा—326

वय विरिध—वयोवृद्ध। अ—110

वयस—अवस्था। बा—215

वयसु—वैश्य। अ—172

वर्ण—अक्षर।

वर्म—कवच। अ—11

वर—पति, श्रेष्ठ। बा—80

वरइ—विवाह कर। बा—131

वरकरि—जवरदस्ती, बरबस। उ—5

वरजउँ—मना कर रहा हूँ। बा—166

वरजहु—रोक देना। उ—43

वरजित—रहित। बा—153

वरजि सिव राखे—शिव जी ने मना कर दिया था। बा—127

वरजे—मना किया। अ—96

वरतर—वरगद के नीचे। उ—57

वरदानमिदं—यह वरदान। लं—111

वरदानि—वर देने वाला। बा—25

वरदायक—वरदान देने वाले को। बा—25 शिव जी। बा—257

वरदायनी—वरदान देने वाली। बा—236

वरन—वरन—रंग रंग के। बा—212

वरनारी—श्रेष्ठ (सुहागिनी) स्त्रियाँ। बा—303

वर वरनी—श्रेष्ठ वर्ण वाली। बा—289

वरनाधम—वर्ण में नीचे। उ—100

वरनाश्रम—वर्ण और आश्रम के अनुकूल। उ—20

वरबाटा—सुन्दर रास्ता। अर—7

वरवारे—सुन्दर छोटी—छोटी। उ—77

वरष परवाना—एक वर्ष तक। बा—169

वरहिं—मोर को। बा—316

वरासन—उत्तम आसन। बा—331

वराह—सुअर। बा—122

वराहू—वाराह, सुअर। बा—156

वरिस—बरस जाती है। बा—232

वरिस करोरी—करोड़ों वर्ष । अ—5

वरिहि—विवाह करेगी। बा—133

वरी—विवाह कर लिया। बा—182

वरीसा—वर्ष। कि—12

वरुन—वरुण (जल के देवता)। बा—182

वरूथ—झुंड, सेना। सुं—34

वरे—निमंत्रण दे दिया। बा—172

वरेषी—विवाह की बातचीत। बा—81

वरेहु—निमंत्रण दे दो। बा—168

वरै–विवाह करे। बा–131
वल्लभ–प्यारे। लं–42
वलकल–पेड़ो की छाल। अ–62
वलाहक–बादल। लं–87
वलित–लिपटी हुई। अ–137
वलीमुख–बन्दर। लं–46
वस्य–आधीन। बा–182
वस–अधीन। बा–7
वसकरी–वश में करने वाली है। अर–26
वसन–वस्त्र, कपड़ा। बा–10
वसवर्ती–आधीन हो गये। बा–182
वसह–बैल। बा–92
वसुधा–पृथ्वी। बा–20
वसुधातल–पृथ्वी पर, मृत्युलोक में। बा–31
वागीसा–वाणी के पति। उ–58
वाचाल–वातूनी, अधिक बात करने वाला। बा–1
वातबस–वायुरोग से ग्रसित। अ–180
वादहिं–विवाद करते हैं। उ–99
वानर–बन्दर। बा–177
वानु–वाणासुर। बा–250
वापिका–वापी, बावली। उ–29
वापी–बावली। बा–155
वाम–बाँयाँ, उल्टा, टेढ़ा। बा–233
वामभाग–बाँई ओर। बा–107
वायस–कौवा। बा–5
वायस तिलक–काक शिरोमणि। उ–68
वार–देर, दिन। बा–190
वारन–वारण, हाथी। लं–111
वारलगि–देर तक। बा–131
वारहि–न्योछावर करके। बा–319
वारि–जल। बा–6
वारि–निछावर करके। बा–327
वारिअहि–न्योछावर करेंगे, झुकेंगे। बा–220
वारिचर–पानी में रहने वाले। अ–169
वारिचरकेतू–कामदेव। बा–84
वारिज–कमल। बा–1
वारिद–बादल। बा–189
वारिदनाद–मेघनाद। बा–180
वारिदमाला–बादलों की छटा। लं–13
वारिधर–मेघ। लं–70
वारिधि–समुद्र। बा–14
वारिनिधि–समुद्र। उ–67
वारिविहंग–जलपक्षी। बा–40
वारी–वारि, जल, आँसू। बा–72
वारीस–समुद्र। लं–5
वारुनी–शराब। बा–14
वारू–वार, दिन। बा–312
वारे–अतिरिक्त, छोड़कर। बा–177
वासर–दिन। बा–186
वासव–इन्द्र। अ–141
वासी–निवासी, रहने वाले। बा–8
वासुदेव–भगवान कृष्ण। बा–143
वाहन–सवारी। बा–91
वाहनी–सेनायें। लं–55
विंदक–ज्ञाता। उ–105
विंधि–विन्ध्याचल को। अ–297
विंधिगिरी–विन्ध्याचल में। उ–109
विआधि–रोग, व्याधि। बा–171
विआहा–विवाह करेगा। बा–245

विआहि—विवाह करके। बा—350
विआहेसि—विवाह किया। बा—178
विकट—भयावना। बा—95
विकट भृकुटि—भौंहे टेढ़ी। उ—77
विकटानन—भयानक मुख वाले। सुं—54
विकटासि—विकटास्य (वानर का नाम)। सुं—54
विकरारा—विकराल। अर—18
विकल—बेचैन। बा—49
विकसे—फूले, खिले। बा—86
विकार—दोष, अवगुण। बा—6
विखंडन—नाश करने वाले। लं—115
विगत—रहित, बिना। बा—75
विगतमोह—मोहरहित। बा—186
विगतश्रम—थकान दूर होने से। बा—107
विगता—चली गई। उ—102
विग्रह—विरोध। अ—192
विगसत भई—खिल उठी। उ—9
विगसित—विकसित, खिले हुये। कि—24
विज्ञानविसारद—परम ज्ञानी। बा—18
विघ्न—बाधा, अड़चनें। बा—39
विघटन—तोड़ने की। बा—239
विचच्छन—अत्यन्त निपुण। उ—37
विचरंति मही—पृथ्वी पर विचरते हैं। उ—14
विचारा—ज्ञान। बा—40
विचारी—दीन। बा—184
विचित्र—आश्चर्यजनक, अनोखा। बा—9
विजई—सबको जीतने वाले। बा—122
विजय—जीत। बा—154
विटप—वृक्ष। अ—46
विटपायुध—वृक्षरूपी हथियार। लं—53
विडंबन—मिट्टी पलीद या उपहास करना। उ—70
वित्त—धन। बा—265
वितर्क—तर्क—वितर्क। अर—4
विताना—मंडप। बा—37
विथकहिं—थक जाते हैं, हार मान लेते हैं। बा—213
विथकि—थकित रह गया, मौन हो गया। अ—284
विथुरे—विखरे हुये। लं—12
विदंड—विडंबना, दुर्दशा। उ—101
विद्रुम—मूंगा, प्रवाल। अ—27
विद्यमान—वर्तमान, उपस्थित। बा—253
विद्यानिधि—विद्या के भंडार श्रीराम। बा—209
विदरेउ—फट गया। अ—146
विदित—मालूम, ज्ञात है। बा—7
विदित—प्रसिद्ध। बा—276
विदिसिहुँ—किसी भी दिशा में। बा—185
विदुषन्ह—ज्ञानी, विद्वान्। बा—242
विदूषक—मसखरे। बा—302
विदूषहिं—दोष लगा है। बा—279
विदेहकुमारी—सीताजी। बा—230
विदेहपुर—जनकपुर। बा—337
विदेह विसेषी—विशेष रूप से बिना शरीर के, (समाधिस्थ) अत्यन्त वेसुध। बा—215

विदेहू—विदेह, जनक। बा—17
विधंस—विध्वंस, नष्ट। बा—65
विधाता—ब्रह्मा, ईश्वर। बा—7
विधात्री—ब्रह्माणी। बा—54
विधान—प्रकार। बा—346
विधि—ब्रह्मा, प्रकार, प्रकृति। बा—2
विधिवत—भली प्रकार से। बा—65
विधिवस—ईश्वर की इच्छा से। बा—3
विधुंतद पोहही—राहुओं को पिरो रही हो। लं—92
विधु—चन्द्रमा। बा—8
विधुवदनी—चन्द्रवदनी, सुन्दर स्त्री। बा—10
विनई—विनयशील। सुं—30
विनतहिं—(मोरों की माता) विनता को। अ—19
विनती—प्रार्थना। बा—82
विनवँहु—प्रार्थना करूँ। बा—4
विनसइ—नष्ट हो जाता है। कि—15
विनसाइ—फट सकता है। अ—231
विनिंदक—लजाने वाला, नीचा दिखाने वाली। बा—147
विनिश्चितं—भली भाँति निश्चित किया हुआ। उ—122
विनीता—विनम्र होकर। बा—182
विनोद—हँसी, मजाक। बा—99
विपति—दुःख। बा—18
विपरीत—विरोध, उल्टा। बा—52
विपिन—जंगल। बा—49
विपुल—बहुत से, महान। बा—40
विप्रकाज—ब्राह्मण, विश्वामित्र का कार्य। बा—221
विप्रन्ह—ब्राह्मणों को। बा—100
विप्रभवन—ब्राह्मणों के घर। बा—155
विप्र वधू—ब्रह्मणों की स्त्रियाँ। अ—49
विभंजन—नष्ट करने वाला। बा—2
विभव—ऐश्वर्य। बा—235
विभागा—बाँट दिये हैं। बा—6
विभागा—भेद, प्रकार, खंडा। बा—40
विभाती—सुशोभित होता। बा—15
विभु—समर्थ, ब्रह्म। बा—109
विमुन्ह—विश्व, तैजस, प्राज्ञ, ब्रह्म (चार स्वामी)। बा—325
विभूति—ऐश्वर्य। बा—5
विभूती—शिव जी द्वारा श्मशान में लेपन करने वाली विभूति (राख)। बा—1
विभूषन—भूषण। लं—65
विभेदकरी—उत्पन्न करने वाली। लं—111
विमत्त—विशेष रूप से मतवाले होकर। उ—13
विमद—मद से रहित। उ—38
विमल—स्वच्छ। बा—1
विमात्र—सौतेला। बा—176
विमाना—हवाई जहाज। बा—61
विमुक्त—जीवनमुक्त। उ—124
विमुख—विरोधी। बा—106
विमूढ़—अत्यन्त मूर्ख। बा—30
विमोचनि—छुड़ाने वाली। बा—297
विमोचहीं—बहाने लगी। बा—97
विमोहई—मोहित कर रहा। बा—316
विमोहनसीला—विमोहित करने वाली। बा—113

विमोहिनि–मोहित करने वाली। बा–235
विमोहवश–विशेष रूप से मोहवश होकर। बा–49
वियोगी–मुक्त योगी। बा–22
विरक्त–सन्यासी। बा–85
विरचत–बनाते हुये। बा–175
विरचति–रचना करती है। सुं–21
विरंचि–ब्रह्मा। बा–22
विरचि–निर्माण करके। बा–16
विरचि वेष–वेष बनाकर। अ–168
विरज–माया रहित, निर्विकार। बा–50
विरति–वैराग्य। बा–22
विरती–वैराग्य। उ–101
विरथ–रथ विहीन। अर–29
विरदैत–बड़े ,ख्याति प्राप्त। लं–79
विरह–वियोग, दुःख। बा–46
विरहागी–विरहाग्नि। अ–174
विरहिनि–विरहिणी स्त्रियों को। बा–238
विरागा–वैराग्य। बा–6
विरागरूप–सन्यासी, त्यागी। बा–216
विरागे–वैराग्य हो गया। बा–292
विराजत–सुशोभित है। बा–20
विराजति–विशेष शोभित हो रही है। बा–358
विराजी–सुशोभित होकर। बा–300
विराजे–प्रकाशनमान हैं। बा–25
विराटमय–ब्रह्माण्डरूप। बा–242
विरिद–यश। बा–25
विरिदावली–(विरुदावली) वंश की कीर्ति। बा–249
विरुज–नीरोग। उ–21
विरुद–कीर्ति। बा–262
विरोध–शत्रुता। बा–62
विलंब–देर। अ–4
विलख–उदास। अ–70
विलखाइ–प्रेम से गदगद होकर। अ–289
विलखाई–विषाद कर रहे हैं। अ–38
विलखान–दुःखी होकर बोला। लं–62
विलखाने–उदास हो गये, रोने लगे। बा–333
विलखाँहिं विमाना–विमान भी लजा जाते है। अ–214
विलगाई–अलग कर दिया। बा–337
विलगान–फटा, विलग हुआ। अ–67
विलगाना–भिन्न–भिन्न। बा–68
विलगाहीं–अलग–अलग होते हैं। बा–5
विलगु न मानब–बुरा न मानिएगा। अ–97
विलपत–विलाप करते–करते। अ–37
विलसत वेतस–वेंत शोभा पाते हैं। अ–325
विलास–आनन्द। बा–37
विलास–इशारे पर। बा–200
विलासिनि–स्त्री। बा–345
विलोकत–देखकर। बा–17
विलोकनि–दर्शन में। बा–327
विलोकय–दृष्टि डालिये। उ–14
विलोकि–देखकर, जानकर। बा–15
विलोचन–नेत्रों में। अ–118

विलोचन ही के—अन्तश्चक्षु, हृदय के नेत्र। बा—1

विवरन—मुख का रंग बदल गया। अ—145

विवराये—जटायें खोलीं। उ—11

विवाकी—समाप्ति की। बा—24

विविधि—अनेकों। बा—9

विविक्त वासिनः—एकान्तवासी पुरुष। अर—4

विवुध—देवता। बा—14

विवुधतरु—कल्पवृक्ष। बा—149

विवुध नदी—गंगाजी। अर—2

विवुध बन—नन्दनवन। बा—137

विवुध बरूथा—देवतागण। बा—181

विवुध वैद—धन्वन्तरि। बा—32

विवेक—ज्ञान। बा—2

विवेकनिधि वल्लभहिं—ज्ञान भंडार जनक जी की पत्नी आपको। बा—283

विषइक—प्रेमी। बा—117

विषई—संसारी, विलसिता में लिप्त। बा—38

विष्टा—मल। लं—52

विषम—बीहड़, कठिन। बा—38

विषम जर—विषमज्ज्वर, भयानक दुःख की आग। अ—51

विषम भाँति—क्रूर दृष्टि से। अ—25

विषमवान—पाँच वाण धारण करने वाला (कामदेव)। बा—83

विषय—सांसारिक भोग। बा—32

विषय विवर्ध—विषयों की वृद्धि। लं—92

विषय सुख भोरी—विषय सुख को न जानने वाली। अ—60

विष संजुत—विष युक्त। लं—12

विषाद—दुःख। बा—46

विषाद बसेरे—सम्पन्नता से दुःखी। बा—4

विषाना—सींग। सुं—50

विस्तार—फैलाव, बृहद। बा—33

विस्व—विश्व, संसार। बा—6

विस्वनाथ—शिव जी। बा—104

विस्वमोहिनी—संसार को मोहित करने वाली। बा—130

विस्वरूप—ईश्वर। बा—13

विस्वबास—घट—घट वासी भगवान। बा—146

विस्वेस—विश्वनाथ। उ—129

विसद—बड़ा। बा—2

विसद—निर्मल, उज्जवल। अ—91

विसमउ—खेद। अ—10

विसमय—विषाद। अ—12

विसमय—आश्चर्य। बा—137

विसमयवंत—आश्चर्यचकित। बा—202

विसमित—आश्चर्यचकित। बा—73

विसरि तन गये—देह की सुधि भी भूल गई। उ—17

विसाला—विशाल, बड़े। बा—38

विसिख—बाण। बा—87

विसिख कृसानू—अग्निवाण। सुं—58

विसूरति—मन में विलाप करती हुई। बा—235

विसोक—शोक रहित। बा—16

विसोक हये—विशेष से पूर्ण। उ—102

विसोकी—शोक रहित। बा—119
विश्राम—आराम, शान्ति, सुख। बा—35
विहंगपति—गरुड़। बा—55
विहंगवर—श्रेष्ठ पक्षी। उ—62
विहग—पक्षी। बा—37
विहगेस—गरुड़ जी। उ—96
विहर न—फट नहीं जाता। लं—22
विहरनसीला—विहार करने वाली। अ—63
विहसि—हँसकर। बा—51
विहात—बीत रहा है। बा—261
विहार—समागम, भ्रमण। बा—103
विहारा—व्यवहार करते हैं। अ—219
विहारिनि—विचरने वाली। बा—235
विहारु—घूमने का स्थान। बा—31
विहित—कहे हुये। बा—319
वीचि—लहर। बा—18
वीचि संकुले—तरंगों से पूर्ण। अर—4
वीथिन्ह विच वीचा—सभी गलियों में। बा—194
वीथीं—गलियाँ। बा—296
वीना—वीणा। बा—127
वीर—भाई (भरत)। लं—116
वृन्द—झुण्ड, समूह। बा—194
वृक—भेड़िया। अ—62
वृत्तान्त—समाचार। लं—62
वृष्टि—वर्षा। बा—91
वृषकेतु—शिव जी। बा—35
वृषभ—बैल, सॉड़। बा—243
वृषली—शूद्र, नीच, व्यभिचारिणी स्त्रियाँ। उ—100
वेगि—शीघ्र ही। बा—91
वेगिअ—शीघ्रता कीजिये। अ—5
वेगिहि—जल्दी ही। अ—46
वेतपानि—हाथ में छड़ी लिये। लं—108
वेदतत्त्व—वेदों का सार, ब्रह्मज्ञान। बा—45
वेदधुनि—वेदपाठ। बा—195
वेदविद—वेद का ज्ञाता। बा—144
वेदविंदूषक—वेदों का निन्दक। अ—168
वेदविधि—वेदरीति से। बा—91
वेदसिरा—वेदशिरा मुनि। बा—73
वेदिका—वेदी। अ—237
वेधि—लगाकर। बा—11
वेधिअ—छिदेगा, टूटेगा। बा—258
वेष—रूप। बा—93
वैकुंठ—विष्णुलोक। बा—88
वैखानस—वानप्रस्थी। अ—172
वैतरनी—यमपुरी की नदी। अर—2
वैदेही—सीता जी। बा—49
वैनतेय—गरुड़। बा—267
वैभव—ऐश्वर्य, तेज। बा—139
वैरिनिहि—वैरिनि मंथरा को। अ—16
व्यजन—पंखे। बा—350
व्यर्थ—बेकार। बा—97
व्यलीक—झूठा। उ—51
व्यवहरिआ—महाजन। बा—276
व्यवहारा—रीति। बा—99
व्याकुल—विकल, परेशान। बा—85
व्याज बखानी—विस्तार से बखान कर कहने लगी। अर—5
व्याध—बहेलिया। बा—29
व्याधि—रोग। बा—74

व्याधू–व्याध, बहेलिया, शिकारी। बा–5
व्याप्य–सर्वरूप। उ–72
व्यापक–सब में समहित है, ईश्वर। बा–13
व्यापा–छा गया है। अ–57
व्याल–सर्प। बा–32
व्यालारि–गरुड़ जी। उ–102
व्याली–सर्प धारण किये हुये। बा–79
व्यास–विस्तार। उ–123
व्याहिअहुँ–विवाह हो। बा–311
व्योम–आकाश। बा–61
व्रजन्ति–प्राप्त होते हैं। अर–4
व्रत–नियम, प्रतिज्ञा। बा–59
व्रतधारी–व्रतधारण करने वाला भक्त। बा–104
व्रन–घाव। कि–12
व्रीड़ा–लज्जा। उ–58

–श–

शची–इन्द्राणी। अर–4
शमन–नाश करने वाला। अर–11
शूलपाणिं–हाथ में त्रिशूल धारण किये। उ–108
श्रम–परिश्रम, थकावट। बा–11
श्रमकन–पसीने की बूँदें। अ–67
श्रमबिन्दु–पसीना। बा–233
श्रमभारू–महान श्रम (बारम्बार जन्म भरण का)। अ–87
श्रमहारी–थकान दूर करने वाला। सुं–1
श्रमित–थका हुआ। बा–170
श्रवत–बहाने लगे। अ–52
श्रवन–कान। सुं–12
श्रवनपुटन्हि–कर्ण पुटों से। उ–52
श्रवनपूर–कर्ण फूल। लं–14
श्रवन वंत–कान वाले। उ–53
श्रियमूला–राजलक्ष्मी के मूल। अ–53
श्री–लक्ष्मी जी, प्रभा, कान्ति। अर–6
श्री–सीता जी। बा–54
श्रीकंता–श्रीपति भगवान विष्णु। उ–78
श्रीखण्ड–चन्दन। लं–109 / उ–37
श्रीनिवास–लक्ष्मीनिवास भगवान विष्णु। बा–128
श्रीनिवासपुर–बैकुण्ठ। बा–129
श्रीपति–लक्ष्मीपति भगवान विष्णु। बा–51
श्रीफल–बेल। अर–30
श्रीरंग–लक्ष्मीपति। उ–14
श्रीवत्स–भृगु के चरण प्रहार का चिन्ह। बा–147
श्रीहत–शोभाहीन। अ–158
श्रुतकीरति–शत्रुघ्न की पत्नी। बा–325
श्रुति–वेद। बा–10
श्रुतिमाथा–वेदों के मस्तक स्वरूप भगवान विष्णु। बा–128
श्रुतिमारग–वेद मार्ग। उ–107
श्रुति सेतु–वेद की मर्यादा। अ–126
श्रेनी–वर्ग। बा–44
श्रोता–सुनने वाला। बा–30
श्रोता त्रिविध–तीन प्रकार के श्रोता। बा–39

–स–

संकट–दुःख। बा–24
संकर–शंकरजी, शिवजी। बा–54
संकरप्रिया–शिव जी की पत्नी। बा–98
संकल्प–प्रतिज्ञा। बा–57
संकाश–समान। उ–108
संकित–डरते हुये। अ–75
संकुल–परिपूर्ण। बा–191
संकेलि–एकत्र करके। अ–237
सँकोच–(जल) कम हो जाने से। कि–16
सँकोची–संकोच में डाल दिया। अ–12
संग ते जती–विषयों के संग से सन्यासी। अर–21
संगम–संयोग, संसर्ग। बा–85
संगु–साथ। अ–49
संग्रह–एकत्र करना। बा–6
संग्राम–युद्ध। बा–123
संग्रामपुरवासी–संग्राम रूपी नगर निवासी। अर–20
संग्रामवट–संग्राम रूपी बरगद। लं–93
संघटु–संयोग। बा–222
संघाता–संपर्क, साथ। बा–7
संघारा–विनाश। बा–73
संचहीं–इकट्ठा कर रहे। अर–20
संछेप–साधारण। बा–65
संछेपहिं–थोड़े मे। बा–103
संजम–संयम। बा–84
संजातं–उत्पन्न हुई। सुं–10
सजुक्त सक्ति–शक्ति (सीता) सहित। उ–13
संजुग–युद्ध। बा–84
संजुत–संयुक्त, सहित। बा–44
संजोगा–संयोग। बा–205
संजोइल–सुसज्जित। अ–190
संत–साधु। बा–2
संतत–सदा। बा–4
संततमनिंदिता–सदा अनिंदित, सर्वगुण सम्पन्न। उ–24
संत संमत–संतों के मतानुसार। बा–114
संत समागम–संतों के समुदाय। उ–51
संताप–दुःख, कष्ट। बा–32
संतोषि–प्रसन्न करके, संतुष्ट करके। बा–102
संदोह–पुंज, ढेर। बा–199
संधाने–जोडे। बा–87
संधिहि पाई–मिलाप होने पर। बा–238
संपदा–धन, संपत्ति। बा–136
संपन्न–परिपूर्ण। बा–67
संपुट–डिब्बा, रत्न रखने की वस्तु। अ–316
संपुट किये–जोड़कर। बा–326
संबत–वर्ष। बा–45
संबत दुइ साता–2X7=14 वर्ष अ–280
संबत सप्त सहस्र–सात हजार वर्ष। बा–144
संबत सहस सतासी–सत्तासी हजार

वर्ष। बा–60

संबल–आश्रय, सहारा। बा–38

संबुक–घोंघा। बा–38

संभव–उत्पत्ति। बा–98

संभारि–सँभालकर। बा–160

संभारी–याद करके। उ–18

सँभारे–सावधानी से। बा–38

संभार्यो–स्मरण किया। लं–95

संभावित–प्रतिष्ठित। अ–95

संभु–शिव जी। बा–26

संभुगन–शिव जी के सेवक। बा–64

संभुगिरा–शंकर जी की वाणी। बा–51

संभुसुक्र–शिव जी का वीर्य। बा–82

संभूत–उत्पन्न हो। बा–82

संभ्रम–उतावली होकर। बा–193

संमत–राय। बा–281

संमत साधु–साधु सम्मत आचरण करना। अ–144

संवत सहस सतासी–सत्तासी हजार वर्ष। बा–60

सँवरी–बनी हुई। बा–270

संवाद–पारस्परिक वार्ता। बा–30

संवाद–समाचार। बा–98

सँवारन–सजाने। बा–91

सँवारब–बनाऊँगा। बा–169

सँवारहिं–सजाते हैं। उ–101

सँवारी–सजाई गई। बा–10

संसय–भ्रम। बा–2

संसर्गा–सत्संग। उ–46

संसृत–संसार में डालने वाली। उ–78

संसृतमूल–जन्म मरण रूपी संसार का मूल। उ–74

संसार पारं–संसार से परे। उ–108

संसारी–जन्मने–मरने वाला। उ–117

सक्तिन्ह–(शक्तिन्ह) उनकी पत्नियाँ। बा–55

सक–सकती। अ–47

सकइ कि जोरी–कैसे मिला सकती है। अ–59

सकति–शक्ति। बा–292

सकल–सभी। बा–1

सकल अंग संपन्न सुराऊ–राजा के सात अंग होते हैं। स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना इनसभी से परिपूर्ण सुन्दर राज्य अ–235

सकलंक–कलंकित। बा–237

सकानी–डर गई। बा–237

सकिलि–सिमट कर। बा–36

सकुचति–सकुचा जाती हैं। बा–326

सकुचन्ह–संकोचवश। बा–307

सकुचानी–संकोच किया। बा–3

सकुचे–सिकुड़ गये। बा–238

सकुचेउ–सहम गये। अ–25

सकुचैन–नहीं सकुचाता। बा–326

सकुन–पक्षी। बा–346

सकुनाधम–पक्षियों में सबसे नीच। उ–123

सकुल–परिवार सहित। बा–25

सकुल सदन–कुल और सेना सहित। लं–116

सकृत–शुभ कर्म वाले। बा–8

सकोप–क्रोधित होकर। बा–173

सकोरी—सिकोड़ ली। बा—29
सकोहा—क्रोध सहित। बा—182
सक्र—इन्द्र। बा—4
सक्रनिवासा—इन्द्रपुरी। बा—178
सक्रसुत—इन्द्रपुत्र जयन्त। सुं—27
सक्रारि—इन्द्र पुत्र मेघनाद। लं—27
सक्रोध—क्रोध सहित। बा—66
सखर—खर नामक राक्षस सहित, कठोर होकर भी। बा—14
सखा—मित्र। बा—15
सखिन्ह—सखियों ने। बा—337
सगर्भ—रहस्यपूर्वक। बा—72
सगरे—सभी। उ—102
सगलानि—विमाता के वचनों से दुखी होकर। बा—26
सगाई—संबन्ध। अ—72
सगुन—सगुण उपासना। बा—21
सघट—भरे हुये घड़े। बा—303
सघन—घनी फैली हुई। बा—37
सचर—चेतन। अ—238
सचराचर—जड़ चेतन। बा—146
सचान—बाज (वन में)। अ—29
सच्चिदानन्द—सत्+चिद्+आनन्द,ईश्वर। बा—13
सचिव—मंत्री। बा—28
सचिवागवन—मंत्री सुमंत्र का अयोध्या लौटना। उ—65
सची—शची, इन्द्राणी। बा—318
सचु—सुख। बा—287
सचुपाएँ—आनन्द ले रहे हैं। बा—134
सचुपावहीं—आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। बा—99
सचेत—ज्ञानी। अ—302
सचेता—सावधान हो कर। बा—15
सज्जनानन्ददाता—सज्जनों को आनन्द देने वाले। उ—108
सजग—सावधान। बा—260
सजन—सजाने। अ—8
सजन सगे—स्वजन। बा—340
सजति—पहनने लगी। अ—26
सजाई—सजा, दण्ड। अ—19
सजीवनमूरि—संजीवनी बूटी। अ—59
सठ—दुष्ट। बा—3
सठ—एक वानर का नाम। सुं—54
स्तवं इदं—इस स्तुति को। अर—4
सत—सत्य। बा—23
सत—शत, सैकड़ों। बा—25
सत कोटी—सैकड़ों, अरबों। उ—91
सत गुन नेहा—सौगुना प्रेम। कि—7
सत्संगति—सत्संग। बा—3
सतानन्द—जनक जी के कुल पुरोहित। बा—332
सतां—सत्पुरुषों की। अर—4
सतावहिं—कष्ट दे रहे हैं। बा—207
सतिभाउ—सत्यता से। बा—149
सतिभायें—सच्चे भाव से। बा—4
सत्यधाम—सद्गुरु। बा—46
सत्यलोक—ब्रह्मलोक। बा—138
सत्यसंकल्प—सर्वसमर्थ। सुं—41
सत्यसंध—सत्यप्रतिज्ञ। अ—30
सत्रुसूदन—शत्रुघ्न। बा—311
सद्ग्रंथ—धर्म-ग्रन्थ। बा—84
सदन—घर। बा—1
सदय—दयालु। अ—85
सदाचार—शुभ आचरण। बा—84

सदासिव–सदा कल्याण करने वाले भगवान शंकर। अ–44
सद्य–तत्काल। बा–2
सद्यसोनित4–ताजा रक्त। बा–93
सद्य सोनित पान–ताजा खून पीकर। लं–101
सन–से, द्वारा। बा–3
सन इव–बाँधने वाले की तरह। उ–121
सनकादि–सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार। बा–18
सनमानू–सम्मान प्राप्त करते हैं। बा–7
सनमाने–सम्मान किया। बा–40
सन्मुख रही–सामने खड़ी हो गई। बा–87
सनाथकरि–कृतार्थ करके। उ–9
सनाथा–सुरक्षित। बा–207
सनाला–डंडियों सहित। बा–264
सनाह–कवच। बा–266
सनीरा–आँसुओ से भरे। अ–70
सनेमा–नियम पूर्वक। अ–323
सनेहु–प्रेम स्नेह। बा–3
सप्त दीप–सातों द्वीप। बा–154
सप्त प्रबंध–सात काण्ड। बा–37
सप्तावरन–सातों आवरणों को। उ–79
सर्पराज–शेषनागजी। सुं–35
सपच्छ–पंखधारी। अर–18
सपथ–प्रतिज्ञा। बा–253
सपदि–तुरन्त। बा–136
सपरन–पत्तों सहित। बा–288
सपरब–गाँठों से युक्त। बा–288
सप्रीति–प्रेम पूर्वक। बा–4
स्फुरन्मौलि–जिनके शिर पर विराजमान हैं। उ–108
सफल–फल सहित। बा–344
सफल–(अर्थ–धर्म–काम–मोक्ष) चारों फलों से परिपूर्ण। अ–84
सबइ निबाही–सब कुछ निभा दिया, सब इच्छायें पूर्ण कर दी। अ–4
सबइ लाभ–सब लाभ ही लाभ है। बा–341
सबकाहू–सबने। बा–355
सबकेर–सबके। उ–1
सबघटवासी–सबके हृदय में निवास करने वाले। बा–186
सबद किलकिला–हर्ष ध्वनि। सुं–28
सब देखा–सर्वत्र देखा। बा–2
सबल–सर्व शक्तिमान। बा–13
सबहिसन–सभी से। बा–341
सबाल–गोद में बालक लिये। बा–303
सबुइ–सब कुछ। अ–62
सभ–सबके सब। सुं–35
सभकै–सबकी। बा–292
सभय–डो हुये। बा–84
सभीत–उरकर। बा–53
सम–समान। बा–3
सम–शम, मन का निग्रह। बा–37
सम–सीधा। अ–2
समउ–समय, अवकाश। अ–67
समउ सुख–समय का और सुख का। बा–345

समतूल—समान। बा—247
समतूला—समान। बा—113
समदि—भली भाँति आदर सम्मान। बा—354
समन—नष्ट करने वाला। बा—1
समन—यमराज। अर—2
समय सम—समयानुकूल। अ—43
समर—युद्ध। बा—40
समरथ—समर्थ, योग्य। बा—63
समर्पिकै—देकर। बा—209
समरपीं—अर्पित कर दी। बा—101
समरभूमि—युद्धस्थल। बा—131
समरामहे—आप का हम स्मरण करते हैं। उ—13
समरारूढ़ा—युद्ध हेतु उद्यत। लं—23
समस्त—सम्पूर्ण। बा—35
समसीला—समान शील—आचार वाले। बा—30
समागम—संपर्क। बा—105
समाजु—सामान। बा—334
समाज सकेली—समाज बटोर कर। अ—298
समात—समा रहा हैं भर पा रहा हैं। बा—145
समाति—समाती थी। बा—340
समाधान करि—समझ बुझाकर। अ—39
समाधि—शान्ति। उ—121
समान—बराबर,एक रस। बा—3
समान प्रभु आनन—प्रभु (राम) के मुख में समा गया। लं—103
समानी—समा गई हो। बा—337
समास—संक्षेप में। लं—60
सम्यक बोधा—यथार्थ ज्ञान। उ—107
सम्हारा—ग्रहण किया। बा—58
समिटे—एकत्र हुये थे। बा—292
समिधि—यज्ञ में जलाई जाने वाली लकड़ियाँ। बा—283
समीती—अपनापन। बा—153
समीप—पास। बा—55
समीरकुमारा—हनुमान जी। उ—67
समीहा—चेष्टा किया। लं—15
समुझावत—समझ तो हैं। बा—338
समुझि धौं—समझा तो सही। अ—50
समुझि परइ कहु काहि—किस की समझ में आ सकता हैं। उ—19
समुझे मिथ्या सोपि—यद्यपि समझ लेने पर वह मिथ्या ही हैं। उ—71
समुदाई—सभी शुभ योग हैं। उ—10
समुदाई—समूह। बा—91
समुहानी—ओर चली, मिल राई। बा—40
समूला—जड़ सहित। अ—29
समेता—सहित। बा—15
स्यंदन—रथ। बा—298
स्याम—काला। बा—1
स्यामता—काला दाग। लं—12
स्यामल—काला। बा—318
स्याम सरोज—नील कमल। बा—96
स्यामा—श्यामा (16 वर्ष की आयु वाली)। बा—322
स्यामा—श्यामा एक चिड़िया का नाम। बा—303

सय—सौ। बा—29
सयगुन—सौगुना। बा—360
सयन—सोना, लेटाना। बा—69
सयन—बिस्तर। बा—304
सयन—संकेत। अर—17
सयन कीन्ह—लेट गये। अ—89
सयननि—इशारे से। अ—117
सयनहिं—इशारे से, सकेत से। बा—254
सयानप—चतुरता। बा—256
सयानी—चतुर, शिष्ट स्त्री। बा—67
सयाने—चतुर, बुद्धिमान। बा—14
सर—छोटा तालाब, बाण। बा—8
सर—तालाब (राम कथा)। बा—39
सरई—पूरी होगी। बा—266
सरचंड—प्रचण्ड बाण। लं—1
सरद—जाड़े की रात। बा—32
सरद—शरद पूर्णिमा। बा—316
सरदातप—सर्दी—गर्मी। बा—120
सरन तकि मोही—मेरी शरण तक कर। सुं—48
सरन्हि—तालाबों से। बा—86
सरन्हि—बाणों से। लं—69
सरपि—क्षण भर में। बा—328
सर रचि—चिता रच कर। अर—8
सरव—कसरत के खेल। बा—302
सरवर—सुन्दर तालाब। बा—158
सरवसु—सर्वस्व (सार)। अ—316
सरस—सुन्दर, रस सहित। बा—1
सरस—जल युक्त। अ—310
सरसइ—सुशोभित होता हैं। बा—2
सरसइ—सरस्वती। अ—138
सरसिज—कमल। बा—333
सरसिज वन—कमलों का वन। अ—154
सरसी—तलैया। अ—257
सरसीरुह—लाल कमल । बा—358
सराधा—श्राद्ध। बा—181
सरानल—वाण रूपी अग्नि। सुं—56
सराप—शाप। बा—135
सरासन—धनुष। बा—250
सराह—सराहना करते हैं। बा—332
सराहत—प्रशंसा करते हैं। बा—28
सराहहिं—सराहना करते हैं। बा—325
सराहिअ—सराहना की जाय। बा—5
सराही—सराहना किया, धन्य माना। बा—160
सरि—छोटी नदी। बा—8
सरित—नदी। बा—10
सरित नस जारा—नदियाँ नसों का जाल हैं। लं—15
सरिताऽमृत धारा—नदियों से अमृत की धारा। बा—191
सरिवरि—बराबरी। बा—282
सरिस—समान। बा—10
सरिसा—समान। सुं—15
सरु—बाण। बा—84
सरुज—रोगी। अ—118
सरुष—क्रोध से भरी। अ—40
सरुष हसि—क्रोध की हँसी हँस कर। बा—282
सरूपा—स्वरूप। बा—23
सरोज—कमल। बा—18
सरोरुह—कमल। बा—1
सरोष—क्रोध से भरे हुये। बा—293

सर्व—सब। बा—7
सर्वग्य—सर्व ज्ञाता। बा—46
सर्वगत—सर्व व्यापक। उ—16
सर्वदा—सदैव। बा—103
सर्वनाथं—सब के नाथ। उ—108
सर्वपर—सब के परे। अर—15
सर्वभूताधिवासं—सभी प्राणियों के हृदय में निवास करने वाले। उ—108
सर्वरीनाथ—पूर्णिमा का चन्द्रमा। अ—116
सर्वस—सर्वस्व। बा—194
सर्वहित—सब का हित करने वाला। उ—16
सर्वा—सभी। बा—184
सलभ—पतिङ्ग बा—266
सलिल—जल। बा—37
सलोने—सुन्दर। अ—116

सवँदरसी—समदर्शी श्री राम। बा—30
सव—शव, मृत। बा—113
सवति आरेसू—सौतिया डाह। अ—49
सवरी—भीलनी। अ—17
सवसम—मुर्दे के समान। लं—31
सविकारा—दोष पूर्ण। बा—90
सविवेका—ज्ञान युक्त। बा—41
सविष—विषैले। लं—99
सस्त्री—शस्त्र धारी। अर—26
ससंका—भयभीत। सुं—36
ससंकेउ—भयभीत हो गया। बा—86
ससक—खरगोश। अ—67
ससि—चन्द्रमा। बा—7
ससि—खेती के समान। बा—347
ससिभूषन—भगवान शंकर। बा—108
ससिरस—अमृत। अ—304
ससिसंपन्न—खेती से भरी रहती हैं। उ—23
ससि हति—खेती का नाश करके। उ—121
ससिहि—चन्द्रमा को। बा—325
ससीय—सीता जी के साथ। अ—112
ससु—खरगोश। बा—267
ससोक—शोक भरे। अ—276
ससोच—व्याकुल, दुखी। बा—58
सह—साथ। बा—325
सहगामिनिहि—पति के साथ सती होने वाली स्त्री को। अ—37
सहज—स्वाभाविक। बा—10
सहनाई—शहनाई (बाजा)। बा—273
सहम—डर लग रहा हैं। बा—29
सहमि—डरकर। अ—20
सहरषा—हर्ष के साथ। अ—191
सहरोसा—बड़े हर्ष के साथ। बा—208
सहस—हँसते हुये। अ—185
सहस दस काना—हजार कानों द्वारा (राजा पृथु)। बा—4
सहसनाम—विष्णु सहसनाम। बा—19
सहसबाहु—हजार भुजाओं वाला राजा। बा—4
सहस सीस—हजार शिर वाले शेषनाग जी। बा—17
सहसाखी—हजार आखों द्वारा। बा—4
सहाई—सहायता। बा—69
सहाय सहित—अपने सहायकों के

9B

साथ। बा—84

सहाया—सहायता द्वारा। बा—117

सहित सहाय—सहायकों सहित। बा—356

सहिदानी—पहिचानी, निशानी। सुं—13

सहेतू—सकारण। बा—72

साँगी—बरछी। लं—40

साँगी—शक्ति। लं—54

साँचेहु—सचमुच। अ—15

साँझ—संध्या। बा—333

सांतरसु—शान्त रस (नौ रसों मे से एक का नाम)। बा—107

साँधा—मिलाया। बा—173

साँधा—संधान किया। सुं—19

साँइदोह—स्वामि द्रोही। अ—201

साँइ दोहाई—स्वामी, का द्रोह। बा—186

साँवकरन—श्याम वरण। बा—299

साईं—स्वामी, आराध्य। बा—89

साउज—उपकरण, निशाने, हिंसक पशु। अ—133

साक—सब्जी, वनस्पति। बा—3

साँका—स्मरणीय। अ—33

साखामृग—बन्दर। सुं—16

साखि—गवाह। बा—216

साखोचारु—शाखोच्चार। बा—324

सागु—सब्जी, वनस्पति। बा—74

साजु—वेष वाले। बा—26

साढ़साती—शनि के साढ़े सात वर्ष रूपी मंथरा। अ—17

सात्त्विक श्रद्धा धेनु—सात्त्विकी श्रद्धा रूपी गाय। उ—117

साथरी—विछौना। अ—66

साधक—साधना करने वाला। बा—1

साधा—लक्ष्य बनाया। बा—137

साधा—शोधवाया था। अ—54

साधि—विचार कर। बा—154

साधी—ज्ञात होता हैं। बा—21

साधु—सज्जन। बा—2

साधु साधु—धन्य, धन्य। अ—126

साधे—साधना करने पर। बा—70

सधेउँ—वश में कर लिया। बा—171

साना—मिश्रित। बा—6

सानि—मिला कर। बा—119

सानी—मिली हुई। बा—195

सानुकूल—पक्ष में। बा—17

सानुज—लक्ष्मण के साथ। बा—40

सानुज—छोटे भाई शत्रुघ्न के साथ। अ—188

सापत—शाप देता हुआ। अर—24

साप अनुग्रह—शाप से मुक्ति। उ—108

साबर मंत्र जाल—शाबर मंत्र समूह। बा—15

सामध—समधियों का मिलाप। बा—320

सायक—बाण। बा—18

सामुझि—समझदारी, बुद्धि। बा—9

सायक—बाण। बा—18

सायुज्य मुक्ति—परमात्म स्वरूप में मिल जाना। लं—2

सारंग—शार्ङ्ग नामक धनुष (श्री विष्णु के हाथ में रहने वाला)। लं—68

सारंग पानी—भगवान। बा—188

सारथी—रथ हाँकने वाला। बा—299

सारद—शारदा, सरस्वती। बा—11

सारदउ—सरस्वती जी भी। बा—317
सारदी—शरद ऋतु की। कि—16
सारसँभार—देख देख। अ—80
सारा—सार, तत्त्व। बा—10
सारा—सार सँभार। अ—66
सारिका—मैना। बा—338
सारिखे—समान। बा—161
सारी—मैना। बा—7
सारू—सार, निचोड़। अ—268
सालक—दण्ड देने वाले। अर—19
साला—कुटिया। अ—133
सालि—धान। बा—19
सालु—पीड़ा। अ—13
सावक—बच्चे। बा—32
सावकास—फुरसत से। अ—281
सासति—ताड़ना। बा—89
साहनी—सेना। अ—272
साहिब—स्वामी। बा—13
सिंगरौर—श्रृंगवेर पुर में। अ—151
सिंगारू—श्रृंगार। बा—32
सिंधु—सागर। बा—8
सिंधुर—हाथी। बा—333
सिंधुर गामिनी—हथिनी की सी चाल वाली युवती। उ—3
सिंधुर मनि मय—मुक्ताओं के। बा—288
सिंधुसुता—लक्ष्मी जी। बा—186
सिंसुपा—अशोक। अ—89
सिंहकंध—सिंह के समान कंधे। सुं—45
सिंहनाद—सिंह गर्जना के समान। बा—182
सिंहबधुहि—सिंहिनी। अ—67
सिंहिनिहि—शेरनी को। अ—39
सिअरे—शीतल। अ—71
सिकता—बालू। उ—122
सिख—निर्देश, शिक्षा। बा—182
सिख—शिखा, चोटी। बा—219
सिखर—चोटी, पहाड़ों के टुकडें। बा—156
सिखाव—शिक्षा देता था। बा—155
सिखावन—शिक्षा, निर्देश। बा—72
सिखाव सुबोधा—उत्तम ज्ञान की ही शिक्षा देते थे। उ—106
सिखिनि—मोरनी। बा—295
सिखिहि कहँ—कहाँ सीखा। लं—34
सित—श्वेत, सफेद। बा—232
सितासित—श्वेत और श्याम। अ—204
सिथिल—कमजोर। बा—337
सिद्ध—जो सिद्धि प्राप्त कर चुका। बा—1
सिद्ध—सीधा (रसोई का सामान)। बा—333
सिद्धथल—सिद्धस्थल। अ—310
सिद्धान्त—रास्ता, मार्ग, तत्त्व। बा—109
सिधाए—पहुँचे। बा—88
सिधारी—गई। बा—211
सिधि होइ—कार्य सिद्ध होते हैं। बा—1
सिय निंदक—सीता जी की निन्दा करने वाले (धोबी और उसके समर्थक)। बा—16
सिय रवनू—सीता पति श्री राम। अ—227
सिरउगिरे—शिरों के गिरने से। लं—14
सिरताज—शिरमौर, चक्रवर्ती। बा—329

सिरधुना—सिर पीटा, खेद प्रगट किया। लं—56
सिर धुनऊ—सिर पीटा। लं—62
सिरनाये—प्रणाम किया। बा—227
सिरनावा—प्रणाम किया। बा—57
सिरनि—शिरों पर। बा—167
सिरमनि—शिर की मणियों को। बा—358
सिरस—सिरस (वृक्ष)। बा—258
सिर सरोज बनचारी—शिर रूपी कमल बन में विचरण करने की। लं—92
सिरात—समाप्त किया जा सकता। बा—325
सिराति न—बीतती ही नहीं। अ—155
सिरान—पूरा हो गया। अ—70
सिरानी—समाप्त हुई। बा—226
सिराने—समाप्ति होने पर। बा—236
सिराहिं—बीतने लगे। बा—58
सिराहीं—(पार नहीं) मिलता। बा—94
सिरिजा—रचना की। बा—15
सिरोमनि—शिरोमणि, प्रमुख। बा—26
सिलीमुख—बाण। लं—92
सिलीमुखाकर—बाणों की अक्षय खान। लं—86
सिवद्रोही—शिव जी का शत्रु। बा—281
सिवधाम—मंगल कारी भगवान शंकर। बा—92
सिवहिं—शिवजी का। बा—92
सिवा—पार्वती जी। बा—15
सिविका—पालकी। बा—300
सिष—शिक्षा। उ—99
सिस्नोदर पर—पशुओं की तरह के ही आहार मैथन परायण। उा—40
सिसिर—शिशिर ऋतु। बा—42
सिसु—शिशु (छोटा बालक)। बा—99
सिसुचरित—बाल लीला। बा—199
सिसुबच्छ—छोटा बच्चा। अर—43
सिसु रूप—बाल रूप। बा—202
सिसुलीला—बाल लीला। बा—192
सिसु विनोद—बाल लीला। बा—200
सिहाहिं—प्रसन्न हो रहे हैं। बा—344
सीकर—तिनका। बा—197
सीकरनि—बूँदों से। अ—231
सीत—ठंडक। बा—191
सीतल—ठंडा। बा—17
सीतल सुगंध सुमंद—तीन प्रकार की वायु कामाग्नि को बढ़ाने वाली। बा—86
सीता नाथ—श्री राम। बा—28
सीतावरन—जानकी नाथ श्री राम। उ—92
सीतावर—श्रीराम। उ—78
सीदहिं—कष्ट पाते हैं। बा—121
सीम—सीमा, मर्यादा। बा—126
सीम समता की—समता की सीमा हैं। अ—289
सीय—सीता जी। बा—7
सीलनिधि—माया नगरी के काल्पनिक राजा का नाम। बा—130
सीवा—सीमा। बा—147
सीसनि—शिरों पर। अ—115

सीसा—शीश, सिर। बा—18
सुंदरि—सुंदरियों में। बा—325
सुअंग—सुंदर अंगो में। बा—318
सुअंजुलि साजी—दोनों हाथों की सुंदर अंजोरी बनाकर। बा—191
सुअ—पुत्र। अ—178
सुअन—पुत्र। अ—43
सुअसनु—सुन्दर भोजन। अ—111
सुआरा—रसोइया। बा—99
सुआश्रम—सुन्दर वास स्थान। बा—65
सुआसिनि—सुहागिनि स्त्रियाँ। बा—313
सुकंठ—सुग्रीव। बा—25
सुक—तोता। बा—7
सुक—शुकदेव जी। बा—18
सुक—दूत। सुं—53
सुकर्कश—कठोर। अर—11
सुक्र—वीर्य। बा—82
सुक्र—शुक्राचार्य। बा—154
सुकरमा—श्रेष्ठ कर्म करने वाले। बा—2
सुकल पच्छ—शुक्ल पक्ष। बा—191
सुकवि—श्रेष्ठ कवि। बा—10
सुकाल—अच्छा समय। अ—235
सुकीरति—सत्कीर्ति। बा—14
सुकुमार—कोमल, अवयस्क। बा—74
सुकूप—सुन्दर कुआँ। अ—309
सुकृत जाइ—पुण्य समाप्त हो जायगा। बा—252
सुकृति—पुण्यवती। बा—1
सुकृती—पुण्यात्मा। बा—37
सुकेतुसुता—सुकेतु यक्ष की कन्या ताड़का। बा—24
सुखद—सुख देने वाला । बा—9
सुखदायक—सुख देने वाले श्रीराम। बा—18
सुखदारा—सुख देने वाले श्रीराम। अ—94
सुखधामा—श्रीराम। बा—52
सुखपुंजा—सुखनिधान भगवान। बा—186
सुखप्रद—सुख देने वाला । बा—73
सुखमूल—सुख की जड़। बा—190
सुखरासी—सुखनिधान भगवान शंकर। बा—108
सुखसंजुत—सुखपूर्वक। अर—39
सुखसंपादन—सुख को उत्पन्न करने वाला। उ—130
सुखानेउ परना—सूखे पत्ते भी। बा—74
सुखासान जाना—सुख से बैठने योग्य तामजान जो कुर्सीनुमा होते हैं। बा—300
सुखाहिं—सूखे जाते हैं। अ—46
सुखेत—सुन्दर खेत। बा—303
सुखेन—सुख पूर्वक। बा—284
सुगति—सद्गति। बा—20
सुगम—सरल। बा—13
सुगाइ—सन्देह करे। अ—184
सुगठित—सुन्दर रीति से बने हुये। बा—213
सुघर—सुघड़, सुन्दर। बा—314
सुघरी—शुभ मुहूर्त। बा—91
सुचाली—सदाचारी। अ—261

सुचि—पवित्र। बा—75
सुचिता—विराजमान। बा—324
सुचिसेवक बोले—विश्वास पात्र सेवकों को बुलाया। अ—186
सुछंद—स्वच्छंद। अ—134
सुजतन कराहीं—भली भाँति यत्न करते हैं। उ—120
सुजन—श्रेष्ठ पुरुष। बा—2
सुजल—सुन्दर (तीर्थों का) जल। अ—310
सुजस—सुयश। बा—5
सुजाति—अच्छी जाति वाले। बा—6
सुजान—चतुर। बा—1
सुजाना—भगवान राम। बा—192
सुजान रायँ—सुजानों के राजा (शिरोमणि)। लं—121
सुजीवनु—जीवित रहना। बा—6
सुजोग—सुयोग, अच्छा समय। बा—7
सुटुकि—चाबुक लगाकर। बा—156
सुठि—वास्तव में। बा—20
सुठि—अत्यंत। अ—119
सुत—पुत्र। बा—16
सुत—सुकेतु का पुत्र सुबाहु। बा—24
सुतनारी—पुत्रवधू। कि—9
सुतरु—सुन्दर पेड़। बा—303
सुता—पुत्री। बा—62
सुतापस—बड़े तपस्वी। उ—124
सुतिय—सुन्दर स्त्री। बा—20
सुतीछी—बहुत तीखी, अप्रिय। अ—46
सुतीय—पतिव्रता। बा—235
सुतीरथ—श्रेष्ठ तीर्थों का। अ—6
सुथल—श्रेष्ठ स्थान। बा—36
सुद्ध—शुद्ध पापरहित। उ—124
सुदास—सेवक। बा—19
सुदिनु—शुभ दिन। बा—91
सुदेस—यथानुकूल। बा—219
सुदेसे—समयानुकूल। अ—169
सुधरम—श्रेष्ठ, धर्मात्मा। बा—314
सुधरहिं—सुधार होता है। बा—3
सुधा—अमृत। बा—5
सुधाई—सीधापन। बा—164
सुधाकर—चन्द्रमा। बा—5
सुधारक सारू—चन्द्रमा का सार(अमृत)। अ—326
सुधारि—साफ करके। अ—1
सुधारी—सुधार किया। बा—24
सुधासम—अमृत समान। बा—212
सुधि—ध्यान, सूचना। बा—29
सुधि—समाचार। अ—294
सुनखतु—शुभ नक्षत्र। बा—91
सुनयना—जनकजी की पटरानी। बा—324
सुनयनी—सुन्दर नेत्रों वाली। बा—310
सुनाइ—सुनाकर। अ—48
सुनायउ आइ—जा सुनाया। अ—2
सुनावा—सुना दिया। अ—48
सुनासीर—इन्द्र। लं—10
सुनिअति नाही—नहीं सुनी गई है। बा—220
सुपल्लवत—पूर्णरूप से पल्लवित। बा—212
सुप्रवीन—सुचतुर (गरुड़जी)। उ—116
सुपास—आराम। बा—214
सुपासी—पालनकर्ता बा—197

सुपासू—व्यवस्था, सुखद। अ—221
सुपेती—चादरें। बा—356
सुबद्ध—दृढ़ बनाये हुये। बा—41
सुबानी—सुन्दर वाणी द्वारा। बा—2
सुबाहुहि—सुबाहु (दैत्य) को। बा—206
सुबेल—मर्यादा। बा—305
सुभग—सुन्दर। बा—17
सुभगता—सुन्दरता। बा—86
सुभट—वीर। बा—32
सुभद—कल्याणकारी। बा—91
सुभद अंग—दाहिने अंग। बा—231
सुभसीला—उत्तम स्वभाव वाले। उ—8
सुभाउ—स्वभाव। बा—3
सुभाएँ—स्वभाव से ही। बा—254
सुभाव—ऊँचे भाव। बा—37
सुभाषा—सुन्दर वाणी। अ—5
सुभसुभ—अच्छा—बुरा। बा—137
सुभ्राता—अच्छे भाई। बा—20
सुभुज—बलवान। बा—221
सुभोगमय—सुन्दर भोग पदार्थों से पूर्ण। अ—90
सुमंगल चारा—सुन्दर मंगलाचार हो रहे हैं। बा—318
सुमति—अच्छे बुद्धि वाले। बा—9
सुमन—फूल। बा—3
सुमन—निर्मल मन। बा—37
सुमनमय—फूल के समान कोमल। अ—121
सुमानस नंदिनि—मानसरोवर की कन्या सरयू। बा—39
सुमिरत—स्मरण करने से। अ—1
सुमिरि—स्मरण करके। अ—301
सुमुखि—सुन्दर मुखवाली पार्वती। बा—121
सुमृति—स्मृति। अ—170
सुमोति—सुन्दर मोती। बा—316
सुरंगा—सुन्दर (पीत) रंग। बा—316
सुर—देवता। बा—18
सुर अंसिक—देवांश (भगवान की लीला के परिकर)। लं—114
सुरकुल—देवताओं का परिवार। बा—42
सुरगुर—बृहस्पति जी। बा—302
सुरतरुहिं—कल्प बृक्ष में। बा—96
सुरति—सुध, याद। अ—56
सुरति कराएहु—याद कराते रहना। उ—19
सुरति करि—याद करके। बा—265
सुरतिय—देवाङ्गनायें। बा—318
सुरत्रिय—देवाङ्गनायें। बा—92
सुरधेनु—कामधेनु।। बा—113
सुरन्ह—देवताओं ने। सुं—2
सुरनाथा—शिवजी। बा—109
सुरनायक—भगवान विष्णु। बा—186
सुरपति—इन्द्र। बा—122
सुरपति रजधानी—इन्द्र लोक, स्वर्ग। बा—151
सुरपुर—देवलोक। बा—180
सुरपुर जाऊँ—स्वर्ग चला जाय (स्वर्ग न मिले)। अ—45
सुरब्राता—देवताओं के समूह। बा—92
सुरभवन—देव मन्दिर। बा—155
सुरभि—गाय,सुगन्धित। बा—10

सुरभी—गाय का घी। बा—328
सुरभूपा—भगवान राम। बा—192
सुरमनि—देवताओं की मणि (चिन्तामणि)। अ—114
सुरराजू—इन्द्र।। अ—313
सुरराया—शिवजी।। बा—110
सुररिपु—देवांतक, देवशत्रु। लं—62
सुररूख—कल्प वृक्ष। बा—227
सुरवर—इन्द्र। अ—220
सुरवासा—देवालय। बा—227
सुरबीथिविकासी—आकाश गंगा सरीखी प्रकाशित हैं। अ—325
सुरस्वामी—भगवान राम। बा—53
सुरस—रसीले। अर—34
सुरसदन—स्वर्ग। अ—65
सुरसर—देवसरोवर। अ—60
सुरसरि—गंगाजी। बा—2
सुरसरितहिं—गंगाजी में। बा—40
सुरसरिता—गंगाजी—15
सुरसाई—भगवान। अ—136
सुरसाल—राक्षस। अ—बा—27
सुरसेनप—देवताओं के सेनापति स्वामिकार्तिकेय जिन के बारह नेत्र हैं। बा—317
सुरा—मदिरा। बा—5
सुराई—बीरता। बा—273
सुराती—रात्रि शोभित होती हैं। बा—15
सुरानीक—मदिरा अच्छी लगती है। बा—4
सुरारि—राक्षस। अर—4
सुरारी—रावण। लं—99
सुरासुर—बाणासुर। बा—292
सुरुचि—अच्छी लगने वाली। बा—1
सुरूपनिधान—श्री रामचन्द्र जी। बा—327
सुरेसा—इन्द्रादिक सभी देवता। बा—101
सुलगइ—जल रही थी। बा—160
सुलगन—सुन्दर मुहूर्त। बा—338
सुलच्छन—अच्छे लक्षणों वाली। बा—7
सुलभ—प्राप्त होने वाला। अ—2
सुलभ—आसान, सहज। बा—14
सुलोचनि—सुन्दर नेत्रों वाली। बा—325
सुबट्ट—सुन्दर मार्ग। सुं—3
सुबस्तु—अच्छी वस्तु। बा—7
सुवस वसिहि—भली भाँति वसेगी। अ—36
सुवारि—निर्मल जल। बा—43
सुवास—सुगन्धित। बा—1
सुविप्रवर—नैष्ठिक ब्राह्मण। बा—72
सुविरति—सद्ज्ञान, वैराग्य। बा—40
सुबेला—सुबेल पर्वत। लं—9
सुवेष—अच्छे वेष। बा—7
सुषमा—शोभा। बा—322
सुसंगू—अच्छी संगति। बा—7
सुसमउ—शुभ मुहूर्त। बा—35
सुसाखा—सुन्दर डाली। अ—5
सुसाखी—सच्चा गवाह। बा—21
सुसारा—सुन्दर शैय्या (पलँग)। बा—333
सुसाली—अच्छा धान। अ—261
सुसीतलताई—सुन्दर शीतलता

(विनम्रता)। बा–42
सुसील–शीलवान। बा–17
सुसेवकनि–अच्छे सेवकों को, सच्चे भक्तों को। बा–24
सुहाई–सुन्दर हो जाती है। बा–3
सुहावन–सुशोभित, सुन्दर। बा–24
सुहृद–निष्कपट मित्र। बा–160
सूकर–सुअर। बा–170
सूकरखेत–बाराह क्षेत्र में। बा–130
सूखत–सूखने पर। अ–51
सूखि–सूख गई। अ–54
सूच–सूचना दे रही हैं। अ–25
सूचक–बताने वाला। बा–238
सूत–सारथी, सोता है। बा–194 / लं–40
सूतत–सो रहे हो। लं–56
सूता–सोता हुआ। बा–201
सूत्रधर–कठपुतली नचाने वाले सूत्र धार। बा–105
सूध–सीधा, सरल। बा–277
सूने–खाली। बा–182
सूपकारी–परोसने वाले। बा–328
सूपसास्त्र–पाक शास्त्र। बा–99
सूपोदन–दाल–भात। बा–328
सूर–वीर। बा–17
सूरता–वीरता, पराक्रम। बा–266
सूरी–विद्वान। उ–129
सूल–त्रिशूल, पीड़ा। बा–25
सृकाल–स्यार। बा–93
सृजइ–रचना करता है। बा–163
सृजी–पैदा की। बा–102
सृष्टि–संसार। बा–73
सेंदुर–सिंदूर, सुहाग सूचक। बा–325
सेइअहि–सेवा करनी चाहिये। अ–74
सेई–सेवा कर। अ–307
सेज–शैया। बा–69
सेज तुराई–तोषक, पलँग। अ–14
सेतु–पुल। बा–13
सेनप–सेनापति। बा–214
सेना–फौज। बा–154
सेनाप्ति कामादि–काम,क्रोध, लोभ, मोह ये सेनापति। उ–71
सेये–सेवा की है। बा–90
सेल–भाले, बरछे। अ–191
सेला–शक्ति। लं–94
सेव्य–सेवित। सुं–47
सेव्य–स्वामी। उ–119
सेवक–दास। बा–16
सेवत–सेवा करने से, सत्संग करने से। बा–2
सेवार–तालाब में पैदा होने वाली एक प्रकार की बेकार घास। बा–38
सेवी–सेवा करने वाले। बा–293
सेष–शेषनाग। बा–4
सेसू–शेषनाग। ब–355
सैल–पर्वत। बा–1
सैलजहि–पार्वती जी को। बा–76
सैलराज–हिमालय। बा–66
सैलसुता–पार्वती जी। बा–31
सैलोपरि–पर्वत के ऊपर। उ–56
सो–वह। बा–3
सोइ–वही। बा–1
सोइ सोई–वही–वही। बा–351
सोई–वह भी, वही। बा–3

सोई–सो गई। अ–23
सोई–वही (वह नदी)। अ–34
सोऊ–वह भी। बा–10
सोग–शोक। अ–85
सोच–चिन्ता, विचार। बा–25
सोच समूले–सोच की जड़। अ–267
सोच विमोचन–शोकदूर करने वाले श्री राम। अ–326
सोचाई–विचरवाकर। बा–91
सोतनया–उस कन्या को। बा–325
सो दासी रघुवीर कै–वह माया रघुवीर की दासी है। उ–71
सोधि–शोधकर। बा–312
सोन–स्वर्ण, लाल। बा–219
सोनित–रूधिर। लं–33
सोपाना–सीढ़ियाँ। बा–37
सोपि–वह भी। बा–46
सोभत–सुशोभित होता है। अ–7
सोभति–शोभायमान है। बा–148
सोभामई–शोभा का रूप। बा–325
सोभासिन्धु–अति सुन्दर। बा–192
सोम–पूर्ण चन्द्रमा। अर–42
सोषइ–सोख लेती है। अर–44
सोषक–सुखाने वाला। बा–7
सोषिअ–सुखा डालिये। सुं–51
सोषेउ–सुखा दिया, पी गये। बा–256
सोसुप्रकासू–वही सुन्दर ज्योति। बा–1
सोह–अच्छी लगती है। बा–10
सोहति–सुशोभित होती है। बा–40
सोहमस्मि–वह ब्रह्म मैं हूँ। उ–118
सोहा–शोभित हो रहा था। बा–345
सोहाती–प्रिय लगने वाली। अ–31
सोहान–अच्छी लगी। बा–127
सोहानि–अच्छी लगी। अ–78
सोहे–सुशोभित है। बा–199
सौंघाई–सस्तापन, बाहुल्य। लं–88
सौंदर्ज–सुन्दरता का। बा–327
सौच–शौच, पवित्र। बा–227
सौध–राजमहल। अ–66
सौभागिनी–सुहागिनी स्त्रियाँ। उ–99
सौमित्र–लक्ष्मण जी। बा–17
सौरज–शौर्य। लं–80
सौरभ–आम। बा–87
सौंहे–सौगंध। अ–201
स्रक–माला। अ–215
स्रग–फूलों की माला। बा–355
स्रवहिं–गिरि जाते थे, बहती है। बा–182
स्रवहिं–आँसू बहते हैं। अ–46
स्रवै–बरसाने लगे। अ–169
स्वकंगतिं–अपने स्वरूप को। अर–4
स्वकर–अपने हाथ से। बा–213
स्वधामदं–अपना परमधाम देने वाले। अर–4
स्वपच– चाण्डाल। अ–194
स्वपच्छ–अपने पक्ष का। उ–112
स्वप्रान की–अपने प्राणों की। सुं–30
स्वमति–अपनी बुद्धि। बा–121
स्वमति अनुरूपा–अपनी बुद्धि के अनुसार। बा–197
स्वमति विलास–अपनी बुद्धि की

पहुँच के अनुसार। उ–15
स्वर–आवाज, रव। बा–99
स्वर्गउ स्वल्प–स्वर्ग का भोग भी थोड़ा हैं। उ–44
स्वरूपहिं चीन्हें–आत्मज्ञान होने पर। उ–112
स्वल्प सपेला–छोटा साँप का बच्चा। लं–51
स्ववस–अपने अधीन। बा–154
स्वाति–स्वाती (नक्षत्र का नाम)। अ–52
स्वान–कुत्ते। बा–93
स्वारथरत–स्वार्थ परायण। उ–40

–ह–

हँकरावा–बुलवाया। बा–182
हँकारा–बुलावा। बा–193
हँकारि कै–बुला लिया। बा–325
हँकारी–बुलाकर। बा–73
हंस–सूर्य। अ–9
हंस कुमारी–हंसिनी। अ–60
हंसगवनि–हंस की चाल वाली सीता जी। अ–63
हंसबंसु–सूर्य वंश। अ–161
हँसब ठठाइ–ठहाका मार कर हँसना। अ–35
हटकहु–मना करो। बा–274
हटकि–डाटकर। बा–63
हटि–रोके हुये। बा–319
हट्ट–बाजार। सुं–3
हठ–दुराग्रह। उ–101
हठ परा–हठ ठान लिया, अनुष्ठान कर लिया।। बा–78
हठसीलहि–हठी स्वभाव का। उ–128
हठि–हठ पूर्वक, जबरदस्ती। बा–222
हतभाग्य–अभागे। उ.–120
हतभागी–नष्ट भाग्य वाली। सुं–12
हते–मारने पर। बा–123
हते–काट गिराये। लं–13
हतेउ–नष्ट कर डाला। अ–29
हतेसि–मार डाला। कि–6
हँथवासहु–नाव चलाने के सामान को। अ–189
हनी–बजाई। बा–327
हनुमंतहिं–हनुमान जी को। लं–121
हनू–हनुमान। सुं–44
हनेउ–मारा हो। अ–29
हमरे जाना–मेरी समझ से। बा–272
हमरेहि माथे काढ़ा–मेरे लिये ही रख छोड़ा था। बा–276
हय–घोड़ा। बा–130
हयगृह–घुड़साल। बा–171
हयसाला–घुड़साल। लं–24
हये–मारे जाते हैं। लं–49
हर–शिव जी। बा–2
हर–हरण करती हैं, दूर करती हैं। बा–15
हरउ–हरण करे। अ–10
हरगिरि–कैलाश पर्वत। अ–253
हरत–हर रहे हैं, संहार कर रहे हैं। बा–326
हरतोषये–शंकर जी की तुष्टि के लिये। उ–108
हरना–हर लेने वाले, दूर करने वाले। बा–2

हरनि—दूर करने वाली।
बा—10 / अ—87
हरष—प्रसन्नता। बा—116
हरषाइ—प्रसन्न होकर। बा—158
हरहाई—बुरी जाति की गाय। उ—39
हरहु—दूर कीजिये। बा—108
हराँसू—ह्रास, दुःख। अ—56
हरि—विष्णु, सिंह। बा—1
हरि—चुरा कर, हरण कर। बा—169
हरिअरइ—हरा, हरा ही। बा—275
हरिजन—भक्त लोग। बा—7
हरिजाना—विष्णु वाहन गरुड़ जी।
अर—2
हरित—हरी—हरी। बा—287
हरित तिन—हरी—हरी घास। अ—22
हरिदास—भगवान का सेवक। उ—69
हरिपद—भगवान के चरण। बा—184
हरिपद—भगवान का परम पद।
बा—335
हरिप्रीता—भगवान का प्रिय। बा—191
हरिबधुहिं—सिंह की स्त्री शेरनी।
अर—28
हरि मारग चितवहिं—भगवान के
आने की प्रतीक्षा कर रहे।
बा—188
हरिलीला—प्रभू की लीला (रहस्य)।
बा—30
हरि विषइक—भगवान के विषय में।
उ—73
हरिहउँ—दूर करूँगा। बा—187
हरीसा—सुग्रीव। कि—12
हरु—दूर कर दे। बा—249
हरुअ—हल्के। बा—258
हरुआई—हल्की, फुर्तीली। सुं—26
हरे—हरण कर लिया, जीत
लिया।बा—85
हरे—मोहित हो गये। बा—320
हरेऊ—दूर कर दिया। बा—120
हलधर—बलराम जी। बा—20
हलरावै—हिलाती हैं। बा—200
हलावहिं—हिला रहे हैं। लं—5
हवि—खीर (यज्ञ में दी जाने वाली
विशेष आहुति के लिए)।
बा—189
हस्त—हाथ। बा—67
हसि—है। अ—13
हहरि—घबड़ा कर। अ—294
हहिं—हैं। बा—335
हाँक—बुलाकर। बा—275
हाँती—नष्ट करके। अ—31
हाट—बाजार। बा—287
हाटक—स्वर्ण। बा—99
हाटकपुर—लंका। सुं—22
हाटकलोचन—हिरण्याक्ष। बा—122
हाड़ा—हड्डियाँ। लं—52
हाथ पराएँ—दूसरे के हाथ माया
वश। बा—134
हारा—अर्पित कर दिया। बा—81
हारी—हरने वाले, दूर करने वाले।
बा—10
हारी—थकावट। अ—67
हास—हँसी। बा—9
हासा—हँसी। बा—147
हाहाकारा—शोर कोलाहल। बा—64

हिंकरि हिंकरि हित—हिनहिना कर प्यार से। अ—143
हिंडोरा—हिंडोला। अ—59
हिंस—हिनहिनाहट। बा—301
हिंसक—मारने वाले। बा—176
हिंसा—मार डालना। बा—183
हित—भला, भलाई, लिये। बा—3
हितकारक—हितैषी, भलाई चाहने वाने। बा—154
हितकारी—भलाई चाहने वाले। बा—77
हित सहित—प्रेम सहित। बा—377
हितू—हितैषी। बा—256
हिनहिनाहिं—हिनहिनाते हैं। अ—99
हिम—बरफ। बा—3
हिम—हेमन्त ऋतु। बा—42
हिमकर—चन्द्रमा। बा—19
हिमगिरि—हिमाचल, हिमालय। बा—65
हिमगिरिनिभ—हिमालय के समान उज्ज्वल। लं—53
हिमभूधर—हिमालय। बा—65
हिमराती—हेमन्त ऋतु की रात। अ—12
हिमरितु—हेमन्त ऋतु। बा—312
हिमवंत—हिमांचल। बा—68
हिमवाना—हिमांचल। बा—103
हिम सैलसुता—पार्वती जी। बा—42
हियउ—हृदय। लं—17
हियते—हृदय से। बा—43
हिय होती—हृदय से दिखाई देने लगती हैं। बा—1
हियो—हृदय। बा—101
हिसिषा—होड़। बा—69
हीको—हृदय को। बा—19
हीचे—हिचकती है। अ—283
हीनता घनेरी—बड़ी हीनता होती हैं। उ—22
हीन मत्सराः—डाह रहित। अर—4
हीनू—हीन, रहित। बा—9
हुँति—ओर से। अ—98
हुनर—कला। उ—31
हुने—होम दिया, आहुत कर दिया। लं—28
हुमगि—जोर से तड़क कर। अ—163
हुलस्यो—आनन्द से उमड़ उठा। बा—324
हुलसानी—उमँड़ी, विकसी। बा—218
हुलसी—विकास हुआ। बा—36
हुलसी सी—तुलसीदास की माता हुलसी के समान। बा—31
हुलासू—हुलास, आनन्द। अ—22
हूहा—हूह, हुँकार। लं—1
हृदयनिकेत—कामदेव। बा—86
हृदय हति—छाती पीट पीटकर। लं—72
हृदयेसा—हृदय का स्वामी (अन्तर्यामी)। उ—111
हृष्ट पुष्ट—शक्तिशाली, स्वस्थ। बा—145
हेठ—नीचे। लं—41
हेति—हा+इति—इस प्रकार हा। लं—70
हेतु—कारण। बा—11
हेतु अपनपउ जानि जिय—सारे

अनर्थ का कारण अपने को जानकर। अ–160

हेम–स्वर्ण। बा–196

हेरा–देखा। अ–38

हेराई–लोप हो जाता है। अ–112

हेरि–ढूँढ़कर, मालूम कर। बा–19

हेरि–हेरि–देख, देख कर। अ–99

हेला–खेल ही खेल में, तिरस्कार। लं–9

होइ अकाजु–काम बिगड़ जाय। अ–13

होइ नहि वारा–देर नहीं लगती। उ–119

होइ बिस्व–विश्व उत्पन्न होता है। लं–35

होइहहि–होंगे। बा–14

होइहि साथू–साथ होगा। अ–56

होते–थे। बा–299

होतेउँ न हँसाई–हँसी का पात्र न बनता। बा–252

होनिहार का–क्या होने वाला है। बा–84

होनी–विस्तृत कथा। बा–3

होव–होऊँगी। अ–16

होम–हवन। बा–169

होसि–बने, होवे। अ–34

होंही–हैं। अ–30

हौं ढीठ्यो कई–मैंने ढिठाई की। बा–326

